राधास्वामी सहाय

जीवन चरित्र

परम पुरुष पूरन धनी

हुज़ूर महाराज

।। राधास्वामी दयाल की दया राधास्वामी सहाय ।।

राधास्वामी नाम जो गावे सोई तरे।
कल कलेश सब नाश सुख पावे सब दुख हरे।

परम पुरुष पूरन धनी राधास्वामी नाम।
तिनके चरन पदम पर कोट २ परनाम।।

जीवन चरित्र

परम पुरुष पूरन धनी
हुज़ूर महाराज साहब राधास्वामी दयाल
आली जनाब राय सालिगराम साहब
राय बहादुर

जग जीवन को अति दुखी देख दया उमँगाय।
संत रूप औतार धर जग में प्रगटे आय।।

राधास्वामी दयाल दया करी सबको लिया अपनाय।
शब्द जहाज़ चढ़ाय कर दीन्हा पार लगाय।।

मुसन्नफ़ः

राय अजुध्याप्रसाद साहब उर्फ लालाजी साहब

प्रकाशक- सेक्रेटरी, राधास्वामी ट्रस्ट,
स्वामीबाग, आगरा-२८२००५

प्रकाशक –
राधास्वामी ट्रस्ट
स्वामीबाग़, आगरा 282005

All rights reserved

(कोई साहब बिना इजाज़त इस पोथी को नहीं छाप सकते)

पहली बार	1500	सन 1994 ई०
तीसरी बार	3000	सन 2012 ई०
चौथी बार	2017	(1000 प्रतियाँ

15 रूपये

संगणक लेखक
कोमल डेस्क टॉप प्रिंटिंग,
रामकृष्ण नगर, तुमसर 441912

मुद्रक
इमेजिनेशन डिज़ाइंस, 509/B एटलान्टिस हाईट्स
साराभाई मेन रोड, वडीवाडी, वडोदरा 390017
फोन 0265-2337808 मो 9898707808

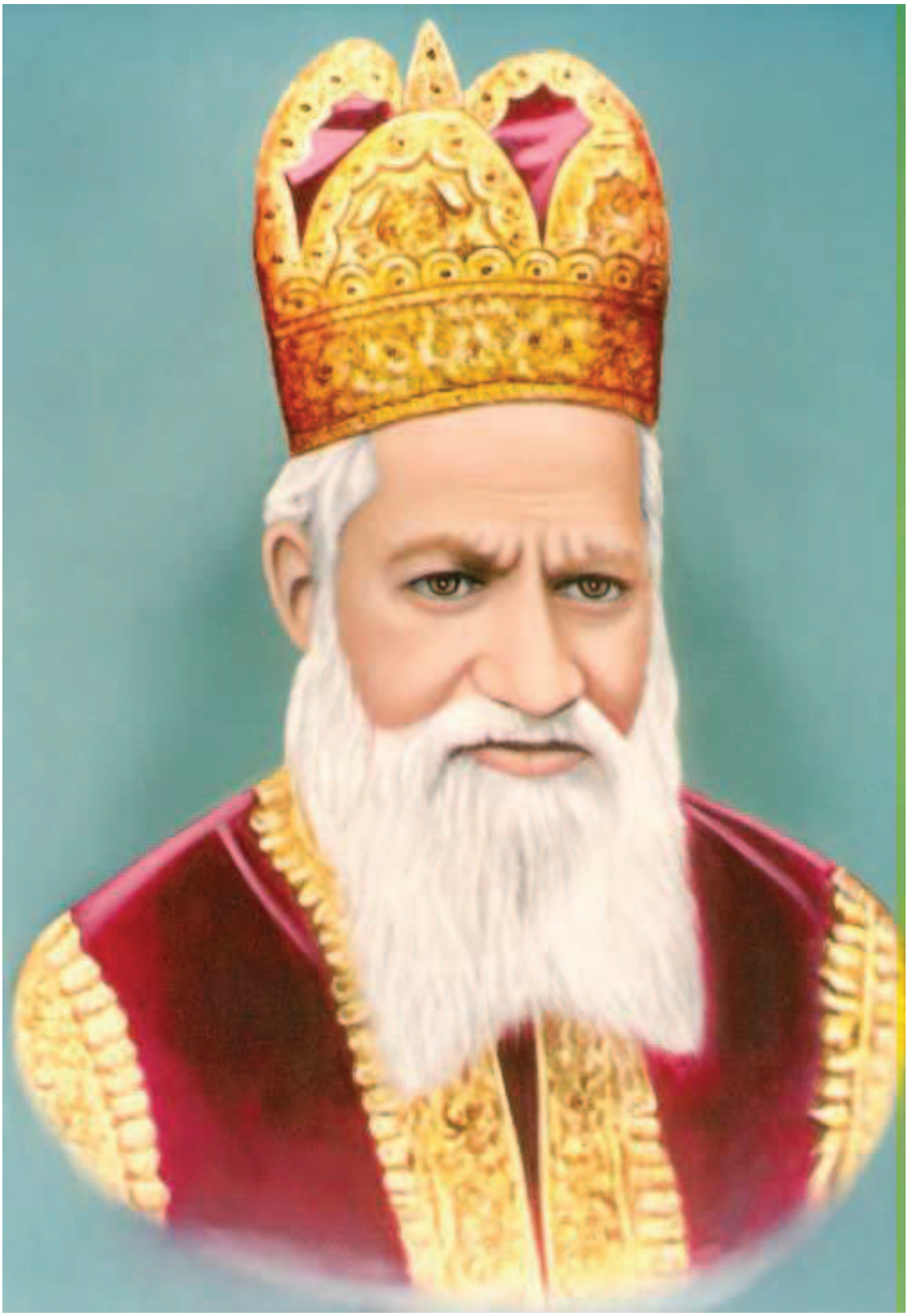

राधास्वामी दयाल की दया

राधास्वामी सहाय

दीबाचा

अक्सर सतसंगियों ने यह दिली ख़्वाहिश बारहा ज़ाहिर की कि जीवन चरित्र परम पुरुष पूरन धनी हुज़ूर महाराज साहब आली जनाब राय सालगिराम साहब राय बहादुर का तैयार किया जावे। यह ख़्वाहिश ग़ैर मामूली नहीं है। कौनसा ऐसा शख़्स है जो कि अपने प्रीतम के हालात ज़िंदगी को दिलो-जान से सुनने का मुश्ताक़[१] न हो? और जब वह प्रीतम उसके दीन दुनिया को सँवारने वाला और उसकी रूह को दम २ ज़िंदगी और ताज़गी बख़्शने वाला और हमेशा का संगी व सहाई हो, तो ज़रूर है कि उसका जीवन चरित्र प्रेमी को निहायत दर्जे अज़ीज़ और प्यारा मालूम होगा। ऐसे प्रेमियों का इस्तियाक़[२] पूरा करने के लिये यह रिसाला जीवन चरित्र लिखा जाता है जिसमें हुज़ूर महाराज साहब के थोड़े से वाक़यात प्रेमियों के प्रेम की तरक़्क़ी के वास्ते दिये गये हैं कि

१ - चाहने वाला। २ - शौक़

जिससे उनको असली अंतरी करामात का जो परमार्थ के वास्ते मख़सूस[१] हैं फ़ायदा हासिल हो, और ज़्यादा हुज़ूर महाराज साहब की गत-मत का हाल उनकी बानी और बचन को ब-ग़ौर मुलाहिज़ा करने से मालूम हो सकता है।

इस रिसाला जीवन चरित्र में जो थोड़े हालात तहरीर[२] किये गये हैं वह सिर्फ़ इस नज़र से कि उनको पढ़कर लोगों को यह मालूम हो कि सच्चे परमार्थियों की रहनी व गहनी व भक्ति किस तरह की होनी चाहिये और बावजूद कुल कुव्वतों और ताक़तों पर पूरा इक़्तदार[३] रखने के गुरुमुख अंग का बर्ताव क़ायम रखने के वास्ते अपने स्वामी की मौज में किस तरह बर्तना चाहिये और किस तरह अपने स्वामी का अदब व ताज़ीम बरक़रार रखना चाहिये।

अजुध्याप्रसाद

१ - ज़रूरी। २ - लिखे गये। ३ - क़ाबू।

राधास्वामी दयाल की दया

राधास्वामी सहाय।

।। प्रार्थना।।

करूँ बीनती राधास्वामी आगे।
गहरी प्रीत चरन में लागे।।१।।
मन चंचल को थिर कर लीजै।
दृढ़ परतीत चरन में दीजै।।२।।
मैं बलहीन नहीं गुन कोई।
चरन तुम्हारे पकड़े सोई।।३।।
राधास्वामी मात पिता पति मेरे।
राधास्वामी चरनन सुक्ख घनेरे।।४।।
राधास्वामी बिना कोई नहीं बाचे।
राधास्वामी हैं गुरु सतगुरु साँचे।।५।।
राधास्वामी दया करें जिस जन पर।
सोई बचे शब्द धुन सुन कर।।६।।
नित्त नवीन प्रीत हिये आवे।
सेवा भजन करत रस पावे।।७।।
सतसँग की चाहत रहे निस दिन।
हरष हरष नित गावे तुम गुन।।८।।
काल करम से लेव बचाई।
सुरत शब्द की करूँ कमाई।।९।।

यह अरज़ी मेरी सुन लीजे।
किरपा कर मोहिं बख़्शिश दीजे।।१०।।
राधास्वामी दाता दीन दयाला।
अपनी दया से करो निहाला।।११।।

मेरे प्यारे गुरू दातार।
मँगता द्वारे खड़ा।।१।।
मैं रहा पुकार पुकार।
मेहर कर देखो ज़रा।।२।।
बरखाओ घटा अपार।
प्रेम रँग दीजे बहा।।३।।
मैं नीच अधम नाकार।
तुम्हरे द्वारे पड़ा।।४।।
मेरी बिनती सुनो धर प्यार।
घट उमँगाओ दया।।५।।
मेरा जनम सुफल हो जाय।
तुम गुन गाउँ सदा।।६।।
राधास्वामी पिता हमार।
जल्दी पार किया।।७।।

राधास्वामी दयाल की दया

राधास्वामी सहाय।

।। जीवन चरित्र ।।

परम पुरुष पूरन धनी हुज़ूर महाराज साहब राधास्वामी दयाल आली जनाब राय सालिगराम साहब राय बहादुर साबिक़ पोस्ट मास्टर जनरल मुमालिक मग़रबी व शुमाली।

१ - हुज़ूर महाराज साहब हिन्दुस्तान के सूबा मुमालिक[१] मग़रबी व शुमाली में शहर आगरा मुहल्ला पीपलमण्डी के मुतबर्रक[२] ख़ानदान, क़ौम कायस्थ माथुर, अल्ल बरनी में फागुन सुदी अष्टमी सम्वत् १८८५ विक्रमी शुक्रवार इष्ट ५६ घड़ी १५ पल यानी साढ़े चार बजे सुबह के मुताबिक़ १४ मार्च सन् १८२९ ई. प्रगट हुए और बनाम नामी राय सालिगराम साहब मौसूम हुए।

२ - आम तौर पर नौ माह मियाद बच्चा पैदा होने की है। हुज़ूर महाराज साहब अट्ठारह महीने बाद माताजी महारानी के गर्भ से बाहर तशरीफ़ लाये और वक़्त पैदाइश के जिस्म मुबारक भी

१ - अनेक देश। २ - उत्तम।

अट्ठारह महिने ही के बच्चे के बराबर था। लेकिन ब-वजह ज़्यादा अर्से के कोई तकलीफ़ माताजी महारानी को नहीं हुई।

३ - हुज़ूर महाराज साहब के जन्म इष्ट से ज्योतिषियों ने ज़ायचा खींचा और उसको देखकर यह कहा कि यह बालक दीन व दुनिया के वास्ते प्रतापी होगा। चुनांचे वैसा ही ज़हूर[१] हुआ और नक़ल उसकी ज़ैल[२] में लिखी जाती है-

।। जन्म सारवी ।।

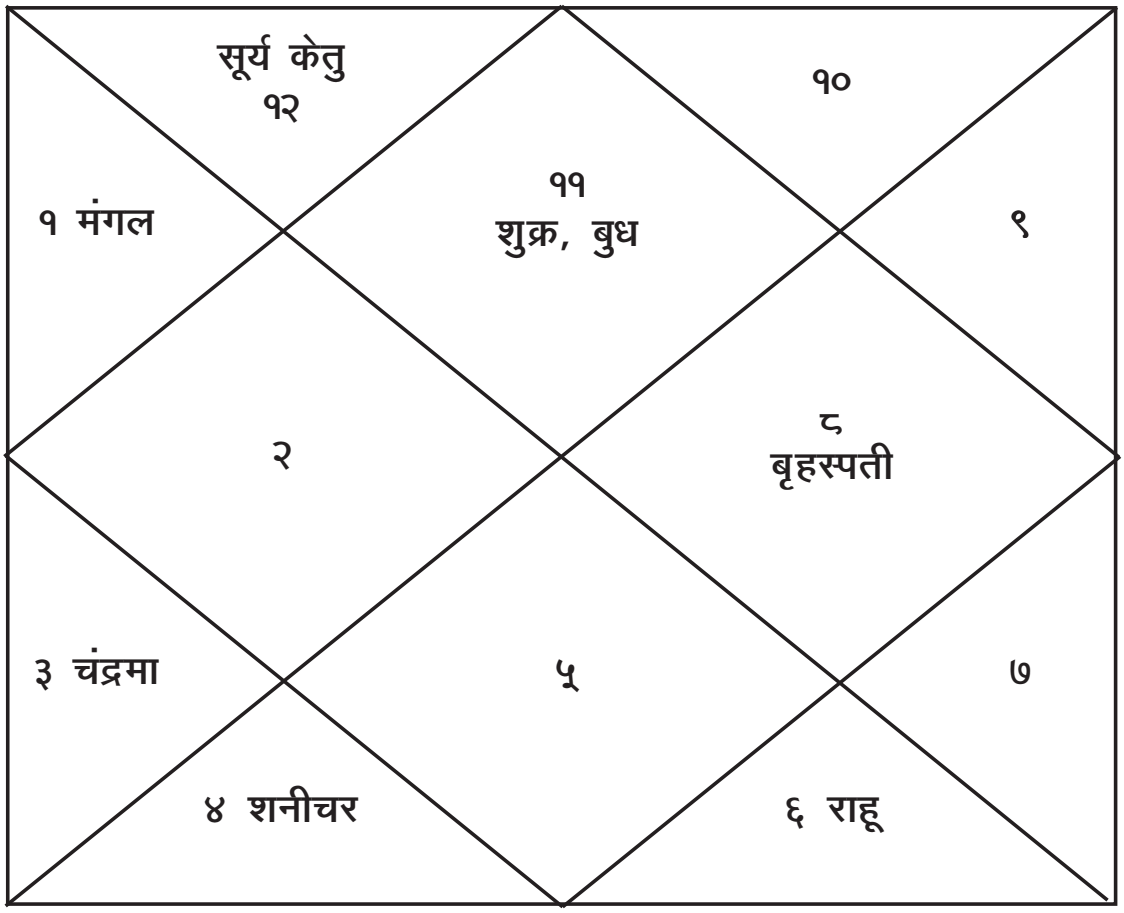

१ - प्रगट। २ - नीचे

(१) लग्न को तमाम शुभ ग्रह देखते हैं और शुक्र व बुध शुभ ग्रह लग्न में पड़े हैं। क्रूर व पापी ग्रहों की दृष्टि से लग्न पाक व मुबर्रा[1] है। ऐसे योग अक्सर व पेश्तर जन्मपत्रियों में देखने में नहीं आये हैं। उच्च व शुभ ग्रह पड़े हुए देखने में आये हैं और उनका फल भी दुनिया की हुकूमत व तरक़्क़ी धन की देखी गई है। जो योग हुज़ूर महाराज साहब का ऊपर दर्ज़ किया गया है उसका फल यही है कि काल अंग से पाक, काम क्रोध से रहित, मुजस्सम[2] दयालु व सतोगुनी वृत्ति हो।

(२) आठवें घर का मालिक बुध शुभ ग्रह है, और वह लग्न में बैठा है, और शुक्र शुभ ग्रह के साथ जो देह का राजा है पड़ा है। यह ऊँचे दर्जे का परमार्थी योग कहा जाता है। यह दोनों योग ऐसे हैं कि ख़ुद तो काल अंग न होवे बल्कि सोहबत और संगत से भी काल अंग का असर न पड़े और उनका भी काल अंग दब जावे। इससे साफ़ सबूत होने औतार कुल्ल मालिक दयाल का प्रगट होता है, जैसे कि तरन तारन हुए।

१ - शुद्ध, साफ़। २ - सर्व अंग करके

(३) दुनिया के रुतबे के वास्ते एक मंगल चार योग से पड़ा है। अव्वल मंगल तीसरे घर में है जो रुतबे का देने वाला होता है। दूसरा अपने घर का है। तीसरा वही मंगल राज घर यानी दसवें घर का मालिक है। चौथा वही मंगल राज घर को आठवीं यानी पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। जिससे साफ़ ज़ाहिर है कि दुनिया में भी बड़ा रुतबा पावें, जैसे कि पोस्ट मास्टर जनरल हुए। यह ओहदा हिन्दुस्तानियों में इससे पेश्तर किसीको नहीं मिला था।

(४) हुज़ूर महाराज साहब के पिताजी महाराज का नाम नामी राय बहादुर सिंह साहब था और पेशा वकालत करते थे। आप निहायत नेक सालह[१] और शिव-भक्त थे और जो रुपया आमदनी वकालत से होता था उसमें से सिर्फ़ उसी क़दर रुपया कि जो ज़रूरी ख़र्च ख़ानगी[२] के वास्ते दरकार होता था घर में देते थे, बाक़ी खैरात कर देते थे। हमेशा हुज़ूर महाराज साहब की माताजी साहबा को यह हिदायत करते कि इन्सान को दुनिया में ज़्यादा

१ - अच्छा स्वभाव। २ - घर।

लिप्त नहीं होना चाहिये, अपनी आक़बत[१] का फ़िक्र भी मुनासिब है और अक्सर ज़िक्र दुनिया की नाशमानता और आख़िरत[२] के फ़ायदों का और ज़्यादातर बैराग का फ़रमाया करते थे।

५ - एक मर्तबा जब हुज़ूर महाराज साहब की उम्र साल-डेढ़ साल की थी, पलंगों में खटमल ज़्यादा हो गये थे। इस वजह से जनाबा दादीजी साहिबा ने उनको ज़मीन पर बिस्तर बिछाकर अपने पास आराम क़रवाया। रात को एक काला नाग जो कि उस वक़्त ख़ानदानी कुलदेव था हुज़ूर महाराज साहब के सिरहाने कुंडली मारकर और फ़न उठाकर बैठा, और रात भर उसी तौर से बैठा रहा कि कोई कीड़ा-मक़ोड़ा आनकर तकलीफ़ न पहुँचावे। हुज़ूर महाराज साहब ने सुबह के वक़्त उसको हाथ से पकड़ लिया और जनाबा दादीजी साहिबा से इशारा किया कि यह क्या है? जनाबा ममदूहा ने हस्ब रिवाज़ साबिक़ के कुछ चावल छोड़े। वह चला गया मगर बाद में भी दो-तीन रोज़ तक आया और वही सेवा करता रहा। हुज़ूर

१ - परलोक। २ - परलोक।

महाराज साहब उसको हमेशा हाथ से पकड़कर जनाबा ममदूहा को दिखाकर इशारा कर दिया करते थे। पस जनाबा ममदूहा ने नाग मज़कूर से बतौर कुलदेव के प्रार्थना की, कि ऐसी दया से ख़ौफ मालूम होता है। बच्चे के नज़दीक न आया कीजिये क्योंकि बच्चा आपको छेड़ता है। चुनांचे नाग मज़कूर ने हुज़ूर महाराज साहब के इशारे को समझकर कि उसकी सेवा नापसंद है, हाज़िर होना छोड़ दिया।

६ - एक मर्तबा एक साधू रूप ने जनाब दादाजी साहब के पास आकर अव्वल हुज़ूर महाराज साहब के दर्शन किये और फिर कहा कि यह बालक सबको दीन व दुनिया का फ़ायदा पहुँचाने वाला और नामवर व मशहूर होगा।

७ - सन् १८३२ ई. में जब जनाब दादाजी साहब के चोला त्याग करने का समय आया और कुछ बीमारी की हालत पैदा हुई, उस वक़्त खिंचाव और ध्यान की हालत में जनाबा दादीजी साहिबा से तीन मर्तबा फ़रमाया कि जिस क़दर बर्तन तांबे और पीतल के हों सब ले आओ। उस पर उन्होंने

कुछ ख़्याल न किया क्योंकि उस वक़्त हुज़ूर महाराज साहब जनाबा ममदूहा की गोद में आ गये थे। उसके बाद जनाब ममदूह ने ध्यान मुल्तवी करके फ़रमाया कि शिवजी महाराज तशरीफ़ लाये हैं। और उनके फ़रमाने पर मैंने बर्तन मंगाये थे। क्योंकि शिवजी महाराज ने यह फ़रमाया था कि तुमने लड़कों की परवरिश के वास्ते कुछ सरमाया[१] नहीं छोड़ा है, तांबे पीतल के बर्तन मंगाओ हम उनको छूकर सोने का कर देंगे कि जिससे गुज़र औक़ात अच्छी तरह से होवे। तीन मर्तबा कहने का हुक्म था, सो कहा। मगर तुम न लाईं, अच्छा किया। अब शिवजी महाराज फ़रमा रहे हैं कि यह तुम्हारे लड़के ख़ुद प्रतापी होंगे, और छोटे लड़के यानी हुज़ूर महाराज साहब को ऐसा धन अपने या खानदान के तसर्रुफ़[२] में लाना मंजूर नहीं है, जो मौज। बाद इसके जनाब ममदूह अपने चोले से सिमटाव करके परम धाम को सिधारे।

८ - जिस वक़्त जनाब दादाजी साहब ने देह त्याग की थी, हुज़ूर महाराज साहब की उम्र क़रीब

१ - घर का ख़र्च। २ - ख़र्च।

चार बरस की थी। हुज़ूर महाराज साहब से बड़ी एक हमशीरा साहिबा और उनसे बड़े एक भाई साहब, कि जिनका इस्म मुबारक राय नन्दकिशोर साहब था और उनकी उम्र क़रीब दस साल की थी, मौजूद थे। राय नन्दकिशोर साहब बिरादर कलां हुज़ूर महाराज साहब की आली तबीयत इब्तिदाय सिन-बलूग़[१] से निहायत नेकसीरत[२] और परमार्थ की जानिब राग़िब[३] थी और मुख़ैयर[४] और मुदब्बिर[५] बदरजे ग़ायत[६] थे और इब्तिदाय से पेशा मुलाज़मत सरकारी इख़्तियार फ़रमा कर वक़्तन-फ़वक़्तन् तरक़्क़ी पाते रहे। यहाँ तक कि बओहदा एक्सट्रा असिस्टन्ट कमिश्नर फैज़ाबाद ब-मुशाहरा[७] सात सौ रुपये माहवार मुम्ताज़[८] हुए, और बहुत नेक नाम रहे। सन् १८७० ई. में ब-उम्र ४८ साल इस जहान से रिहलत[९] फ़रमाई।

९ - जनाबा दादीजी साहिबा बहुत बड़ी, नेक, भोली-भाली और प्रेमी भक्त थीं। बाद देहान्त जनाब

१-शुरू साल बालिग होने से। २-अच्छा स्वभाव। ३-चाहवाली। ४-ख़ैरात करने वाले। ५-इन्तज़ाम करने वाले। ६-बड़े। ७-तनख़्वाह। ८-मुक़र्रर। ९ -कूच।

दादाजी साहब के उन्होंने अपने बच्चों की अच्छी तरह तालीम और परवरिश फ़रमाई। अक्सर जब-जब कोई ज्योतिषी पण्डित जन्मपत्री हुज़ूर महाराज साहब की देखते या कोई साधू हुज़ूर महाराज साहब को बचपन में देखते तो कहते कि यह बच्चा यानी हुज़ूर महाराज साहब ऐसे बड़े तेज वाले और प्रतापी होंगे कि शायद ही ऐसा कोई हुआ होगा। ऐसे बचन उनके सुनकर दादीजी साहिबा बहुत मगन होती थीं।

१० - हुज़ूर महाराज साहब माबैन उम्र छः व ग्यारह साल के बतरीक़ खेल जो नक़्श व निगार[१] करते थे उन्हींसे बरवक़्त सवालात हर किसी को अगली यानी आइन्दा होनेवाली बात का जवाब देते थे और वैसा ही ज़हूर होता था। चुनांचे इस शोहरत से अक्सर व पेश्तर मस्तूरात[२] अपने-अपने मतलब के सवालात करने को आती थीं, और जवाब में जो हुज़ूर महाराज साहब फ़रमाते थे वैसा ही हो जाता था।

११ - हुज़ूर महाराज साहब ब-उम्र लड़कपन

१ - नक़्शा व तस्वीरें। २ - औरतें।

एक मर्तबा तैराकी के मेले में दरियाए जमना में किश्ती पर सवार थे। जब किश्ती धार में पहुँची जहाँ बल्लियों पानी था यकायक जमना में फिसल गये। उस वक़्त बड़ी भारी रोशनी और नूर पानी के अन्दर हुज़ूर महाराज साहब को मालूम हुआ और कोई तकलीफ़ नहीं पहुँची। लाला कन्हैयालाल साहब, ख़ानदानी बड़े भाई आपके जो हमराह थे, फौरन दरिया में कूद पड़े। उस वक़्त पानी मौज से कमर तक हो गया ताकि लाला कन्हैयालाल साहब मौसूफ़ को जो निहायत फ़िक्र में थे सदमा न पहुँचे, और वह हुज़ूर महाराज साहब को ब-आसानी बाहर निकाल लावें। चुनांचे वह निकाल लाये।

१२ - चूँकि हस्ब तरीक़ा ख़ानदानी यह दस्तूर था कि शादी से पहिले गुरुदीक्षा बिहारीजी वाले गुसांईंजी से दिलाई जाती थी, लिहाज़ा उसी मुताबिक हुज़ूर महाराज साहब से भी कहा गया कि गुरुदीक्षा लेवें। हुज़ूर महाराज साहब ने अपने ख़ानदानी गुसांईजी से उस वक़्त चंद दक़ीक़[1] सवाल मज़हबी व मुताल्लिक़ भेद शब्द के किये,

१ - गहरे।

जिनके जवाब न पाने पर गुरुदीक्षा लेने से इन्कार किया। मगर मजबूर कराये जाने और ख़ासकर जनाबा दादीजी साहिबा के हुक्म पर गुरुदीक्षा इस शर्त पर ले ली कि जब सच्चे गुरू मिलेंगे तब उनको गुरू धारण किया जावेगा और गुसांईंजी मौसूफ़ को कोई एतराज़[१] न होगा।

१३ - हुज़ूर महाराज साहब की पहली शादी फ़र्रुख़ाबाद में हुई और उनसे एक दुख़्तर[२] नेक अख़्तर[३] पैदा हुई। कुछ अर्से बाद स्त्री महारानी चोला छोड़कर परम धाम को सिधारीं और लड़की मौसूफ़ का भी शादी होने के बाद चोला छूट गया और वह भी परम धाम को राही हुईं।

१४ - हुज़ूर महाराज साहब ने छोटी उम्र में ही बाद तहसील[४] इल्म फ़ारसी के चार साल ही में अंग्रेज़ी हासिल करके सीनियर क्लास को जो उस वक़्त में आला दरजा तालीम[५] का था पास किया। ख़ासकर इल्म थियालॉजी[६] (इल्म इलाही) में जिसमें तबीयत बहुत राग़िब थी अव्वल रहते थे, और

१ - उज्र । २ - लड़की। ३ - नसीबवाली। ४ - हासिल करना। ५ - पढ़ाई। ६ - मालिक का ज्ञान।

अपनी तेज़फ़हमी और ज़हानत[1] से सिवाय अंग्रेज़ी और फ़ारसी के और भी उलूम मिस्ल मन्तिक व फ़ल्सफ़ा के हासिल किये।

१५ - हुज़ूर महाराज साहब ने, अट्ठारह बरस की उम्र में मुलाज़मत सरकारी इख्तियार की। १४ मार्च सन् १८४७ ई. ब-मुक़ाम आगरा दफ़्तर पोस्ट मास्टर जनरल साहिब मुमालिक मग़रबी व शुमाली (जो बाद में युनाइटेड प्राविंसेज़ आगरा व अवध के नाम से मशहूर था) जिसमें पंजाब, अवध, राजपूताना और सेन्ट्रल इन्डिया भी उस वक़्त शामिल थे, ब-ओहदा क्लर्क दोयम ब-मुशाहरा सौ रुपया माहवार मुक़र्रर हुए। इस ओहदे में हुज़ूर महाराज साहब को काम दौरे का ब-हमराही पोस्ट मास्टर जनरल साहब सपुर्द हुआ।

१६ - हुज़ूर महाराज साहब ने ब-अहद मुलाज़मी अव्वल इल्म ज्योतिष की तहसील की। बादमें उसका तर्जुमा ब-ज़बान फ़ारसी ऐसा किया कि हरेक वाक़िफ़दार इल्म ज्योतिष कारक व मारक को बख़ूबी समझ ले। और उन्हींके समझने के

१ - तेज़ी, तबीयत।

वास्ते बहुत ज़ीइल्म[1] ज्योतिषी आया करते थे। बाद तालीम क़वायद देखने व समझने व बयान करने कारक व मारक के ख़ुद तजुर्बा करके तारीफ़ करते थे कि कुतुबहाय[2] ज्योतिष को आज तक किसी ने ऐसा नहीं समझा है जो ऐसे आसान तरीके से दूसरे को समझा सके, जैसा कि आपने कारक व मारक के देखने और समझने के सहल तरीक़े ज़ाहिर फ़रमाये हैं।

१७ - ऐयाम मुलाज़मत में हुज़ूर महाराज साहब ओहदा इन्सपेक्टर व सुपरिनटेन्डेन्ट व हेड असिस्टन्ट व पर्सनल असिस्टन्ट व चीफ़ इन्सपेक्टर व पोस्ट मास्टर जनरल पर मुमताज़ हुए।

१८ - अक्तूबर सन् १८५० ई. में मिस्टर रिडिल साहब पोस्ट मास्टर जनरल ने काम पोस्ट मास्टरी सहारनपुर, ऐसे वक़्त पर कि तमाम अमला बीमार था और काम निहायत अब्तर[3] पड़ा था, सुपुर्द किया। हुज़ूर महाराज साहब ने वहाँ जाकर मुलाहज़ा फ़रमाया कि क़रीब एक महीने से कुछ काम नहीं हुआ था। हज़ारों बक्से माल के जो

१ - इल्म वाले। २ - किताबें। ३ - अस्त व्यस्त।

बैलगाड़ी में रवाना होते थे और सैकड़ों पार्सल डाक की पड़ी हुई थीं। उन सबको दो मुहर्रिरों की मदद से अर्से दो माह में अलावा काम रोज़मर्रा के रवाना कर दिया और कुल काम बाक़ी माँदा साफ़ हो गया। आइन्दा काम दुरुस्ती और सफ़ाई के साथ होने लगा। इस पर मिस्टर रिडिल साहब ने निहायत ख़ुश होकर तरक़्क़ी का वादा किया।

१९ - ब-माह सितम्बर सन् १८५१ ई. में कार जांच हिसाब वैगन्ट्रेन एजन्सी व डाकख़ाना इलाहाबाद का जो निहायत अब्तर था ऐसे उम्दा तौर से अंजाम दिया कि उससे मिस्टर रिडिल साहब पोस्ट मास्टर जनरल और नीज़ औनरेबिल सर टाम्सन साहब लेफ्टिनेन्ट गवर्नर बहादुर निहायत ख़ुश हुए। जो ओहदे इन्सपेक्टिंग पोस्ट मास्टर के पहली अप्रैल सन् १८५२ ई. में सिर्फ़ मुमालिक मग़रबी व शुमाली में नये ईजाद हुए थे उनमेंसे एक ओहदे पर जो आगरा में था, हुज़ूर महाराज साहब को ब-मुशाहरा १५० रुपया माहवार मुक़र्रर किया।

२० - पहली जुलाई सन् १८५२ ई. को हेड

असिस्टेन्ट यानी सर दफ़्तर पोस्ट मास्टर जनरल ब-मुक़ाम आगरा मुक़र्रर हुए, और वक़्त-फ़वक़्तन् इज़ाफ़ा होकर सन् १८६० ई. में ३५० रुपया माहवार तनख़्वाह हो गई। इस अस्नाय[1] में डाकख़ाना इटावा में एक तग़ल्लुब[2] बरामद किया। मेल बैग और चमड़े की थैलियों के बनवाने में किफ़ायत निकाली।

२१ - एयाम दौरे में एक मर्तबा ब-सवारी घोड़ा हुज़ूर महाराज साहब का गुज़र हाथियों के जंगल से हुआ। उस वक़्त उस रास्ते में बहुत से हाथी मौजूद थे और हुज़ूर महाराज साहब को जाते हुए बराबर देखते रहे मगर किसी ने अपनी जगह से जुम्बिश[3] तक नहीं की।

२२ - एक मर्तबा हुज़ूर महाराज साहब ब-हमराही अफ़सर दौरे में गये थे। अफ़सर तो पहले ही दूसरे मुक़ाम को जहाँ ख़ीमे इस्तादा[4] हो गये थे चले गये और हुज़ूर महाराज साहब उसी जगह वास्ते इन्तज़ाम के ठहर गये। क़रीब बारह बजे शब के जबकि चाँदनी रात थी मय जमादार

१ - अर्से। २ - चोरी। ३ - हिलना। ४ - खड़े।

के ब-सवारी घोड़ा दूसरे मुक़ाम के वास्ते रवाना हुए। रास्ते में एक नदी थी। वहाँ पर पहरा सिपाही का था। उसने कहा कि शेर पानी पीने के वास्ते आना चाहता है और पानी पीकर थोड़ी देर यहाँ ठहरता है। जहाँ आप खड़े हैं इसी रास्ते से होकर जाता है इसलिये इस वक़्त रास्ता बन्द हो जाता है। इस वक़्त क़रीब एक बजा है आप लौट जाइये। इसी अस्नाय में शेर दहाड़ा, घोड़ा चौंका, जमादार ख़ौफ़ खाकर वापस चला गया और सिपाही दरख़्त पर चढ़ गया। मगर हुज़ूर महाराज साहब उसी जगह खड़े रहे कि शेर आ पहुँचा और ब-सबब चांदनी के साफ़ नज़र आया मगर वह पानी पीकर फ़ौरन दूसरे रास्ते से दहाड़ता हुआ और भागता हुआ चला गया। यानी उस तरफ़ को जहाँ हुज़ूर महाराज साहब खड़े थे, और जिस रास्ते से वह हमेशा जाया करता था, नहीं गया। हुज़ूर महाराज साहब बाद उसके चले जाने के रवाना हो गये और ब-ख़ैरोआफ़ियत तमाम[१] उस मुक़ाम पर जहाँ पोस्ट मास्टर जनरल साहिब थे पहुँच गये।

१ - पूरे कुशल मंगल।

२३ - जबकि अहाता पंजाब अमलदारी ब्रिटिश गवर्नमेंट में आया उसके बाद डाकख़ानाज़ात क़ायम करने की ग़रज़ से ब-हमराही अपने अफ़सर के हुज़ूर महाराज साहब पंजाब तशरीफ़ ले गये। शहरों और देहातों में ब-ग़रज़ क़ायम करने डाकख़ानाज़ात व समझाने फ़वायद[1] मुताल्लिक़ उसके ब-सवारी घोड़ा दौरा फ़रमाया। मगर हरियाणा के बाज़ देहात के बाशिन्दों ने क़ायमी डाकख़ाना से नाराज़गी ज़ाहिर करके हुज़ूर महाराज साहब और उनके अफ़सर पर ईंट पत्थर फेंकने शुरू किये। पोस्ट मास्टर जनरल साहिब और उनके साथ हुज़ूर महाराज साहब ने अपने घोड़े वहाँ से भगाये और लोगों ने भी ईंट पत्थर मारते हुए ताक़्क़ुब[2] किया। मगर घोड़ों के पीछे ही सब ईंट पत्थर गिरते रहे, कोई घोड़ों पर या हुज़ूर महाराज साहब या उनके अफ़सर को नहीं लगा।

२४ - एक दफ़ा हुज़ूर साहब वास्ते तहक़ीक़ात मुक़द्दमे के पालकी में रात के वक़्त तशरीफ़ ले जा रहे थे। चित्तौड़गढ़ और घांगरौल के दरमियान

१ - फ़ायदे। २ - पीछा।

एक शहाबा जिन्नात का मिला। वह कुछ दूर तक हुज़ूर महाराज साहब की पालकी के साथ चला। थोड़ी दूर चलने के बाद हुज़ूर महाराज साहब ने उसको फ़रमाया कि अब जाओ। फिर वह ग़ायब हो गया।

२५ - एक मर्तबा हुज़ूर महाराज साहब ग्वालियर से मुक़ाम सीपरी को तशरीफ़ ले जा रहे थे। रास्ते में मोहना नदी पर एक शेर मिला। वह एक मील तक हुज़ूर महाराज साहब की पालकी के साथ भागता हुआ चला और फिर जंगल को चला गया। हुज़ूर महाराज साहब के किसी हमराही पर कोई हमला नहीं किया। इसको देखकर जो लोग साथ में थे और ख़ौफ़ खा रहे थे बहुत ही ताज्जुब करने लगे।

२६ - एक मर्तबा हुज़ूर महाराज साहब ब-तक़रीब दौरा झाँसी तशरीफ़ ले गये थे। ग्वालियर और झाँसी के बीच एक नदी कोकरायल थी। वहाँ कोई किश्ती वग़ैरा न थी और हुज़ूर महाराज साहब को नदी के पार जाना ज़रूरी था। उसी वक़्त एक लट्ठा लकड़ी का नदी में बहता हुआ आया। हुज़ूर

महाराज साहब उसको सीधा कराकर उस पर क़दम रखते हुए नदी को पार कर गये। पाँव मुबारक ने बिल्कुल लग़ज़िश[1] नहीं की और सब हमराही भी इसी तरह हुज़ूर महाराज साहब के पीछे-पीछे पार उतर गये और फिर वह लट्ठा आगे को बह गया।

२७ - एक दफ़ा हुज़ूर महाराज साहब देवास को जो इन्दौर के क़रीब है ब-तक़रीब दौरा तशरीफ़ ले गये थे और डाक बंगले में ठहरे थे। रात के बारह बजे के क़रीब पानी नहीं रहा। डाक बंगले में कुआँ न था और कोई हरकारे वग़ैरा जो वहाँ मौजूद थे ब-सबब ख़ौफ़ रात को पानी लाने न गये। तब भवानी मुलाज़िम खुद एक बावड़ी में से जो क़रीब ही रानी के बाग़ में थी पानी लाने को चला गया। उस बावड़ी में क़रीब सत्तर-पिछत्तर सीढ़ी उतरकर चारों तरफ़ घाट बने थे। वहाँ से पानी भरकर जब ऊपर आया तो उसको आवाज़ ऐसी मालूम पड़ी कि बहुत से आदमी बावड़ी के अन्दर पानी में कूद रहे हैं, और शोर व ग़ुल करते

१ - फिसलना।

हैं मगर कोई नज़र नहीं पड़ा। जब बाग़ के बाहर आया तो देखा कि हुज़ूर महाराज साहब खड़े हैं और भवानी मुलाज़िम पर नाराज होकर फ़रमाया कि तुम बग़ैर हमारी इत्तिला के इस वक़्त इस जगह क्यों चले आये? हमको तुम्हारी हिफ़ाज़त के लिये यहाँ तक आना पड़ा। बाद उसके सुबह हरकारों वग़ैरा से मालूम हुआ कि इस बावड़ी में आसेब[1] हैं। बहुत से आदमी वक़्तन्-फवक़्तन् डूब गये हैं और जो कोई रात को जाता है वह वापस नहीं आता। इस वास्ते कोई शख़्स उसमें बाद चिराग़ जलने के नहीं जाता है।

२८ - हुज़ूर महाराज साहब की दूसरी शादी सन् १८५२ ई. में ब-मुक़ाम आगरा हुई। उससे दो दुख़्तर[2] नेक अख़्तर और तीन फ़रज़न्द[3] पैदा हुए। पहिले फ़रज़न्द ने एक बरस की उम्र में देह त्याग की। उसके बाद बड़ी दुख़्तर ने जिनकी शादी बाबू राजनरायन साहब से हुई थी ब-उम्र २८ साल, सन् १८८६ ई. में एक लड़का कुंवर सन्तप्रसाद ग्यारह दिन का छोड़कर, चरनों में निवास के

१ - भूत प्रेत। २ - लड़की। ३ - लड़का।

वास्ते देह त्याग की। दूसरी दुख़्तर जिनकी शादी बाबू रामचन्द्र से हुई उनके एक दुख़्तर और दो फ़रज़न्द बाबू हरिश्चन्द्र व बाबू बिशनचन्द्र और एक पोती और एक पोता थे। दूसरा फ़रज़न्द यह नियाज़मन्द लेखक अजुध्याप्रसाद है और मेरी औलाद में से किताबत के वक़्त दो लड़की और एक लड़का कुँवर गुरुप्रसाद और एक पोता कुँवर आनंदप्रसाद और एक नवासी बड़ी दुख़्तर से, जिसकी शादी बाबू प्रभुशंकर साहब से हुई है मौजूद है। तीसरे फ़रज़न्द द्वारकाप्रसाद ने ब-उम्र आठ साल सन् १८७७ ई. में देह त्याग करके चरनों में बासा पाया।

२९ - सन् १८५७ ई. ऐयाम ग़दर में हुज़ूर महाराज साहब ने पोस्ट मास्टर जनरल साहब के दफ़्तर का ऐसा उम्दा इन्तज़ाम किया कि कोई काग़ज़ दफ़्तर का ज़ाया[1] नहीं हुआ और पोस्ट मास्टर जनरल और पोस्ट मास्टर आगरा को इस क़दर मदद दी कि चिट्ठियों का आना-जाना बिल्कुल बन्द नहीं हुआ। अगर एक रास्ता बन्द हो गया तो

१ - नुक़सान।

डाक रसानी का इन्तज़ाम दूसरे रास्ते से कर दिया और ख़बर के महकमे में वक़्तन-फ़वक़्तन् क़ासिद बहम पहुँचाने[1] का इन्तज़ाम ऐसी खूबी के साथ किया कि चिट्ठियात सरकारी अफ़वाज दिल्ली व लखनऊ को ले जाने और लाने में किसी क़िस्म की दिक़्क़त नहीं हुई। ऐसी ख़ैरख़्वाही और कारगुज़ारी के सिले[2] में गवर्नमेंट मग़रबी व शुमाली व नीज़ सुप्रीम गवर्नमेंट हिन्द से चिट्ठियात शुक्रिया अता हुईं। जब क्लार्क साहिब पोस्ट मास्टर जनरल ने वास्ते इनाम के देहात तहरीर करना चाहा तो हुज़ूर महाराज साहब ने उनको रोक दिया और कहा कि यह जो कुछ कारगुज़ारियाँ मैंने की हैं वह मेरी मुलाज़मी के फ़रायज़ मन्सबी[3] हैं। मुझे किसी क़िस्म का इनाम लेना मंज़ूर नहीं है।

३० - तारीख़ ५ जुलाई सन् १८५७ ई. को बागियों की फ़ौज आई और गोलियाँ चलने लगीं। यह ख़बर मशहूर हुई कि अगर बाग़ी शहर में आवेंगे तो क़िले से गोला अन्दाज़ी बिला किसी

१ - इकट्ठा करना। २ - एवज़। ३ - नौकरी का धर्म।

लिहाज़ के शहर पर की जाएगी। चूंकि मकान हुज़ूर महाराज साहब का और नीज़ मकानात दीगर अहल बिरादरी के क़िले के क़रीब और गोले की ज़द[१] में थे, बुज़ुर्गान क़ौम ने आकर हुज़ूर महाराज साहब से मशवरा किया कि कोई महफ़ूज़[२] जगह में यहाँ से हट जाना मुनासिब है। हुज़ूर महाराज साहब ने सब लोगों को बहुत दिलासा दिया और फ़रमाया कि मालिक की मौज का भरोसा रखना चाहिये और सबके इत्मीनान के वास्ते दीवान हाफ़िज में से उसी वक़्त फ़ाल निकाली। जो शेर निकला उसका मज़मून यह था कि तुम दुनिया की आफ़ात[३] से इस क़दर परेशान हो, कुछ उन मुसीबतों से बचने का भी सामान किया है जो मौत के वक़्त आयद[४] होंगी? उस वक़्त का कौन सहाई है? हुज़ूर महाराज साहब ने उस शेर का मतलब मय दीगर नसीहतों के सबको सुनाकर फ़रमाया कि चाहे सब लोग दूसरी जगह चले जावें मगर हम मालिक की मौज के भरोसे पर

१ - मार। २ - हिफ़ाज़त की। ३ - तकलीफ़ों।
४ - सामने आवेंगी।

यहीं रहेंगे और बाद तसल्लुत[1] के कुल्ल मालिक की भक्ति सच्चे और पूरे तौर से जारी करेंगे। इस पर सब लोगों को शान्ति आई और कोई वहाँ से न गया। मौज से बाग़ी शहर में नहीं आये और क़िले से जो गोले चलाये गये उनसे उस मुहल्ले में कोई नुक़सान नहीं पहुँचा।

३१ - ग़दर में हालत लोगों की यकायक तब्दील हुई, यानी जो अमीर थे मुफ़लिस हो गये और जो ग़रीब और मुहताज थे वह दौलतमन्द। यह बहुत बड़ा मौक़ा दुनिया की नापायदारी[2] और बेसबाती[2] का सबक़ लेने के वास्ते पैदा हुआ। इससे मालिक की खोज का फ़िक्र और उसके मिलने की ख़ुशी का असर पैदा होने का मौक़ा आया। चुनांचे हुज़ूर महाराज साहब ने बाद तसल्लुत के एक पण्डित को नौकर रखकर कथा भागवत की शुरू कराई। उसमें भेद मालिक और उसके मिलने के रास्ते का कुछ न देखकर उसको बन्द कर दिया और उपनिषदों का पढ़ना शुरू किया। जो अभ्यास प्राणायाम और दृष्टि के साधन उसमें

१ - अमन। २ - नाशमानता।

तहरीर थे उनका शग़ल[1] किया और जो नतीजे उसमें जिस २ वक़्त के ऊपर मिलने को तहरीर थे हासिल हुए मगर उनको पूरे फ़ायदे का न पाया। और मसनवी मौलाना रूम का भी मुताला फ़रमाया। उसमें जो शब्द और गुरू की महिमा थी उसको पसन्द फ़रमाया और वास्ते तलाश पूरे गुरु के लोगों से इरशाद फ़रमाया। जिस साधू, पण्डित और मौलवी की तारीफ़ सुनते उससे मिलकर सवालात करते पर जवाब भेद का न मिलता। और भी दीगर मज़हबी किताबों का मुलाहज़ा किया मगर कोई भेदी उस दर्जे तक का न मिला। यह तलाश बराबर उस वक़्त तक जारी रही जब तक कि हुज़ूर स्वामीजी महाराज से भेद के सवालों का जवाब शाफ़ी[2] न मिला।

३२ - सन् १८५८ ई. में जब हुज़ूर महाराज साहब ओहदा हेड असिस्टन्ट यानी सर दफ़्तर पोस्ट मास्टर जनरल साहब थे ब-मुक़ाम मेरठ दौरे में पोस्ट मास्टर जनरल साहब बहादुर के पास हस्बुल तलब[3] तशरीफ़ ले गये। उस वक़्त लाला

१-अभ्यास। २-पूरे इत्मीनान का। ३-बुलाये जाने पर।

प्रतापसिंह साहब सेठ जो बाद में जनाब चाचाजी साहब के लक़ब से मशहूर हुए दौरे में पोस्ट मास्टर जनरल साहब के ब-ओहदा कैम्प क्लर्की हमराह थे। जहाँ हुज़ूर महाराज साहब फ़रोकश[१] हुए उसके बराबर के कमरे में वह भी ठहरे हुए थे। जनाब चाचाजी साहब मौसूफ़ जो पाठ पंचग्रन्थी का करते थे उसको हुज़ूर महाराज साहब ने सुनकर जनाब ममदूह से दरियाफ़्त फ़रमाया कि यह जो आप पाठ करते हैं इसके भेद और शग़ल से भी वाक़िफ़ हैं या और किसी साहब इस रम्ज़[२] के भेदी से आप शनासा[३] हैं? इस पर चाचाजी साहब ने फ़रमाया कि मेरे बड़े भाई साहब लाला शिवदयाल सिंह साहब जो आगरा में तशरीफ़ रखते हैं इस रम्ज़ से वाक़िफ़ हैं और अभ्यास भी करते हैं। हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि आगरा वापस जाने पर आप ज़रूर अपने भाई साहब मुकर्रम[४] से मेरी मुलाक़ात करा दें।

३३ - आगरा वापस आने पर हुज़ूर महाराज साहब ने चाचाजी साहब से फिर फ़रमाया कि आप

१ - ठहरे। २ - भेद। ३ - पहचानते। ४ - बुज़ुर्ग।

अपने भाई साहब से मेरी मुलाक़ात करा दीजिये। जनाब मौसूफ़ ने फ़रमाया कि बाद दरियाफ़्त करने के मैं ले चलूँगा। फिर मुकर्रर याद दिहानी पर इतवार के रोज़ माह नवम्बर सन १८५८ ई. में हुज़ूर महाराज साहब, चाचाजी साहब के हमराह उनके भाई साहब मुअज़्ज़िज़ व मुकर्रम की ख़िदमत में तशरीफ़ ले गये जिनका नाम नामी लाला शिवदयाल सिंह सेठ साहब था। यही हुज़ूर मुअल्ला[१] बाद में राधास्वामी दयाल और स्वामीजी महाराज साहब के लक़ब से मशहूर हुए। परमार्थ की चर्चा बहुत अर्से तक हुज़ूर स्वामीजी महाराज से बराबर होती रही। अव्वल ही दिन की चर्चा में सैकड़ों सवालात हुज़ूर साहब ने निसबत प्राणायाम व मुद्राओं के साधन और रचना और गुरु और शब्द और अन्तर अभ्यास और संतमत के किये और हुज़ूर स्वामीजी महाराज ने उनके जवाब शाफ़ी[२] व वाफ़ी[२] बयान फ़रमाये और भी हाल अभ्यास का और उनके विघ्नों का और जुगत उनके हटाने की

१ - सबसे बड़े। २ - पूरे इत्मीनान के।

बयान फ़रमाई और हालात कश्फ़[1] अन्दरूनी के पैदा व ज़ाहिर हुए। हुज़ूर महाराज साहब ने हुज़ूर स्वामीजी महाराज की ख़िदमत से वापस तशरीफ़ लाते वक़्त ही उन लोगों से जिनको वास्ते तलाश गुरु कामिल[2] के कह रखा था फ़रमा दिया कि जिनकी हमको तलाश थी वह मिल गये। और जिसको ख़्वाहिश होवे हुज़ूर स्वामीजी महाराज की ख़िदमत में हाज़िर होवे। इसके बाद हुज़ूर महाराज साहब ने अव्वल हफ़्तावार इतवार को और बाद चन्द हफ़्ते में दो-तीन मर्तबा और फिर रोज़ाना हुज़ूर स्वामीजी महाराज की ख़िदमत में जाना और परमार्थी चर्चा करना जारी रखा। सच्ची भक्ति की अमली कार्रवाई पूरे तौर से इज़रा फ़रमाई और इन्तिहा के दरजे को पहुँचा दी और हाज़िरी सतसंग और सेवा हुज़ूर स्वामीजी महाराज में बहुत ज़्यादा वक़्त शबो रोज़ में सर्फ़ करने लगे।

३४ - थोड़े अर्से बाद हुज़ूर महाराज साहब ब-तक़रीब दौरा मथुरा वृन्दावन तशरीफ़ ले गये। वहाँ अपने गुसांईंजी बिहारीजी वाले से मिले और

१ - प्रकाश। २ - पूरे।

उनको सुरत शब्द योग का हाल और हुज़ूर स्वामीजी महाराज का पता बतलाकर कहा कि या तो गुसांईंजी आप इस मार्ग का भेद बतलावें और अभ्यास में मदद दें, वरना हुज़ूर स्वामीजी महाराज को गुरु धारण करने की इजाज़त दें, बल्कि ख़ुद भी हुज़ूर स्वामीजी महाराज को गुरु धारण करके अपना उद्धार करावें। चूंकि गुसाईंजी भेद न बतला सके, हुज़ूर महाराज साहब को इजाज़त दे दी और ख़ुद भी हमराह हुज़ूर महाराज के हुज़ूर स्वामीजी महाराज के सतसंग में हाज़िर हुए।

३५ - हुज़ूर महाराज साहब, हुज़ूर स्वामीजी महाराज की ख़िदमत में ज़ायद एक साल से वास्ते जारी करने आम सतसंग के अर्ज़ कर रहे थे। पहले हुज़ूर स्वामीजी महाराज ने फ़रमाया कि इसमें तकलीफ़ होगी। तुम जिनका नाम बतलाओ उनको युक्ति बतला दी जावे या एक फ़ेहरिस्त लिखकर पेश करो, हम उनका उद्धार योंही कर देंगे, बल्कि जिसका तुम चाहोगे उद्धार हो जावेगा। चूंकि हुज़ूर महाराज साहब ने इस ख़ास काम के वास्ते ही मनुष्य देह धारण फ़रमाई थी अर्ज़ किया

कि कुल जगत का उद्धार होना चाहिये। हुज़ूर स्वामीजी महाराज ने तब इस अर्ज़ को मंज़ूर फ़रमाकर सन् १८६१ ई. में बसंत पंचमी के दिन सतसंग आम जारी फ़रमाया जैसा कि शब्द ज़ैल[1] से जो कि हुज़ूर स्वामीजी महाराज साहब ने हुज़ूर महाराज साहब की प्रार्थना का फ़रमाया है ज़ाहिर है, और जिसका अमल दरामद पूरे तौर से हुज़ूर महाराज साहब ने जारी फ़रमाया और अपना चोला क़ायम रखने तक ब-तरक़्क़ी निबाह करके नमूना लासानी[2] दिखला दिया।

।। सार बचन नज़्म, बचन ३३, शब्द १९ ।।

सतगुरु से करूँ पुकारी। संतन मत कीजे जारी।।१।।
जीवों का होय उधारी। मैं देखूँ यही बहारी।।२।।
मैं मौज करूँ फिर भारी। सब आरत करें तुम्हारी।।३।।
मैं हरखूँ खेल निहारी। मानो यह अर्ज़ हमारी।।४।।
मैं राखूँ पक्ष तुम्हारी। अब कीजे दया बिचारी।।५।।
मैं बालक सरन अधारी। मैं करूँ बेनती भारी।।६।।
जो मौज न हो यह न्यारी। तो फेरो सुरत हमारी।।७।।
घट भीतर होय क़रारी। शब्दारस करे अहारी।।८।।
दोउ में से एक सुधारी। जो दोनों करो दया री।।९।।

१ - नीचे लिखा हुआ। २ - जिसका दूसरा नमूना नहीं।

मैं राज़ी रज़ा तुम्हारी। मैं राधास्वामी गोद पड़ा री।।१०।।

३६ - हुज़ूर महाराज साहब ने तन से हर क़िस्म की सेवा हुज़ूर स्वामीजी महाराज की की, मसलन चरन दाबना, पंखा करना, चक्की पीसना, हुक़्क़ा भरना और पिलाना, और चाह-शीरीं[१] से पानी भरकर लाना, स्नान कराना, खाना बनाना, मकान की झाड़ू सफ़ाई और पुताई करना, मिट्टी खदाने से खोदकर लाना, जंगल के दरख़्तों से दातुन काटकर लाना, पाख़ाना साफ़ करना, मोरी धोना, चौका-बर्तन करना, बाज़ार से सामान ख़रीदकर ख़ुद लाना, अपने कंधे और चड्ढी पर सवारी देना, पालकी उठाना, और हमराह सवारी के दौड़ना, पीकदान पेश करना व चँवर डुलाना वग़ैरा।

३७ - हुज़ूर महाराज साहब ने धन की सेवा भी ऐसी की, कि कुल तनख़्वाह हुज़ूर स्वामीजी महाराज को भेंट कर देते थे। हुज़ूर स्वामीजी महाराज चन्द ब-क़दर[२] ज़रूरत ख़र्च ख़ानादारी व बाद को निस्फ़[३] तनख़्वाह मकान पर हुज़ूर महाराज साहब

१-मीठे पानी का कुआ। २-मुआफिक़। ३-आधी।

के भिजवा देते थे। उसमें से भी हुज़ूर महाराज साहब वक़्तन्-फ़वक़्तन् ले आते थे, और दीगर क़िस्म की सेवा, आरती भोग, पोशाक, ज़ेवर वग़ैरा में सर्फ़ करते रहते थे, और क़र्ज़ लेकर भी आरती वग़ैरा किया करते थे। जिस वक़्त जो ज़रूरत होती उसको बिला ताम्मुल पूरा करते थे, ख़्वाह रुपया पास हो या न हो।

३८ - हुज़ूर महाराज साहब मन से इस तरह सेवा में मसरूफ़ रहते थे कि बिला आलस व नुमाइश[१] व अहंकार के दीनता के साथ अहकाम हुज़ूर स्वामीजी महाराज की तामील फ़रमाते थे, चाहे वह मन और बुद्धि के खिलाफ़ ही क्यों न हो। ग़रज़ यह कि हर क़िस्म की ऊँच नीच सेवा तन, मन, धन से हुज़ूर स्वामीजी महाराज की ऐसी करी कि जो इन्सानी ताक़त से बाहर है।

३९ - हुज़ूर महाराज साहब ने सुरत की सेवा इस तौर पर हुज़ूर स्वामीजी महाराज की की, कि हर वक़्त सुरत में नाम व स्वरूप हुज़ूर स्वामीजी महाराज का बसा रखा और इस मसले को कि

१ - दिखावा।

'दिल बा यार व दस्त बा कार' पूरे तौर से साबित कर दिया। खाते पीते, चलते फिरते, सोते जागते हर वक़्त लगन हुज़ूर राधास्वामी दयाल की लगी रहती थी। हुज़ूर महाराज साहब की सेवा की निस्बत यह क़ौल और फ़ेल था-

''क्या वारूँ गुरु पर आई। तन मन धन तुच्छ दिखाई।।
सुर्त अंस तुम्हारी प्यारी। अब सरबस हुई तुम्हारी।।''

४० - जल भरने की सेवा हुज़ूर महाराज साहब ने अर्से तक इस तौर से की कि रोज़ाना दोपहर के वक़्त गर्मी, ज़ाड़े, बरसात में नंगे पैर मीठे कुओं से जो शहर के बाहर वाक़ै हैं और शहर में कुएं खारी हैं, एक घड़ा भरकर कभी मोती कुएं से जो कंपनी बाग़ के पास है, और हरभोला की कुइयाँ से जो कटघर के क़रीब है लाया करते थे। अक्सर ऐसा हुआ है कि किसी ने रास्ते में पानी पीने को मांगा तो उसको निहायत खुशी से पानी पिला दिया और चूँकि बाक़ी मांदा[१] पानी क़ाबिल सेवा हुज़ूर स्वामीजी महाराज के नहीं समझा तो फिर वापस जाकर दूसरा घड़ा भरकर हुज़ूर स्वामीजी

१ - जूठा।

महाराज के वास्ते ले आये। एक मर्तबा ऐसा हुआ कि घड़ा पानी का भरकर ला रहे थे और रास्ते में घड़ा टूट गया। उस वक़्त पैसा पास न था तो हुज़ूर महाराज साहब ने एक कुम्हार के यहाँ जो कि नावाक़िफ़ था तिरपौलिया से दूसरा घड़ा ख़रीदा और बिल्-एवज़ क़ीमत के अपनी चादर जो उस वक़्त ओढ़े थे उसके पास गिरवी रख दी। और फिर मीठे कुएं से पानी भरकर वास्ते सेवा हुज़ूर स्वामीजी महाराज के लाये। फिर दूसरे रोज़ पैसे देकर अपनी चादर वापस ले ली।

४१ - हुज़ूर महाराज साहब चरनामृत परशादी मुखामृत व पीकदान का अमृत हुज़ूर स्वामीजी महाराज साहब का गुरु भाव से रोज़ाना लेते थे। चूंकि हुज़ूर महाराज साहब खत्री थे इसलिये शहर में आम तौर से और कायस्थों में ख़ास तौर से इस बात का बड़ा शोहरा था और बतौर निंदा के हर घर में और ख़ासकर रिश्तेदारों में रोज़मर्रा इसकी चर्चा होती थी।

४२ - हुजूर स्वामीजी महाराज ने पहले राधास्वामी नाम प्रगट नहीं किया था। सिर्फ़ सत्तनाम

अनामी तक का भेद और उसी का उपदेश फ़रमाते थे जैसा कि पिछले सन्तों के वक़्त में था। हुज़ूर महाराज साहब ने जब सुरत शब्द अभ्यास में राधास्वामी नाम की धुन व गाज सबसे ऊँचे स्थान से आती सुनी और वहाँ पहुँचकर राधास्वामी दयाल के स्वरूप और हुज़ूर स्वामीजी महाराज के निज रूप की एकता देखी तब हुज़ूर स्वामीजी महाराज को उसी यानी राधास्वामी नाम से पुकारना शुरू किया। फिर हुज़ूर महाराज साहब की प्रार्थना से राधास्वामी नाम और राधास्वामी धाम का उपदेश व अभ्यास जारी हुआ और राधास्वामी नाम की पुकार व सुमिरन व भजन ज़बान व मन व सुरत से शुरू हो गई, जैसा कि हुज़ूर महाराज साहब ने प्रेमबानी जिल्द तीसरी के शब्द सावन में इन चन्द कड़ियों में खुद फ़रमाया है-

ढूँढत ढूँढत बन बन डोली।
तब राधास्वामी की सुन पाई बोली।।
प्रीतम प्यारे का दिया सन्देशा।
शब्द पकड़ जाओ उस देशा।।
कर सतसंग खुले हिये नैना।
प्रीतम प्यारे के सुने वहीं बैना।।
जब पहिचान मेहर से पाई।
प्रीतम आप गुरू बन आई।।

हुज़ूर स्वामीजी महाराज साहब ने भी आख़िरी वक़्त के बचनों में क़ब्ल चोला छोड़ने के बचन नम्बर १३ व १४ में जो कि सवानह-उमरी हुज़ूर स्वामीजी महाराज साहब में छपे हैं, बाज़ सतसंगियों के इस एतराज़ पर कि हुज़ूर स्वामीजी महाराज साहब ने उनको उपदेश सत्तनाम और अनामी का दिया था और राधास्वामी नाम पीछे हुज़ूर महाराज साहब ने ईजाद कर दिया है, वह राधास्वामी नाम को नहीं मानना चाहते हैं, फ़रमाया है और जिसकी नक़ल ज़ैल में दर्ज की जाती है-

''बचन नम्बर १३-फिर सुदर्शनसिंह ने पूछा कि जो कुछ पूछना होवे तो किस से पूछें? उस पर फ़रमाया कि जिस किसी को पूछना होवे वह सालिगराम (हुज़ूर महाराज साहब) से पूछें।''

''बचन नम्बर १४-फिर लाला प्रतापसिंह की तरफ़ मुतवज्जह हो कर फ़रमाया कि मेरा मत तो सत्तनाम और अनामी का था। राधास्वामी मत सालिगराम (हुज़ूर महाराज साहब) का चलाया हुआ है इसको भी चलने देना। और सतसंग जारी रहे और सतसंग आगे से बढ़कर होगा।''

४३ - एक मर्तबा हुज़ूर स्वामीजी महाराज फ़ैज़ाबाद को मय चन्द साधुओं व सतसंगियों के तशरीफ़ ले गये थे। वहाँ से एक रोज़ ब-सवारी पालकी अयोध्या को जो पांच मील के फ़ासले पर है तशरीफ़ ले गये थे। और साधू व सतसंगी भी पैदल हमराह पालकी गये थे। मगर उनमें से सिर्फ़ हुज़ूर महाराज साहब व बाबू जीवनलाल साहब और कन्हैय्या सीतलावाला पालकी के हमराह अयोध्या तक पहुँचे। बाक़ी सतसंगी व साधू पालकी के साथ न दौड़ सके और थककर पीछे रह गये। वापसी के वक़्त भी बिना खाना खाये हुए जब शाम को लौटे तो सिर्फ़ हुज़ूर महाराज साहब व बाबू जीवनलाल साहब पालकी के हमराह फ़ैज़ाबाद पहुँचे और बाक़ी सब पीछे से आये।

४४ - एक मर्तबा हुज़ूर स्वामीजी महाराज साहब हाथरस को तशरीफ़ ले गये। आगरा से मैंडू यानी हाथरस जंक्शन तक ब-सवारी रेल और वहाँ से हाथरस तक पैदल जाना पड़ा क्योंकि मैंडू स्टेशन पर कोई सवारी नहीं मिली। उस वक़्त हुज़ूर स्वामीजी महाराज के हम-रकाब चन्द सतसंगी

और सतसंगिन व साधू थे। हुज़ूर महाराज साहब व दीगर सेवक हुज़ूर स्वामीजी महाराज साहब को अपनी चड्ढी और कन्धों पर सवार कराके ले चले मगर ब-वजह शिद्दत धूप व गर्मी व गरम रेत व ना-हमवार[१] रास्ते के सब सेवक थोड़ी ही दूर में थककर पीछे रह गये। सिर्फ़ हुज़ूर महाराज साहब व बाबू जीवनलाल साहब व कन्हैय्या सीतलावाला बारी-बारी अपनी चड्ढियों पर सवार कराकर हाथरस तक पहुँचे।

४५ - हुज़ूर महाराज साहब की बिरादरी वालों को जब मालूम हुआ कि वे हुज़ूर स्वामीजी महाराज साहब के पास जाकर उनका मुखामृत, परशादी व चरनामृत खाते पीते हैं तो उन्होंने एक कमेटी इस ग़रज़ से करनी चाही कि हुज़ूर महाराज साहब को बिरादरी से ख़ारिज कर दें। मगर मौज से सरगिरोह[२] कमेटी के पोते से ऐसी नाशाइस्ता हरकत सरज़द[३] हुई कि जिससे सरगिरोह कमेटी बहुत नादिम[४] व पशेमान हुए और ख़ौफ़ पैदा हुआ कि वे खुद

१ - ऊँचा नीचा। २ - मुखिया। ३ - बेजा कार्रवाई बन गई। ४ - शरमिन्दा।

बिरादरी से कहीं ख़ारिज न कर दिये जावें। पस कमेटी करने की हिम्मत न पड़ी।

४६ - सन १८६१ ई. में हुज़ूर महाराज साहब ने हस्बुल हुक्म डायरेक्टर जनरल साहिब किताब क़वायद डाकख़ानाजात का तर्जुमा उर्दू में वास्ते मग़रबी व शुमाली व पंजाब के डाकख़ानाजात के अहलकारों[1] की आसानी और फ़ायदे की ग़रज़ से किया।

४७ - डाक्टर पाटन साहिब ने, जो पोस्ट मास्टर जनरल मुमालिक मग़रबी व शुमाली के थे और हुज़ूर महाराज साहब की कारगुज़ारियों से निहायत ख़ुश थे और हुज़ूर महाराज साहब के साथ निहायत उन्सियत रखते थे, एक मर्तबा हुज़ूर महाराज साहब से दरियाफ़्त किया कि वे क्या सिफ़ारिश हुज़ूर महाराज साहब के वास्ते करें। हुजूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि सिर्फ़ आपकी नज़र इनायत काफ़ी है। उस पर डाक्टर पाटन साहिब ने एक घड़ी सोने की विलायत से अपना और हुज़ूर महाराज साहब का नाम कन्दा कराके

१ - नौकरों।

मँगवाई और मुमालिक मग़रबी व शुमाली से जाने के वक़्त हुज़ूर महाराज साहब को पेश कर के फ़रमाया कि यह हमारी दोस्ताना यादगार है इसको मंज़ूर कीजिये।

४८ - सरकारी चिट्ठियों के वास्ते जो डिस्ट्रिक्ट पोस्ट पहले अलहदा थी उसको हुज़ूर महाराज साहब ने जबकि इन्सपेक्टिंग पोस्ट मास्टर (सुपरिटेन्डेन्ट) आगरा डिवीज़न के थे जनरल डिपार्टमेन्ट पोस्ट आफ़िस से मिला दिया। और उसके इन्तज़ाम के वास्ते जो क़वायद व नक़्शाजात दरकार थे हुज़ूर महाराज साहब ने ईज़ाद[1] किये और अव्वल इस कार्रवाई को आगरा डिवीज़न में बतौर इम्तहान जारी किया, बाद उसके कुल मुमालिक मग़रबी व शुमाली में।

४९ - महकमा डाकख़ाना में सन् १८५२ ई. से सन् १८८६ ई. तक यानी हुज़ूर महाराज साहब के दौरे हुकूमत में बहुत सी तरक़्क़ियाँ हुईं। मसलन इजराय मनीआर्डर व मनीआर्डर लगान व मालगुज़ारी व सेविंग बैंक और काम तारघर का और पार्सल बीमा व क़ीमत तलब व ईज़ाद[1] पोस्टकार्ड व कमी

१ - आविष्कार

महसूल चिट्ठियात व पार्सल वग़ैरा। इन सबके क़वायद के मसौदे व नक़्शाज़ात अव्वल हुज़ूर महाराज साहब ने बनाये और बाद में हर मामले में हुज़ूर महाराज साहब से मशवरा[१] लिया जाता था।

५० - हुज़ूर महाराज साहब जब डाकख़ानों के मुलाहज़ा[२] के वास्ते तशरीफ़ ले जाते थे तो हर किताब का मुलाहज़ा फ़रमाते थे। जब किताब को खोलते थे तो उसका वही सफ़ा कि जिसमें कुछ ग़लती हो निकलता था। इसी तरह से जिस फ़ाइल में कोई ग़लती होती थी उसी फ़ाइल का नाम लेकर निकलवाते थे और मातहतों की फ़हमाइश और तम्बीह कर दिया करते थे और कभी २ रहमदिली के साथ सज़ा भी दे देते थे।

५१ - सन् १८६८ ई. में हुज़ूर महाराज साहब ब-ओहदा इन्सपेक्टर जायद यानी पर्सनल असिस्टन्ट पोस्ट मास्टर जनरल मुमताज़[३] हुए। उस वक़्त में बहुत से मुक़द्दमात तग़ल्लुब व चोरी पार्सल वग़ैरा के कि जिनका पता बावजूद मज़ीद[४] तहक़ीक़ात अफ़सरों के नहीं चला था हुज़ूर महाराज साहब के

१ - सलाह। २ - जाँच। ३ - मुक़र्रर। ४ - गहिरी।

सुपुर्द किये गये। हुज़ूर महाराज साहब ने उनकी इस तरह तहक़ीक़ात की, कि जिससे माल बरामद हो गया और असली मुलज़िमान गिरफ़्तार होकर सज़ायाब हो गए।

५२ - जब सन् १८६८ ई. में मेरी हमशीरा कलां[3] की शादी बाबू राजनरायन साहब के साथ होने वाली थी, बिरादरीवालों ने सलाह दी कि कोई शादी में शामिल न हों। मौज से उसी ऐयाम में हुज़ूर महाराज साहब क़रीब दो माह के वास्ते इन्चार्ज पोस्ट मास्टर जनरल सूबा मुमालिक मग़रबी व शुमाली आगरा में हो गये। चूँकि बहुत से बिरादरीवाले उस दफ़्तर व डाकख़ानाज़ात में मुलाज़िम थे, खुद हुज़ूर महाराज साहब की ख़िदमत में आये और अर्ज़ की कि कोई ख़िदमत इस शादी में उनसे ली जावे। इस सबब से और भी सब बिरादरीवाले शामिल हुए और बिरादरी का हुजूम शादी में बहुत अच्छा हो गया।

५३ - एक बहुत बड़ा मुक़द्दमा हुंडियों के चोरी जाने का ज़ेर तहक़ीक़ात था और दो साल से बराबर हुक्काम डाकख़ाना और पुलिस उसकी

१ - बहिन।

तहक़ीक़ात कर रहे थे। मगर कोई सुराग़ उसका नहीं मिला। आख़िर यह तहक़ीक़ात हुज़ूर महाराज साहब के सुपुर्द की गई कि वह उसका पता लगावें। हुज़ूर महाराज साहब ने इंदौर व नीमच मौक़े पर तशरीफ़ ले जाकर इस तौर से तहक़ीक़ात की कि मुल्ज़िमों का पता कालपी की सराय में मिल गया, और वहीं उनको बज़रिये तार के गिरफ़्तार करा लिया। उन पर मुक़द्दमा साबित हो गया और माल मसरूक़ा[१] का भी पता लग गया और मुल्ज़िमान सज़ायाब हुए।

५४ - हुज़ूर महाराज साहब को ब-तारीख़ ३१ अगस्त सन् १८७१ ई. ख़िताब राय बहादूर का बजिल्दूय[२] ख़िदमात पसंदीदा के पेशगाह[३] गवर्नमेंट हिन्द से अता हुआ।

५५ - एक मर्तबा हुज़ूर महाराज साहब इलाहाबाद से वास्ते तहक़ीक़ात के मुक़ाम औरई तशरीफ़ ले गये थे। बाद इख़्तिताम[४] काम जबकि इलाहाबाद वापस जाने के थे कि यकायक इरादा

१ - चोरी का। २ - एवज़। ३ - दरबार।
४ - पूरा होने।

छः बजे शाम के यह हुआ कि दूसरे रोज़ आगरा में जाकर स्वामीजी महाराज के दर्शन करके इलाहाबाद जावें। उस वक़्त लाला शम्भूनाथ सुपरिन्टेन्डेन्ट डाकख़ानाज़ात झाँसी डिवीज़न भी वहाँ मौजूद थे। उन्होंने कहा कि फफूँद रेल्वे स्टेशन यहाँ से साठ-सत्तर मील के फ़ासले पर है और आठ बजे सुबह रेलगाड़ी फफूँद आती है, किसी सूरत से आप नहीं पहुँच सकते। हुज़ूर महाराज साहब ने अपने मुलाज़िम भवानी को हुक्म दिया कि फ़ौरन कहारों का इन्तज़ाम करो। मुताबिक हुक्म के इन्तज़ाम हो गया।

बरवक़्त सवार होने के कहारान पालकी से फ़रमाया कि अगर जालौन एक घन्टे मे पहुँचा दोगे तो हम तुमको इनाम देंगे। उन्होंने हाथ जोड़कर अर्ज़ किया कि अगर आप ताकत बख़्शेंगे तो ऐसा हो सकता है, वरना हम एक घन्टे में नहीं पहुँचा सकते। ठीक सात बजे शाम को घड़ी देखकर सवार हुए, और आठ बजे रात को जालौन आ गये। साढे आठ बजे जालौन से सवार हुए। रास्ते में बड़े ज़ोर की आँधी आई और पानी भी ज़ोर से

बरसा। कहारों ने अर्ज़ किया कि आप ऐसी दया करें कि पानी-आँधी बंद हो जावे क्योंकि ऐसी हालत में हम चल नहीं सकते हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि अगर राधास्वामी दयाल की मौज होगी तो पानी बंद हो जावेगा। बाद पंद्रह मिनट के पानी और आँधी बंद हो गये।

रास्ते में एक नदी थी और उसमें बज़रिये घन्नाई पार उतरते थे। हुज़ूर महाराज साहब ने भवानी को हुक्म दिया कि पेश्तर पालकी को मय कुल असबाब व कहारों के पार उतरवा दो। हम और तुम दूसरे चक्कर में चलेंगे। पालकी में हुक़्क़ा और मनीबैग कि जिसमे नोट और रुपये थे रखा हुआ था। बीच नदी में जब घन्नाई पहुँची तो पालकी उलट गई और कहारों को भी ख़ौफ़ डूबने का हुआ। इस पार से हुज़ूर महाराज साहब मुस्कुराये और ब-आवाज़ बुलन्द फ़रमाया कि घबराओ मत, कोई डूबेगा नहीं। पालकी ज़रा-सा सहारा देने से सीधी हो गई, और कहार भी डूबने से बच गये और पार उतर गये।

बाद इसके हुज़ूर महाराज साहब भी घन्नाई

पर सवार होकर मय मुलाज़िम मज़कूर के उस पार आ गये, तो कहारों ने शिकायत की कि हमारे कपड़े सब बह गये। भवानी ने अर्ज़ की कि हुक़्क़ा और मनीबैग भी बह गया। हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि पानी में किनारे पर तलाश करो। इस पर घुटने २ पानी में तलाश करने से मनीबैग, हुक़्क़ा व कपड़े सब मिल गये और नोट पानी से भीगे नहीं। इसमें तीन घन्टे का अर्सा लग गया। भवानी के दरियाफ़्त करने पर हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि मौज ऐसी ही थी। फिर हुज़ूर महाराज साहब ने हुक्म दिया कि अब जल्दी चलो।

वहाँ से रवाना होकर औरइया में आये तो कहारों ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर की इज़ाजत हो तो ज़रा दम ले लें, बहुत सफ़र किया है। उस वक़्त सुबह के सात बजे थे और फफूँद रेल्वे स्टेशन वहाँ से १२ मील बाक़ी रह गया था। मुलाज़िम मज़कूर ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर शायद न पहुँच सकें। फ़रमाया कि मौज होगी तो पहुँच ही जावेंगे। औरइया से रवाना होकर स्टेशन फफूँद पर पहुँचे,

और रेलगाड़ी उसी वक़्त स्टेशन पर आई। कहारान पालकी को माकूल इनाम देकर ख़ुश कर दिया, और फ़ौरन रेल में सवार होकर आगरा तशरीफ़ ले आये।

५६ - एक मर्तबा हुज़ूर महाराज साहब गोरखपुर से बिनाबर दौरा ग़ाज़ीपुर जाने को गाड़ी में सवार हुए। कोच बक्स पर कोचमैन और ठेकेदार बैठे थे और छत पर भवानी मुलाज़िम और एक चपरासी अर्दली बैठा था। उसी पर एक बक्स डाक का चार-पांच मन का रखा हुआ था। रास्ते में एक पुल नदी का आया कि जिसके घाट पर उतरते वक़्त जबकि गाड़ी जोर से जा रही थी बम टूट गई। गाड़ी उलट गई मगर घोड़े चुपचाप खड़े रहे और गड़बड़ नहीं की। मुलाज़िम मज़कूर और चपरासी दूर जाकर गिरे। भवानी दौड़कर आया। उसको देखकर हुज़ूर महाराज साहब हँस दिये और गाड़ी से बाहर तशरीफ़ ले आये। फिर गाड़ी लोगों ने सीधी कर दी। मुलज़िमान से दरियाफ़्त किया कि तुम लोगों के चोट तो नहीं लगी? उन्होंने जवाब दिया कि नहीं। फिर ठेकेदार ने अर्ज़ किया कि

बम टूट गई है। इस पर फ़रमाया कि इधर-उधर कोई झोपड़ी हो तो बाँस ले आओ। तलाश करने से क़रीब ही एक झोपड़ी मिल गई। उसमें एक मोटा बाँस लगा हुआ था। उसको ले आये, और बजाय बम के उसको बाँध दिया, और ग़ाज़ीपुर आराम से पहुँच गये।

५७ - एक दफ़ा का ज़िक्र है कि हुज़ूर स्वामीजी महाराज दिशा जाने के वास्ते तैयार थे। उस वक़्त दो-तीन साधू और सतसंगिन और हुज़ूर महाराज साहब मौजूद थे। हुज़ूर स्वामीजी महाराज ने फ़रमाया कि कौन बहुत जल्दी हुक़्क़ा भरकर पिलाता है? यह सुनते ही हुज़ूर महाराज साहब हुक़्क़े पर से चिलम उतारकर, और दूसरा साधू एक चिलम जो नज़दीक रखी हुई थी लेकर, दौड़े। साधू ज़ीने के रास्ते से उतरा, और हुज़ूर महाराज साहब चिलम लिये हुए कमरे के छज्जे पर आकर नीचे सहन में जो तीन-चार गज़ नीचा है, कूद पड़े। जब तक वह साधू ज़ीने से उतरकर बाहर गया, हुज़ूर महाराज साहब ने बाहर एक सुनार की दुकान से कुछ उसको देकर आग बहम[1] पहुँचाई

१ - ले ली।

और चिलम भरकर बहुत जल्द हुक़्क़े पर लाकर रख दी।

५८ - एक मर्तबा हुज़ूर महाराज साहब झाँसी से ग्वालियर ब-सवारी पालकी दौरे में तशरीफ़ ले गये। शिद्दत[१] धूप की हुई, और रास्ता ऐसा था कि दरख़्त वग़ैरा नहीं थे और कुआँ पांच कोस के फ़ासले पर था। कुछ दूर चलकर पालकी के कहार शिद्दत धूप से घबरा गये और प्यास भी लगी। कहने लगे कि अब हम नहीं चल सकते और पालकी भी मिस्ल आतशक़दा[२] के गर्म हो गई। हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि कहीं दरख़्त के नीचे ठहर जाओ। कहारों ने अर्ज़ किया कि दरख़्त दूर तक नज़र नहीं आता और दरियाफ़्त करने पर मालूम हुआ कि कुआँ भी कई कोस के फ़ासले पर है। कहारों को बड़ी परेशानी हुई। इतने में मौज से यकायक ठन्डी हवा चलने लगी और अब्रर[३] हो गया। कहारों ने अर्ज़ किया कि अब ठहरने की ज़रूरत नहीं है, मंज़िल पर पहुँचकर ही ठहरेंगे।

१ - तेज़ी। २ - भाड़। ३ - बादल।

५९ - एक मर्तबा हुज़ूर महाराज साहब झाँसी दौरे पर तशरीफ़ ले गये और जो रुपया पास था वह वहाँ इत्तफ़ाक़िया सब ख़र्च हो गया। झाँसी से आगरा जाने को तैयार थे मगर उस वक़्त रुपया पास न था। अगर्चे रुपया वहाँ के पोस्ट मास्टर से मिल सकता था मगर आपने उनसे लेना नहीं चाहा। इसी ख़्याल में टहल रहे थे कि उसी वक़्त बीस-पच्चीस सिक्ख सिपाही फ़ौज के, जो सतसंगी थे, हुज़ूर महाराज साहब से मिलने के वास्ते आये, और हर एक ने एक-एक दो-दो रुपये हुज़ूर स्वामीजी महाराज की भेंट के वास्ते पेश किये। इस तौर से तीस-पैतींस रुपये हुज़ूर महाराज साहब के पास आ गये। उससे ख़र्च सफ़र का चल गया और आगरा तशरीफ़ लाने पर उन सबका नज़राना मय अपनी तरफ से शुकराने के भेंट कर दिया।

६० - एक मर्तबा हुज़ूर महाराज साहब, हुज़ूर स्वामीजी महाराज के सतसंग से नीची निगाह किये हुए हस्ब[1] मामूल आ रहे थे। सामने से एक सांड़ आता था, आपने उसको नहीं देखा। मगर

१ - मुवाफिक़।

जब क़रीब आये वह ख़ुद ही हटकर एक किनारे हो गया।

६१ - हुज़ूर महाराज साहब, हुज़ूर स्वामीजी महाराज के सतसंग से तीन-चार बजे रात के वापस तशरीफ़ लाया करते थे। ऐयाम बरसात में अक्सर ऐसा मौक़ा होता था कि बादल उँमड़े रहते थे, और गरजते रहते थे। मगर जब हुज़ूर महाराज साहब मकान पर तशरीफ़ लाकर आराम फ़रमाते थे उस वक़्त पानी बरसता था। एक-दो मर्तबा ऐसा भी हुआ कि क़रीब खत्म होने सतसंग के पानी ज़ोर से बरसा और दस-पांच मिनिट बरस कर बंद हो गया। इसी अर्से में नाला भी जो मकान के रास्ते में पड़ता था, चढ़ा और हुज़ूर महाराज साहब के तशरीफ़ लाने तक नाला उतरकर रास्ता साफ़ हो गया।

६२ - अप्रैल सन् १८७५ ई. को ब-इज़ाफ़[1] सौ रुपया ब-तनख़्वाह छः सौ रुपया माहवार हुज़ूर महाराज साहब ब-ओहदा चीफ़ इन्सपेक्टर अवध मुमताज़[2] हुए। राय बिन्द्राबन साहब बिरादर ख़ुर्द[3]

१ - तरक़्क़ी। २ - मुक़र्रर। ३ - छोटे भाई।

हुज़ूर स्वामीजी महाराज साहब जो उस वक़्त लखनऊ के पोस्ट मास्टर थे हुज़ूर महाराज साहब के पास आते रहते थे। एक रोज़ हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि क़हत[1] का बड़ा ज़ोर हो रहा है, बारिश नहीं होती। हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि आप और मै हुज़ूर राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रार्थना करें। उसके थोड़ी देर बाद चारों तरफ़ घटा छा गई। चार घंटे तक बड़ी ज़ोर से बारिश हुई और क़हत रफ़ा हो गया।

६३ - हुज़ूर महाराज साहब ब-वजह दूरी हुज़ूर स्वामीजी महाराज साहब, चीफ़ इन्सपेक्ट्री लखनऊ की नापसंद फ़रमाते थे। इसलिये जुलाई १८७६ ई. में कोशिश फ़रमा कर ब-कमी तनख़्वाह सौ रुपया माहवार ओहदा सुपरिन्टेन्डेन्टी आगरा डिवीज़न पर वापस तशरीफ़ ले आये। यही बस न था बल्कि ओहदा कन्ट्रोलरी कुल डाकख़ानाजात हिंद से ब-मुक़ाम कलकत्ता जिसका मुशाहरा[2] छः सौ रुपये से एक हजार रुपये माहवार था इन्कार कर दिया, और अफ़सरों से साफ़ कह दिया कि गुरु महाराज

१ - अकाल। २ - तनख़्वाह।

को छोड़कर परदेस की नौकरी नहीं चाहता हूँ।

६४ - मेरे छोटे भाई द्वारकाप्रसाद का ब-उम्र आठ साल सन् १८७७ ई. में इन्तक़ाल[१] हुआ। बाद कार्रवाई मामूली तजहीज़ व तकफ़ीन[२] के हुज़ूर महाराज साहब मगन व मसरुर हालत में शाम के वक़्त हुज़ूर स्वामीजी महाराज की ख़िदमत में तशरीफ़ ले गये। उस वक़्त हुज़ूर स्वामीजी महाराज को उदास देखकर सबब दरियाफ़्त किया, तो उन्होंने फ़रमाया कि तुम्हारे लड़के के इन्तक़ाल की वजह से उदासी है। हुज़ूर महाराज साहब ने ब-जवाब उसके अर्ज़ किया कि मुझको कुछ ख़्याल व रंज उसका नहीं है। यह सुनकर हुज़ूर स्वामीजी महाराज ने फ़रमाया कि अगर तुमको कुछ ख़्याल व रंज नही है तो मुझको भी कुछ नहीं है। तुम्हारी वजह से उदासी थी, और चेहरे से उदासी दूर हो गई।

साहबज़ादे मौसूफ़ की मुफ़ारक़त[३] का उनकी माताजी साहिबा, दादीजी साहिबा व हमशीरा[४]

१ - देह त्याग। २ - दाह कर्म। ३ - जुदाई।
४ - बहिनों।

साहबाओं को कमाल[१] रंज था। उसी हालत रंज में बड़ी हमशीरा साहबा की हालत समाधि की तरह हो गई, और उस हालत में साहबज़ादा मौसूफ़ ने नूरानी[२] सूरत से ब-सवारी हाथी दर्शन देकर कहा कि मुझको तुम्हारे रंज से नीचे उतरना पड़ा है जिससे मुझको तकलीफ़ हुई। मैं शब्द गुरु की गोद में खेल रहा हूं। उस वक़्त से सबको तसकीन[३] हो गई, और फिर कभी सूरत रंज की पैदा न हुई और न ख़्याल हुआ।

और शब्द गुरु किसको कहते हैं यह उस वक़्त तक हमशीरा साहबा कलां को मालूम भी न था। हुज़ूर महाराज साहब से दरियाफ़्त किया तब फ़रमाया कि राधास्वामी दयाल ही शब्द गुरु हैं।

६५ - सन् १८७६ ई. में हुज़ूर महाराज साहब ने ब-मूजिब इरशाद[४] हुज़ूर स्वामीजी महाराज के एक किता ज़मीन पसंदीदा[५] को अपनी ज़ाती आमदनी से ख़रीदा और उसमें बाग़ लगाया। और मकानात तामीर कराके हुज़ूर स्वामीजी महाराज

१ - बहुत। २ - प्रकाशवान। ३ - ढाढ़स। ४ - हुक्म। ५ - पसंद की हुई।

की भेंट कर दिया, जो राधास्वामी बाग़ के नाम से मशहूर है, और जिसमें कि अब समाध हुज़ूर स्वामीजी महाराज साहब की मौजूद है।

६६ - एक मर्तबा हुज़ूर महाराज साहब महाबन से वृंदावन ब-तक़रीब दौरा गाड़ी में सवार होकर तशरीफ़ ले जा रहे थे। रास्ते में एक पुल जमुना का था। घोड़े चौंके और दरिया की तरफ़ को चले। लगता था कि गाड़ी दरिया में गिर पड़ेगी, मगर मौज से पहिया गाड़ी का पुल की एक खूँटी में अटक गया जिसकी वजह से गाड़ी गिरने से रुक गई। कुल सामान गाड़ी का नीचे गिर पड़ा, मगर हुज़ूर महाराज साहब ब-दस्तूर गाड़ी में बैठे रहे। फ़ौरन मल्लाह वग़ैरा जो पुल पर मौजूद थे, दौड़े। गाड़ी और घोड़ों को सम्हाला और हुज़ूर महाराज साहब को गाड़ी खोलकर उतार लिया। हुज़ूर महाराज साहब के मुतलक़ चोट नहीं आई। दूसरी तरफ़ से तहसीलदार महाबन जो हुज़ूर महाराज साहब को जानते थे, अपनी गाड़ी में आ रहे थे और देख रहे थे कि गाड़ी पानी में गिरा चाहती है, हुज़ूर महाराज साहब के पास आये और उनको

अपनी गाड़ी में सवार कराकर ले गये और रास्ते में उनके साथ परमार्थी गुफ़्तगू[1] होती रही।

६७ - अर्सा दो बरस से हुज़ूर स्वामीजी महाराज साहब की मौज चोला छोड़ने की थी और इस वास्ते बीमारी भी पैदा करली कि अच्छे २ हकीमों और डाक्टरों की अक़्ल हैरान थी। मगर जिन २ से कुछ सेवा लेनी मंज़ूर थी उनका इलाज जारी रखा और हुज़ूर महाराज साहब की अर्ज़ से जो वक़्तन्-फ़वक़्तन् होती रहती थी, चोला त्याग नहीं फरमाया। आख़िरकार हुज़ूर महाराज साहब से हुज़ूर स्वामीजी महाराज साहब ने फ़रमाया कि अब चोला बहुत जर्जर हो गया है और हम इस चोले में अब ज़्यादा ठहरना पसंद नहीं करते हैं। तुम्हारी अर्ज़ से इतने अर्से तक ठहरे और तुम्हारी अर्ज़ को नामंज़ूर करना हमको गवारा नहीं है इस वास्ते अब तुम ऐसी अर्ज़ मत करना। उसके दस-पन्द्रह रोज़ बाद ही आषाढ़ बदी १ पड़वा सम्वत् १९३५ विक्रमी मुताबिक १५ जून सन् १८७८ ई. को क़रीब दो बजे दोपहर के वक़्त हुज़ूर

१ - बातचीत।

महाराज साहब और और सतसंगी और सतसंगिनों से आरती कराकर हुज़ूर स्वामीजी महाराज ने चोला छोड़ दिया और राधास्वामी धाम को तशरीफ़ ले गये। हुज़ूर महाराज साहब ने हुज़ूर स्वामीजी महाराज साहब की समाध राधास्वामी बाग़ में तामीर कराई और उसी जगह सालाना भंडारा आषाढ़ बदी पड़वा को करना जारी फ़रमाया।

६८ - क़रीब बीस बरस हुज़ूर महाराज साहब ने हुज़ूर स्वामीजी महाराज का सतसंग शबाना रोज़[1] आठ से अट्ठाराह घंटे तक किया, और सेवा तन, मन, धन की ऐसी की कि इन्सानी ताक़त से बाहर है।

६९ - सन् १८७९ ई. में हुज़ूर महाराज साहब की माताजी साहिबा ने मगन व मसरूर हालत में धीरज और शांती के साथ चोला छोड़ा और परम धाम को सिधारीं। चूँकि हुज़ूर महाराज साहब ने जबसे हुज़ूर स्वामीजी महाराज साहब की सेवा में जाना शुरू किया, बिरादरी में जाना और खाना-पीना बंद कर दिया था, इस मौक़े पर बिरादरीवालों ने

१ - रात दिन।

सलाह की कि कोई न जावे। देखें कौन हुज़ूर महाराज साहब की माताजी महारानी के चोले को उठाता है? हुज़ूर महाराज साहब ने हस्ब क़ायदा व रिवाज़ कुल बिरादरी में और राधास्वामी बाग में इत्तिला कर दी। राधास्वामी बाग़ से सब साधू और चंद सतसंगी शहर के फ़ौरन चले आये। उनको आते देखकर बिरादरीवाले शरमाये और खुद ही आ गये।

७० - हुज़ूर महाराज साहब ने बाद चोला छोड़ने हुज़ूर स्वामीजी महाराज साहब के सतसंग बिरादराना[१] बर्ताव के साथ शुरु में क़रीब तीन साल तक रोज़ाना पन्नी गली और हफ़्तावार राधास्वामी बाग़ में जारी रखा और तमाम इख़राजात[२] राधास्वामी बाग़ व राधाबाग़ व ख़र्च ख़ुरोनोश[३] साधुओं का ब-दस्तूर अपनी तनख़्वाह से जैसाकि हुज़ूर स्वामीजी महाराज साहब के वक़्त से चला आता था जारी रखा। पेन्शन लेने पर भी उसमें किसी क़िस्म की कमी नहीं की। अपने बचन पुरअसर[४] से ऐसे नाज़ुक वक़्त में जबकि आम तौर

१ भाईचारा। २ - ख़र्च। ३ - खान पान।
४ - फलदायक।

पर सेवकों को रंज मुफ़ाक़त[1] ज़ाहिरी स्वरूप हुज़ूर स्वामीजी महाराज साहब का था, सबको धीरज और दिलासा बख्शते रहे, और किसी को बर्ताव गुरु भाव का अपने साथ नहीं करने दिया। जनाबा राधाजी साहिबा व छोटी माताजी साहिबा की पूजा और सेवा ख़ुद की ओर से सबसे कराई, और कुल ख़ानदान हुज़ूर स्वामीजी महाराज साहब की ताज़ीम[2] और ख़ातिरदारी ब-दस्तूर जारी रखी। बराबर आख़िरी वक़्त अपना चोला क़ायम रखने तक इन कार्रवाइयों को निहायत ख़ुशी और उमंग के साथ ख़ुद करते रहे और सबको भी ऐसी ही हिदायत फ़रमाते रहे। जैसा बाना हुज़ूर महाराज साहब ने शुरू से धारण किया उसको पूरे तौर से निबाहकर दिखला दिया बल्कि उसमें तरक़्क़ी ही होती रही और इन मसलों[3] को सच्चा कर दिखाया।

''आब आँच सहना सुगम सुगम खड्ग की धार।
नेह निबाहन एक रस महा कठिन ब्यौहार।।''
''जैसी लौ पहिले लगी तैसी निबहे और।
अपनी देह की को गिने तारे पुर्ष करोड़।।''

७१ - चूँकि हुज़ूर स्वामीजी महाराज साहब की

१ - जुदाई। २ - आदर सन्मान। ३ - कहावत।

मौजूदगी में हुज़ूर महाराज साहब ने सेवा व सतसंग हुज़ूर स्वामीजी महाराज साहब को मुक़द्दम[1] समझ कर ब-तरक़्क़ी तनख़्वाह व ओहदा आगरा से बाहर जाने को इन्कार फ़रमाया था, अफ़सरों ने ख़ातिर हुज़ूर महाराज साहब के उस इन्कार को मंज़ूर कर लिया था। मगर बाद निज धाम को तशरीफ़ ले जाने हुज़ूर स्वामीजी महाराज साहब के, अफ़सरों ने कहा कि जब आपके गुरु साहब ने चोला त्याग कर दिया है तो अब आगरा से बाहर किसी माकूल[2] जगह पर जाने से इन्कार करने की कोई वजह नहीं है। जो जगह माकूल अब आइन्दा आपको दी जावे उससे इन्कार न फ़रमाइयेगा। चुनाँचे डायरेक्टर जनरल साहब ने हुज़ूर महाराज साहब को पोस्ट मास्टर जनरल मुमालिक मग़रबी व शुमाली जिसका सदर दफ़्तर उस वक़्त इलाहाबाद था २८ अप्रैल सन् १८८१ ई. को मुक़र्रर फ़रमाया, और हुज़ूर महाराज साहब ने चार्ज ओहदा पोस्ट मास्टर जनरल का इलाहाबाद में ले लिया।

१ - सब से बढ़कर। २ - बढ़िया ओहदा।

७२ - सन् १८८१ ई. से १८८४ ई. तक हुज़ूर महाराज साहब का ब-अहिद[1] पोस्ट मास्टर जनरल ज़्यादातर क़याम इलाहाबाद में रहता था और वहाँ और नीज़ दौरा में जहाँ तशरीफ़ ले जाते सतसंग और बचन बराबर फ़रमाया करते थे। और आगरा में भी अक्सर तशरीफ़ लाते थे तब सतसंग और बचन फ़रमाया करते थे। सन् १८८४ ई. से ब-वजह ज़्यादा क़याम होने आगरा में सतसंग बढ़ने लगा, और सेवा भी बाज़ २ सतसंगी और सतसंगिनों की हठ से मंजूर फ़रमाना शुरू किया।

७३ - जनाबा माताजी साहिबा निहायत ख़ुश इख़लाक़[2] व प्रेमिन व रहीम[3] थीं और हुज़ूर महाराज साहब की भक्ति व सेवा तहेदिल व जान से जैसा कि सच्ची पतिव्रता का अंग होता है शुरू से बराबर करती रहीं। आप कुल सतसंगिनों व अज़ीज़ व अक़ारिब[4] पर दया बाहरी व अंतरी फ़रमाती थीं और भक्ति का उपदेश और महिमा सुनाकर भक्ति की तरफ़ तवज्जह दिलाती थीं और हर तरह से जो भक्ति करना चाहते थे उनको मदद और

१ - वक़्त। २ - मिलनसार। ३ - दयालू। ४- रिश्तेदार।

सहारा देती थीं। जनाबा मुअज़्ज़मा[१] मुकर्रम ममदूहा[२] ने २६ फ़रवरी सन् १८८५ ई. को मसरूर व मगन हालत में धीरज और शान्ति के साथ चोला त्याग कर दिया और परम धाम को तशरीफ़ ले गईं। इससे एक घंटा पेश्तर जब साधू और सतसंगियों ने प्रार्थना की कि हमको दर्शन जनाबा माताजी साहिबा की करा दिये जाएं तो हुज़ूर महाराज साहब ने ख़ुद ज़नाना मकान में तशरीफ ले जाकर माताजी साहिबा के दर्शन सबको बुलाकर करा दिये। इस बात को कि माताजी साहिबा माह फ़रवरी में परम धाम को तशरीफ़ ले जावेंगी आठ माह पेश्तर ही हुज़ूर महाराज साहब ने एक सतसंगी से फ़रमा दिया था।

७४ - हुज़ूर महाराज साहब के अहद[३] पोस्ट मास्टर जनरल में एक पंजाबी सतसंगी जो ब-मुक़ाम इलाहाबाद रेल्वे में मुलाज़िम[४] था एक मर्तबा भजन में ऐसा महव[५] हुआ कि उसको अपने काम पर भी जाने का ख़्याल नहीं रहा। जब भजन से उठा तो

१ बुजुर्ग। २ - जिनकी तारीफ ऊपर हो चुकी है।
३ वक़्त। ४ - नौकर। ५ - बेख़बर, बेसुध।

मालूम हुआ कि बहुत ज़्यादा देर हो गई है। घबराक़र फ़ौरन अपने काम पर गया और वहाँ क्लर्कों से कहा कि आज मुझको देर हो गई, मेरा काम किस तरह हुआ? उन्होंने जवाब दिया कि तुम ख़ुद अपना काम कर रहे थे और तुम्हारे दस्तख़त भी मौजूद हैं। यह सुनकर और अपने दस्तख़त देखकर बहुत ही मुतहैयर[१] हुआ। जब शाम को हुज़ूर महाराज साहब की ख़िदमत में दर्शनों के वास्ते हाज़िर हुआ और इज़हार[२] हाल करके शुक्रिया अदा किया तब हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि दया से तुम्हारी रक्षा हो गई। आइन्दा को एहतियात[३] रखना।

७५ - हुज़ूर महाराज साहब की चन्द लईक़[४] और आला[५] दर्जे के यूरोपियन हुक्काम[६] और अफ़सरों से भी परमार्थी गुफ़्तगू हुई, और जब आपने राधास्वामी मत का वर्णन पूरे तौर से अँग्रेज़ी ज़बान में फ़रमाया और उसकी बुज़ुर्गी हर तरह से

१ - अचरज में। २ - हाल बयान करना।
३ - होशियारी व सम्हाल। ४ - विद्यावान ५ - बड़े।
६ - अंग्रेज हाकिमों।

ऐसे २ उम्दा वजूहात मन्तक़ी और फ़लासिफ़ा और साइन्स के देकर साबित की, वे दंग[१] हो गये और उन वजूहात[२] और उनके नतीजों के काटने की कोई दलील पेश न कर सके। बल्कि एक मर्तबा एक अफ़सर आला[३] से जो राधास्वामी मत का बयान हुज़ूर महाराज साहब ने क़रीब डेढ़ घन्टे तक फ़रमाया तो उस वक़्त उस अफ़सर आला की ऐसी हालत हो गई कि वह निहायत ताज़ीम व अदब के साथ खड़ा होकर अर्ज़ करने लगा कि इस वक़्त कुल मालिक आप इस कमरे में मौजूद हैं और गुफ़्तगू उससे कर रहे हैं। तब हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि बेशक कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल हर जगह हाज़िर और नाज़िर हैं, और इस जगह भी मौजूद हैं, मगर मैं तो उनका एक सेवक हूँ। उस वक़्त से वह अफसर आला दिल से हुज़ूर महाराज साहब की ताज़ीम और अदब और निहायत उन्सियत[४] करने लगा, और हुज़ूर महाराज साहब की मेहर व अंतरी दया

१ - अचरज में। २ - बातों। ३ - बड़े हाकिम।
४ - मुहब्बत।

से फ़ैज़याब हुआ। आम तौर से कुल हुक्काम में हुज़ूर महाराज साहब की सच्ची और पूरी भक्ति करने और एक नये आला दर्जे के मज़हब के मूजिद[१] होने का शुहरा[२] था। जिससे एक दफ़ा मुलाक़ात हो जाती और कुछ बातचीत भी होती, वह बड़ी ताज़ीम और ख़ातिर हुज़ूर महाराज साहब की करता था।

७६ - हुज़ूर महाराज साहब ने जून सन् १८८६ ई. में वास्ते तरक़्क़ी काम परमार्थ के डायरेक्टर जनरल साहब से इरादा पेन्शन लेने का ज़ाहिर किया। साहब मौसूफ़ ने ब-ज़रिये तहरीर[३] के हुज़ूर महाराज साहब से दरियाफ़्त किया कि अगर कोई वजह या हरकत[४] किसी हुक्काम की नापसन्दीदा[५] हुई हो तो फ़रमाइये कि उस का इन्तज़ाम माकूल[६] कर दिया जावे। अभी कुछ अर्से और काम कीजिये और इरादा पेन्शन का मुल्तवी[७] कीजिये। इस पर छः माह तक और हुज़ूर महाराज साहब ने काम किया और फिर दरख़्वास्त भेज

१ - आचार्य। २ - महिमा। ३ - चिट्ठी। ४ -कार्रवाई।
५ - बेजा। ६ - पूरा बन्दोबस्त। ७ - रोक दीजिये।

दी। फिर भी डायरेक्टर जनरल साहब ने तहरीर की और एक अपने दफ़्तर के अफ़सर को जो हुज़ूर महाराज साहब के सेवकों में से था, ख़ास तौर पर हुज़ूर महाराज साहब के पास कागज़ात पेन्शन के वापिस करके भेजा, और कहा कि वह साहब ममदूह की जानिब से और नीज़[1] अपनी तरफ़ से अर्ज़ करे कि अभी हुज़ूर महाराज साहब दो बरस तक जब तक कि साहब ममदूह भी ठहरना चाहते हैं पेन्शन न लें। मगर हुज़ूर महाराज साहब ने जीवों के उद्धार के काम को मुक़द्दम जानकर इन्कार किया और फ़रमाया कि १२ फ़रवरी से हम काम नहीं करेंगे, और काग़ज़ात पेन्शन वापस भेज दिये । तब डायरेक्टर जनरल साहब ने चार हज़ार रुपया पेन्शन और एक हज़ार रुपया ब-सिला[2] ख़ैरख़्वाही ग़दर जुमला पांच हज़ार रुपया सालाना के पेन्शन सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट फ़ॉर इन्डिया के यहाँ से ब-ज़रिये जनाब नवाब गवर्नर जनरल साहब बहादुर हिन्द, मंज़ूर करा दी। और हुज़ूर महाराज साहब ने क़रीब चालीस साल मुलाज़मत सरकारी

१ - भी। २ - एवज।

करके ११ फ़रवरी सन् १८८७ ई. को चार्ज अपने ओहदे का दे दिया।

७७ - हुज़ूर महाराज साहब ने बाद लेने पेन्शन के जब सतसंगियों की अफ़ज़ूनी[१] हुई तब ब-मुक़ाम आगरा दायरे दौलत[२] पर ही शबोरोज़[३] का सतसंग आम जारी फ़रमा दिया और हर क़िस्म की सेवा मंज़ूर फ़रमाने लगे।

७८ - जिस वक़्त से कि हुज़ूर महाराज साहब ने पेन्शन ली, गो क़याम आगरा ही में रहा मगर दूर-दूर से संस्कारी जीवों को बाहरी और अंतरी सहारा और दया फ़रमाकर सरन में लेते रहे और ज़रा-सी तवज्जह और दीनता जीवों की आने ही से दया और मेहर से प्रेमदान अपनी तरफ़ से बख़्शिश फ़रमाते थे, और बानी और बचन ऐसे मुवस्सर[४] थे कि जिस खोजी और मुतलाशी ने एक दफ़ा भी सुने गिरवीदा[५] हो गया और जीवों के ऊपर संस्कार का बीजा बराबर पड़ता चला गया। इधर तो बानी और बचन का यह असर था कि

१ - बढ़ोतरी। २ - अपने मकान। ३ - रात दिन।
४ - असर वाले। ५ - आशिक़।

उनको सुनकर जीवों के हृदय में किसी क़दर चाह परमार्थ की पैदा हो ही जाती थी, और उधर जब ज़रा भी चाह और दीनता के साथ जिसने और जहाँ तवज्जह या ख़याल हुज़ूर महाराज साहब की तरफ़ किया, वहीं बिला लिहाज इस बात के कि उसने कभी हुज़ूर महाराज साहब के या उनकी तस्वीर के दर्शन किये हैं या नहीं, अंतरी दर्शन देकर और बचन सुनाकर मगन और मसरूर फ़रमा दिया करते थे। बल्कि जो संशय दिल में पैदा होते बिला उनके इज़हार[१] करने के उनका जवाब भी शाफ़ी[२] चाहे अंतर में या बानी व बचन से या किसी सतसंगी के द्वारे अता[३] फ़रमा देते थे।

और जिस वक़्त सतसंग में या आरती में सतसंगी, सतसंगिन और साधू सन्मुख बैठकर दर्शन करते थे या बानी व बचन सुनते थे, इस क़दर अंदरूनी कशिश[४] फ़रमाते थे कि ऊँचे स्थान पर उनकी सुरत को खींचकर गहरा रस दर्शनों और बचनों का बख़्शते थे। उसको पाकर जीव

१ - बग़ैर उनके ज़ाहिर करने के। २ - दिल भरने वाला व पूरा। ३ - बख़्शिश। ४ - अंतरी खैंच।

अक्सर ऐसे प्रेम में मसरूर और सरशार[१] हो जाते थे कि अपनी देह और ख़ानादारी[२] व नौकरी के कारोबार का होश भी नहीं रहता था। मगर ऐसी हालत में हुज़ूर महाराज साहब ख़ास तौर से रक्षा और सहायता फ़रमाते थे कि उनके देह और दुनिया के कारोबार में कोई हर्ज़ वाक़ै[३] नहीं होता था और वे तन, मन व धन निहायत मगनता के साथ हुज़ूर महाराज साहब के चरनों पर न्यौछावर करते थे। बल्कि यह ख़्वाहिश पैदा हो जाती थी कि अपनी सुरत को हुज़ूर महाराज साहब पर क़ुर्बान[४] कर दें और हुज़ूर महाराज साहब के दर्शनों और सतसंग को छोड़कर जाना निहायत नागवार[५] मालूम होता था। यह असर बाद में भी किसी क़दर कमी के साथ कुछ अर्से तक जबकि वह अपने मकानों को चले जाते थे क़ायम रहता था। और जब यह फीका पड़ता था तब तड़प दर्शनों की ज़्यादा पैदा होकर चरनों में दौड़े आते थे और ज़्यादा प्रेम की बख़्शिश हासिल करते थे।

१ - सरबोर। २ - गृहस्थी। ३ - पैदा। ४ - न्यौछावर। ५ - बहुत बुरा।

ऐसी दया का जोश उमड़ा हुआ था कि जिसको चरनों में लगाया उसके परमार्थ और स्वार्थ दोनों संवार दिये और हर वक़्त उसको अपने सिर पर हुज़ूर महाराज साहब की रक्षा और सहायता का पंजा नज़र आता था। आपस में भी इस क़दर मुहब्बत और हमदर्दी[१] सतसंगियों में थी जैसे कि हक़ीकी भाई और बहनों में भी शाज़ोनादिर[२] होती है और इस क़दर पर्चे अन्दरूनी[३] दया और मेहर के आम तौर पर बख़्शिश फ़रमाये कि कोई भी सतसंगी और सतसंगिन और साधू ऐसा न होगा कि जो महरूम[४] रहा हो। बल्कि अक्सर लोगों को बारहा[५] ऐसे पर्चे मिले हैं और अब तक मिल रहे हैं कि अगर उनका ज़िक्र किया जावे तो एक दफ़्तर[६] हो जावे। मगर बावजूद इस क़दर आम बख़्शिश के यह हुक्म और बर्तावा था कि कोई अपने अन्तरी पर्चे को दूसरे पर इज़हार[७] न करे और न उनको सुनाकर किसी को राधास्वामी मत

१ - प्यार व दर्दशरी की। २ - बिरले। ३ - अन्तरी।
४ - खाली। ५ - बारम्बार व बहुत दफ़ा।
६ - बड़ी बड़ी किताबें। ७ - ज़ाहिर।

में शामिल होने की तरग़ीब[१] दे, न किसी क़िस्म का दबाव डाले, न किसी के साथ ज़बरदस्ती करे। बल्कि अक्सर देखने में आया है कि हुज़ूर महाराज साहब किसी के ऊपर कोई तकलीफ़ हटाने की दया फ़रमा रहे हैं, और अगर किसी ने ज़रा भी इस दया का इशारा ज़ाहिर किया तो वह कार्रवाई उस वक़्त थोड़े अर्से को मुल्तवी[२] हो जाती थी, जिससे यह साफ़ ज़ाहिर होता है कि हुज़ूर महाराज साहब को अपनी महिमा और बुज़ुर्गी का इज़हार कराना बिल्कुल ना-पसन्द था। मगर जैसा कि मुश्क छिप नहीं सकता है इसी तरह से हुज़ूर महाराज साहब की महिमा और कशिश[३] का शुहरा आम दूर दूर तक हो गया था। जो लोग राधास्वामी मत को किसी वजह से नहीं मानना चाहते थे वह डरते थे कि उस कूचे[४] की हवा या हुज़ूर महाराज साहब के दरवाजे के चिराग़ का असर न पड़ जावे, और उनके आदत और स्वभाव जो कि संसारी हैं बदल न जावें, जैसा कि वाक़ई[५]

१ - लालच। २ - रूक जाती। ३ - खैंच शक्ति। ४ - गली। ५ - असल में

उन लोगों के कि जिन्होंने हुज़ूर महाराज साहब का सतसंग और अभ्यास शुरू किया थोड़े अर्से में ही हालत और स्वभाव बदल जाते थे।

''परम गुरू राधास्वामी प्यारे।
जगत में देह धर आये।।
शब्द का दे के उपदेशा।
हंस जिव लीन मुक्ताये।।१।।
किया सतसंग नित जारी।
दया जीवों पै की भारी।।
करम और भरम गये सारे।
जीव चरनों में घिर आये।।२।।
भक्ति का आप दे दाना।
दिया जीवन को सामाना।।
देख हुआ काल हैराना।
रही माया भी मुरझाये।।३।।
बढ़ा कर चरन में प्रीती।
दई घट शब्द परतीती।।
काल और करम को जीती।
सुरत मन उलट कर धाये।।४।।
जोत लख सूर निरखा री।
परे सत शब्द परखा री।।
अलख और अगम पेखा री।
चरन राधास्वामी परसाये।।५।।''

७९ - हुज़ूर महाराज साहब के नूरानी स्वरूप की छबि हर वक़्त मनमोहन व निराली ही होती थी जिसकी झलक हर छिन सतसंगियों के दिल पर एक नई क़िस्म का असर प्रेम का पैदा करती थी और पल-पल पर उसकी चमक उनकी सुरत को अंतर और ऊपर की तरफ ख़ींचती थी और वहाँ के आनंद को पाकर वे सब प्रेम में मगन और ज़्यादा मसरूर हो जाते थे।

८० - एक मर्तबा साधुओं के नायब महंत बिमलदास सख़्त बीमार हुए और हालत क़रीबुल मौत[१] व मायूसी[२] की हुई। उस हालत खिंचाव में उनको दर्शन हुज़ूर स्वामीजी महाराज साहब के हुए और हुक़्म मिला कि अभी दो महीने और ठहरो और उसी वक़्त से उनकी सेहत बहुत जल्द ठीक होनी शुरू हो गई। अर्से हफ़्ता अशर में जब हुज़ूर महाराज साहब के दर्शनों को सेहतयाब[३] होकर हाज़िर हुए, और हाल खिंचाव और दर्शनों का बयान करके कहा कि दो महीने के वास्ते और

१ - मौत जैसे ख़िंचाव की। २ - ना-उम्मीदी।
३ - अच्छे हो कर।

ठहरने को हुक़्म मिला है तब हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि तुम्हारी समझ में नहीं आया है, दो वर्ष का हुक्म है। इसके बाद उसी मियाद दो वर्ष के इख़्तिताम[१] पर फिर बीमार हुए और हालत ख़िंचाव की पैदा हुई, तब साधुओं ने हुज़ूर महाराज साहब की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि नायब महंत बहुत बीमार हैं और दर्शनों को तड़पते हैं। हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि उनका कारज तो अंतर में हो रहा है, हम तीसरे रोज़ बाग़ जाकर उनको देखेंगे।

तीसरे रोज़ फिर हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि हम आज सिपहर[२] के वक़्त बिमलदास को देखने को राधास्वामी बाग़ में जावेंगे, साधू व सतसंगी भी जिनका जी चाहे चलें। जो साधू बाग़ में बिमलदास नायब महंत के पास पहुँचे वह हर एक से दरियाफ़्त करते थे कि हुज़ूर महाराज साहब कितनी देर में तशरीफ़ लावेंगे कि उसी अस्नाय[३] में हुज़ूर महाराज साहब राधास्वामी बाग़ में पहुँच गये और समाध पर मत्था टेककर बिमलदास

१ - पूरे होने। २ - तीसरे पहर। ३ - वक़्त।

को देखने तशरीफ़ ले आये और हाल दरियाफ़्त फ़रमाया।

बिमलदास ने अर्ज़ किया कि मेरी तबीयत परसों से आप की दया से जबसे अंतर में दर्शन हुए अच्छी है, और जो कुछ मेरा कारज था आपने सब बना दिया अब सिर्फ़ आपके देह स्वरूप के दर्शन करने और शुक्रिया अदा करने को मुन्तज़िर[१] बैठा हूँ, और अब प्रार्थना करता हूँ कि अंतर में चरनों का बिलास बख़्शिश फ़रमाइये। हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि अभी और ठहरो। इस पर बिमलदास ने फिर अर्ज़ किया कि अब तो दया करके अंतर का ही बिलास बख़्शिये, अब इस शरीर में ठहरने को जी नहीं चाहता है। यह कहकर हुज़ूर महाराज साहब को मत्था टेका और हुज़ूर महाराज साहब भजनघर में मत्था टेकने को तशरीफ़ ले गये। उसी वक़्त बिमलदास मौसूफ़ का चोला निहायत मगनता की हालत में छूट गया। इत्तिला होने पर हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि उनके ले चलने की तैयारी करो, जब तक हम

१ - इन्तज़ारी में।

समाध पर दो शब्द का पाठ करा लेते हैं। पाठ हो जाने पर साधुओं और सतसंगी और सतसंगिनों ने बिमलदास की लाश को उठाया और हुज़ूर महाराज साहब भी उसके हमराह तशरीफ़ ले चले।

बाग़ से थोड़ी दूर चलकर बिश्नोजी ने जो बुआजी के नाम से मशहूर थीं अर्ज़ किया कि बिमलदास को साधुओं ने अश्नान भी नहीं कराया और ख़ुद पानी लोटे में जो उनके हाथ में था पेश किया। हुज़ूर महाराज साहब ने चुल्लू में पानी लेकर तीन छींटे लाश मज़कूर पर डाले। फिर बुआजी ने कहा कि मेरे और सतसंगिनों के ऊपर भी एक छींटा डाल दीजीये। इस पर हुज़ूर महाराज साहब दो-चार छींटे तो अपने दस्त मुबारक से ही डाले और फिर टुकड़ा बादल का फ़ौरन नमूदार हुआ। इधर तो हुज़ूर महाराज साहब और कुल सतसंगी और सतसंगिनों को बाग़ तक लौटने में, और उधर लाश और कुल साधुओं का राधाबाग़ तक पहुँचने में मय कपड़ों के पूरा अश्नान करा दिया और फिर फ़ौरन वह टुकड़ा बादल का ग़ायब हो गया। वक़्त पानी बरसने के हुज़ूर महाराज

साहब पर लोग छाता लगाने लगे मगर हुज़ूर महाराज साहब ने मना कर दिया। अचरजी लीला यह थी कि वह बारिश सिर्फ़ उतनी ही जगह में थी और कहीं नहीं हुई।

८१ - हुज़ूर महाराज साहब ने जीवों पर दया और मेहर की अंतरी दृष्टि डालकर उनके उद्धार का बीजा डाल दिया, ताकि वे सब रफ़्ता २ काल और कर्म के कष्ट से नजात पाकर मनुष्य देह के भागी होवें और भक्ति और प्रेम कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों का करके निज धाम में बासा पाकर वहाँ के सरूर[१] और आनंद दायमी से फ़ैज़याब हों। चुनांचे जिस वक़्त से कि हुज़ूर महाराज साहब ने इस संसार में आने की दया उमगाई उसी वक़्त से हर एक मज़हब में तहक़ीक़ात दीनी[२] शुरू हो गई। यहाँ तक कि अंजुमन और समाजें क़ायम हो गईं और खुरोनोश[३] की परहेज़गारी यानी आचार व विचार दूर होता गया और यही कोशिश हर एक मज़हब व मिल्लत की जारी रही।

१ - अविनाशी सुख हासिल करे। २ - परमार्थी खोज। ३ - खान पान।

८२ - हुज़ूर महाराज साहब के दर्शन और सतसंग के वास्ते बाहर से सतसंगी रोज़ाना तो आते ही रहते थे, मगर ख़ासकर ऐयाम तातील[1] में हर जानिब से ब-कसरत[2] आते थे और हुज़ूर महाराज साहब की अपार दया व लीला देखकर और सतसंग का बिलास और आनंद पाकर प्रेम में भर जाते थे। यहाँ तक कि तातील ख़त्म हो गई और वक़्त रवानगी रेल का भी हो गया मगर वे इस क़दर बिलास में महव[3] होते थे कि उनको अपने वक़्त वग़ैरा का ख़्याल ही नहीं रहता था। बावजूद हुज़ूर महाराज साहब के बारहा फ़रमाने के फिर भी उस आनंद और बिलास को छोड़कर नहीं जाना चाहते थे। और इस तरह से अक्सर ऐसा हुआ है कि, वक़्त रवानगी रेल का ख़त्म हो गया, और पाव घंटा, आध घंटा बल्कि एक घंटा तक गुज़र गया, और जब वे लोग ज़बरदस्ती रवाना किये गये तो इस क़दर देर होने पर भी दया और मेहर से उस रोज़ गाड़ी भी लेट हो जाती थी, और वह लोग उसमें सवार होकर रवाना हो जाते थे।

१ - छुट्टी के दिनों में। २ - बहुत। ३ - मस्त।

८३ - प्रेमीजन हुज़ूर महाराज साहब के वास्ते नई-नई क़िस्म की और चमक-दमक की पोशाकें और ज़ेवर वग़ैरा उस उमंग की हालत में कि जो हुज़ूर महाराज साहब के सतसंग और दर्शन और बचन से अक्सर पैदा होती रहती थी पेश करके आरती के वास्ते प्रार्थना करते थे। और हुज़ूर महाराज साहब दया फ़रमाकर उनकी उमंग पूरी करने के वास्ते उनको मंज़ूर फ़रमाकर वक़्त आरती के पहन लेते थे और उन प्रेमियों को सन्मुख बिठाकर बानी में से प्रेम के शब्दों का और अक्सर नये शब्द बनाकर पाठ करवाते और उनसे आरती कराते थे। और इस कार्रवाई से यह फ़ायदा और जीवों को भी होता था कि कभी किसी वक़्त की अनोखी छबि किसी-किसी की नज़र में खुब जाती थी और हर वक़्त उसके ख़्याल से प्रेम का जोश पैदा होता रहता था और भक्ति व प्रेम में तेज़-क़दमी के साथ आइंदा लगते थे। जिस तरह से कि माता अपने बच्चों को तरह-तरह के खेल और तमाशे दिखलाकर मगन और मसरूर कर देती है, इसी तरह से हुज़ूर महाराज साहब भी अपने बच्चों का

ख़्याल रखते थे और उनके प्रेम और उमंग बढ़ाने के वास्ते नई-नई तरह के लीला और बिलास दिखलाते रहते थे। जीवों की प्रीत और प्रतीत की इसी तरह से रोज़-बरोज़ तरक़्क़ी होती जाती थी।

८४ - राधास्वामी मत का हाल और और मतों की निसबत उसकी बुज़ुर्गी और महिमा हुज़ूर महाराज साहब हर वक़्त नई-नई तर्ज़[1] और वजूहात से इस तौर पर साबित फ़रमाते रहते थे कि सुननेवाले दंग और लाजवाब[2] हो जाते थे, और हर वक़्त वह बचन नया मालूम देता था और नया ही रस उसमें पैदा होता था। बल्कि ऐसे मौक़े भी अक्सर हुए हैं कि एक ही रोज़ में सात-आठ आदमी वास्ते सुनने और समझने राधास्वामी मत के अलहदा अलहदा वक़्तों पर आये और हरेक के सामने राधास्वामी मत का बयान हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया। जो लोग हर वक़्त वहाँ मौजूद होते और उन बचनों को सुनते थे, वे हर वक़्त के तर्ज़ बयान में नई कैफ़ियत और नई क़िस्म का सबूत राधास्वामी नाम और राधास्वामी मत की

१ - ढंग। २ - हैरान और बेजवाब।

बुज़ुर्गी का पाते थे।

८५ - हुज़ूर स्वामीजी महाराज के वक़्त में तरीक़ा आरती पुराने तर्ज़ पर कि थाली में जोत जगा कर खड़े होकर दोनों हाथों से फेरते हुए आरती करते थे, जारी था। मगर हुज़ूर महाराज साहब जब हुज़ूर स्वामीजी महाराज साहब की आरती करते थे तो जोत जगा कर दो-चार मर्तबा आरती की थाली को फेर कर ब-हुक्म हुज़ूर स्वामीजी महाराज बैठ जाते थे और दृष्टि जमा कर आरती करते थे। चुनांचे हुज़ूर महाराज साहब ने अपने वक़्त में प्रेमियों को आरती की ग़रज़ व फायदे समझाकर सिर्फ़ दृष्टि जोड़कर सन्मुख बिठला कर आरती करने का तरीक़ा मुरौवज[1] फ़रमा दिया और इससे ज़्यादा यह सहूलियत पैदा फ़रमाई कि बिला पाठ पोथी के मजमै सतसंगियों पर दृष्टि डाल कर और उनको ध्यान की हालत बख़्शिश फ़रमाकर गूँगी आरती कराते थे।

८६ - हुज़ूर महाराज साहब ने भक्ति में भी बड़ी आसानी दया और मेहर से फ़रमाई और

१ - जारी।

सबसे सहल और सुगम पिता-पुत्र का भाव जिसमें बहुत बड़ा माफ़ी और क्षमा का सहारा जीवों को हासिल हो सकता है जारी फ़रमाया। और यही बर्ताव सब जीवों से जो सरन में आये रखा यानी सब पर मिस्ल बच्चों के दया मेहर और प्रेम की बख़्शिश फ़रमाई और उनके क़सूरों का ख़्याल न फ़रमाया। जैसे कि बच्चा अपने माता पिता की गोद में खेलता है और उमंग और प्यार के साथ उनसे लिपटा जाता है इसी तरह से प्रेमीजन भी हुज़ूर महाराज साहब के चरनों में लिपटे और बिलास करते रहते थे, और अपने कसूरों और हुज़ूर महाराज साहब की दयालुता और क्षमा को देखकर सरनगूँ और ममनून[१] होते थे और निहायत मशकूरी के साथ प्रेम और उमंग के जोश में सरशार[२] होकर सरन में गहरे और पक्के होते जाते थे।

८७ - हुज़ूर महाराज साहब के चरनामृत, परशादी व मुखामृत आम तौर से सतसंगी व साधू लेकर ग्रहण करते थे, जिससे मन की सफ़ाई व सुरत के सिमटाव और चढ़ाई का फ़ायदा

१ - शरमिन्दा व लज्जित, एहसानमन्द। २ - सरबोर।

उनको हासिल होता था और यही नहीं बल्कि अक्सर बीमारियों और ज़माने-वबा में जिन ग़ैर सतसंगियों ने भी उनका इस्तेमाल किया शफ़ायाब[१] हुए और वबा से महफ़ूज़[२] रहे।

८८ - हुज़ूर महाराज साहब ने बानी के पाठ करने और सुनने के वास्ते यह हिदायत फ़रमाई कि अगरचे मामूली पाठ में रस और आनंद आता है, मगर अंतर में ऊँचे घाट पर तवज्जह को जमा कर और बानी के मज़मून और अर्थ पर और जिन मुक़ामात का उसमें ज़िक्र है, उन पर निगाह और तवज्जह रखने से मिस्ल अभ्यास के सिमटाव व चढ़ाई का फ़ायदा हासिल होगा, और बानी का मतलब समझ में आकर गहरा रस और आनंद मिलेगा। और मन और चित्त के एकाग्र करने के वास्ते बहुत-सी आसान और निर्विघ्न जुक्तियाँ प्रगट फ़रमाईं।

८९ - हुज़ूर महाराज साहब ने उन परमार्थ के चाहने वालों को जो किसी वजह से आगरा न आ सकें उपदेश ब-ज़रिये पर्चे तहरीरी[३] या मार्फ़त

१ - चंगे। २ - बच गये। ३ - चिट्ठी से।

किसी सतसंगी के इस तरह जारी फ़रमा दिया कि अव्वल उनकी दरख़्वास्त आने पर चंद इब्तिदाई कुतुब[1] देखने की हिदायत फ़रमाई। और जब उन्होंने कुतुब मज़कूर का मुताला करके इस आला मज़हब के उसूल व शरायत[2] को क़बूल व मंज़ूर किया, तब ब-ज़रिये पर्चे तहरीरी या मार्फ़त उस सतसंगी के जो वहाँ पर होता था उपदेश दे दिया जाता था। और हर एक सतसंगी को इजाज़त आम दे दी कि वह अपनी स्त्री को उपदेश देकर इत्तिला उस की कर देवे और जा-ब-जा शहरों व क़स्बों व देहातों में सतसंग क़ायम करने की इजाज़त फ़रमा दी कि जिस से सच्चे मुतलाशियों को आसानी व सहूलियत के साथ मौक़ा शामिल होने का मिले।

९० - हुज़ूर महाराज साहब ने अभ्यास में जो विघ्न वाकै होते हैं उनकी शरह और उनके दूर करने की जुक्तियाँ ऐसी सहल तौर पर ज़ाहिर फ़रमाईं और मत की समझौती के वास्ते हर क़िस्म की इल्मी व अमली[3] दलीलों से अक्सर बचन

१-शुरू पोथियां। २-क़ायदे व शर्तों। ३-बरताव की हुई।

ज़बानी व तहरीरी ऐसे मुशर्रा[1] फ़रमाये कि जो आसानी से मर्द और औरतों की समझ में आ सकते हैं। और जिनको सुनकर या पढ़कर प्रेमियों और अभ्यासियों को बहुत बड़ा सरूर व फ़ायदा हासिल होता है और अभ्यास में मदद मिलती है।

९१ - हुज़ूर महाराज साहब ने ऐसी दया अपार फ़रमाई कि हर मज़हब व मिल्लत व देश के संस्कारी जीवों को, क्या हिन्दू क्या मुसलमान क्या ईसाई क्या पारसी क्या जैनी, ग़रज़ कि दुनिया में जितने मज़हब कि जारी हैं सबमें से मेहर व दया से संजोग मिलाकर सरन में लिया। क्योंकि इस मत का ताल्लुक़ रूहानी शग़ल[2] से है बाहरी रसूमात और तरीक़ों से कुछ ग़रज़ नहीं है। मालिक जात-पांत नहीं देखता है उसको तो भक्ति प्यारी है जो उसकी भक्ति करेगा वही उसका प्यारा होगा।

''जात पांत पूछे नहिं कोई।
हरि को भजे सो हरि का होई।।''

इस तरह की दया और मेहर जो हुज़ूर

१ - खोलकर। २ - शब्द अभ्यास।

महाराज साहब ने जारी फ़रमाई तो क़रीब कुल हिन्दुस्तान के अज़ला में से हर मज़हब के संस्कारी जीव बिला तख़्सीस[१] जात-पांत के चरनों में उमड़े और सरन में आये। और ज़्यादातर पढ़े-लिखे, एम.ए., बी.ए., डाक्टर व प्रोफ़ेसर, साइंसदा व शास्त्री वग़ैरा शामिल हुए, क्योंकि ऊँचे दर्जे के और ज़्यादा गहरे और भेद के बचन उनकी समझ में जल्दी आये।

९२ - हुज़ूर महाराज साहब शबोरोज़[२] में सिर्फ़ तीन-चार घंटे आराम फ़रमाते थे, और अक्सर जब बाहर से ज़्यादा सतसंगी आते तो इसमें भी कमी हो जाती थी। सिवाय चार वक़्त आम व ख़ास सतसंग के हुज़ूर महाराज साहब का वक़्त और किसी न किसी काम में सर्फ़ होता रहता था। यानी कभी किसी को समझा रहे हैं, कभी कोई खास बचन फ़रमा रहे हैं कभी ख़त व किताबत का काम कर रहे हैं, कभी बचन व बानी तहरीर[३] करा रहे हैं। एक लम्हा[४] फ़ुर्सत का नहीं था। हरेक शख़्स

१ - बग़ैर लिहाज़। २ - रात दिन। ३ - लिखा।
४ - पल।

अपने आराम को मुक़द्दम[१] समझता है, मगर हुज़ूर महाराज साहब ने तो चोला केवल जीवों के उद्धार व उपकार के लिये ही धारण किया था।

९३ - अर्से तक हुज़ूर महाराज साहब ने अपने दायरे दौलत[२] पर ही अपने ज़ाती सर्फ़े[३] से जो सतसंगी बाहर से वास्ते दर्शन और सतसंग के अक्सर आया करते थे उनकी बूदोबाश[४] और ख़ुरोनोश[५] का इंतजाम जारी रखा। मगर जब आनेवालों की कसरत ज़्यादा हुई और गुंजाइश नशिस्त व बर्ख़ास्त[६] की भी मुश्किल होने लगी तब नज़र व भेंट की आमदनी से और मकानात क़रीब अपने दायरे दौलत के वास्ते बूदोबाश सतसंगियों व नीज़ सतसंग के ख़रीद फ़रमाये, और खान-पान के वास्ते भी अलहदा रसोई और भंडारघर का इंतज़ाम कर दिया। मगर फिर भी ख़ास-ख़ास सतसंगी व साधू और सतसंगिनों को खाना हुज़ूर महाराज साहब अपनी ख़ास रसोई से ही खिलाते रहे।

१ - ज़रूरी। २ - मकान। ३ - ख़र्चे। ४ - रहने।
५ - खाने पीने। ६ - उठने बैठने।

९४ - अलावा ख़र्च साधुओं व बाग़ात के हुज़ूर महाराज साहब ने बहुत रुपया अपना ज़ाती तामीर[१] समाध हुज़ूर स्वामीजी महाराज व जनाब राधाजी साहिबा व दीगर मकानात राधास्वामी बाग़ व दीगर बाग़ात के सर्फ़[२] किया। और जिस क़दर रुपया नज़र व भेंट का सतसंग में हुज़ूर महाराज साहब के पेश[३] हुआ वह सब ख़र्च बाग़ात, तामीर व मरम्मत समाध, रसोई सतसंगियों व साधुओं, प्रसाद व ख़रीद व तामीर व मरम्मत दीगर मकानात सतसंग में सर्फ़ किया। और जो पोशाक व ज़ेवर वग़ैरा नज़र होता था वह भी बाद प्रसादी करने के सतसंगी व साधुओं को बतौर प्रसादी अता[४] हो जाता था। ख़ैरात आम का भी दरवाज़ा खुला हुआ था यानी कोई मंगता ख़ाली नहीं जाता था और हमेशा हुज़ूर महाराज साहब अपनी ज़ाती आमदनी से भी अलावा ज़र[५] सतसंग के अक्सर ग़रीब बेवा व मोहताजों को खाना और कपड़ा मिस्ल रज़ाई व कंबल वग़ैरा तक़सीम फ़रमाया करते थे।

१-बनवाने। २-ख़र्च। ३-भेंट। ४-बख़्शिश। ५-रुपये।

९५ - हुज़ूर महाराज साहब ने पोथियाँ हस्ब ज़ैल[१] बावजूदे कि उनमें हालात व ख़्यालात जोगी, ज्ञानी, जोगेश्वर, वेदान्ती, सूफ़ी वग़ैरा की रसाई की हद्द से बहुत ऊँचे दर्जों के हैं, ऐसी सलीस[२] और आम-फ़हम हिंदी भाषा में तसनीफ़[३] फ़रमाई हैं कि जिसको राधास्वामी मत के उपदेशी पढ़े-लिखे व अनपढ़, मर्द व औरत आसानी से समझ सकते हैं-सार उपदेश, निज उपदेश, प्रेम उपदेश, गुरु उपदेश, प्रश्नोत्तर, राधास्वामी मत प्रकाश (ब-ज़बान अंग्रेज़ी), प्रेमबानी चार जिल्दें, प्रेमपत्र छः जिल्दें, जुगत प्रकाश। प्रेमपत्र के बचनों में से कुछ पोथियाँ अलहदा करके वास्ते मुतालै मुब्तदियों[४] के छाप दी गईं और उनके नाम हस्ब ज़ैल हैं-राधास्वामी मत संदेश, राधास्वामी मत उपदेश और सहज उपदेश। अलावा इसके सार बचन नज़्म व प्रेमबानियों में से हरेक अंगों के शब्द छांटकर हस्ब ज़ैल सात छोटे २ गुटकों में छाप दिये गये हैं-भेदबानी चार जिल्दें, प्रेम प्रकाश, नाम माला, बिनती व प्रार्थना-ताकि

१ - नीचे लिखी हुई। २ - आसान। ३ - बनाई।
४ - नये उपदेशियों के पढ़ने के वास्ते।

जो ग़रीब सतसंगी हैं बहुत कम क़ीमत में उन बानियों से फ़ैज़[१] उठाएँ। और पिछले संत और महात्माओं की बानी में से मुन्तख़िब[२] करके तीन पोथियाँ-संत संग्रह भाग पहला व दूसरा और छांटे हुए बचन महात्माओं के भी तालीफ़[३] किये है।

९६ - आम तौर पर देखने में आया है कि राधास्वामी मत के अभ्यासियों का और नीज़ उनके लवाहक़ो[४] का चेहरा मरते वक़्त नूरानी बश्शाश[५] व सुहावना हो जाता है, और बाद चोला छोड़ने के भी ऐसा मालूम होता है कि वह शख़्स मसरूर व मगन हालत में सो रहा है। और अक्सर राधास्वामी मत के अभ्यासियों ने देह त्याग करते वक़्त बयान भी किया है कि हुज़ूर महाराज साहब उनको दर्शन दे रहे हैं और दया फ़रमा रहे हैं, और जो तकलीफ़ मरते वक़्त आम तौर पर जीवों को होती है वह दर्शन होते ही सब रफ़ा[६] हो जाती है और चेहरे पर बशाशत[७] आ जाती है। वजह उसकी यह है कि जिस वक़्त सुरत का सिमटाव व खिंचाव अंतर में

१-फ़ायदा। २ - चुन के। ३ - छाँटकर इकट्ठे किये हैं।
४-रिश्तेदार व नौकर। ५-ख़ुशी। ६-दूर। ७-ख़ुशी।

ऊपर की तरफ़ जो मौत का स्थान है होता है उस वक़्त कर्म का चक्कर या दफ़्तर खुलता है और जो कर्म उसने किये हैं वह प्रगट होकर उनका असर जाने वाली सुरत को दिखलाते हैं और जैसा उनका असर होता है उसी के मुवाफ़िक़ सुरत को ख़ुशी या रंज पैदा होता है, और उसका असर चेहरे से ज़ाहिर होता है। इसी क़ायदे के मुवाफ़िक़ जो राधास्वामी मत में शामिल हुए हैं या जिन का ताल्लुक़ और मुहब्बत राधास्वामी मत के अभ्यासी से होता है, और जो नक़्श कि राधास्वामी नाम और संत सतगुरु के स्वरूप के, मिस्ल दीगर कर्मों के, होते हैं उनका असर प्रघट करने के वास्ते संत सतगुरु उस जानेवाली सुरत को दर्शन देते हैं, और सच्चा व पूरा फ़ायदा और असर राधास्वामी नाम और संत सतगुरु के दर्शन का यानी जीव के उद्धार का उसको प्रगट नज़र आता है। और वह सुरत निहायत प्रेम और उमंग के साथ उनके चरनों की तरफ़ मुतवज्जह होती है, और हुज़ूर राधास्वामी दयाल उसको चरनों में लपेट कर ऊँचे स्थान में ले जाते हैं और इस ख़ुशी और मगनता

का असर उसके चेहरे पर नुमाया[1] हो जाता है और बाद मरने के भी क़ायम रहता है।

९७ - हुज़ूर महाराज साहब एक रोज़ तीन-चार बजे सिपहर[2] के वक़्त अपने अंदर के कमरे से बीच के कमरे में तशरीफ़ लाये और साधुओं व सतसंगियों से जो क़रीब बीस-पच्चीस के वहाँ मौजूद थे फ़रमाया कि सब लोग कहते हैं कि संत और साध मिल जावें तो हम पकड़ लें। हम न साध हैं और न संत हैं, अलबत्ता पूरे गुरु से मिले हैं। तुम सबको इजाज़त देते हैं कि हमारा हाथ, पैर, कपड़ा या जो चीज़ तुम्हारे हाथ में आवे, बिला लिहाज़ अदब व ख़ौफ़ किसी क़िस्म के पकड़ लेना। यह फ़रमाकर उन लोगों के दरमियान में जो कमरे में मौजूद थे इधर से उधर और उधर से इधर बराबर घूमते रहे। और घूमते हुए कोठरी के दरवाज़े में खड़े होकर फ़रमाया कि देखो जब हमारी देह को ही तुम लोग बावजूद कोशिश के न पकड़ सके तो संत सतगुरु को कैसे पकड़ सकते हो और उनकी क्या परख पहिचान कर सकते हो? इस आवाज़

१ - प्रगट। २ - तीसरे पहर।

को सुनकर सब लोग हैरान और शशदर[१] रह गये, और अर्ज़ करने लगे कि बग़ैर दया और मेहर के सहारे के कुछ नहीं कर सकते।

९८ - अक्सर व पेश्तर[२] ऐसा हुआ कि बहुत से शख़्स सतसंगी व ग़ैर-सतसंगी सवालात हर क़िस्म व संशय व भर्म के दरियाफ़्त करने के वास्ते सतसंग में आये, और क़ब्ल[२] इसके कि वे कोई सवाल करें हुज़ूर महाराज साहब उनके दिली सवालात और संशय के जवाबात ऐसे शाफ़ी[३] व मुदल्लल[४] ख़ुद ही फ़रमा देते थे कि जिससे उनके संशय रफ़ा[५] होकर उनकी और सब हाज़िरीन[६] की पूरी तसल्ली हो जाती थी।

९९ - हुज़ूर महाराज साहब ने ब-मुक़ाबले बैराग के अनुराग पर ज़्यादा ज़ोर दिया और बैराग की निस्बत सिर्फ़ इस क़दर फ़रमाया कि फ़िज़ूल और ना-मुनासिब चाहों को रोकना चाहिये। सच्चा बैराग प्रेम से ख़ुद-बख़ुद हो जावेगा और प्रेम और शौक़ की भारी महिमा बयान फ़रमाई और बानी

१ - भौंचक्का। २ - पहले। ३ - पूरे। ४ - सबूत के साथ। ५ - दूर। ६ - पास बैठे हुए।

और बचनों में और भी अभ्यास कराकर दरसा दिया कि प्रेम ही मालिक का स्वरूप है और प्रेम ही जीव का रूप है और प्रेम ही ज़रिया मालिक से मिलने का है, जैसा कि शब्द ज़ैल फ़रमूदा[१] हुज़ूर महाराज साहब से ज़ाहिर है।

।।शब्द।।

प्रेम की दौलत अपर अपार।
प्रेम से मिलता सिरजनहार।।१।।
प्रेम बिना सब झूठा ध्यान।
प्रेम बिना सब थोथा ज्ञान।।२।।
प्रेम बिना सब बानी रीती।
प्रेम से काल करम को जीती।।३।।
प्रेम से मन माया बस आये।
प्रेम से सूरत अधर चढ़ाये।।४।।
प्रेम निकारे सब ही बिकार।
प्रेम से होवे जग से न्यार।।५।।
प्रेम से दीखे घट में नूर।
प्रेम रहा घट घट भरपूर।।६।।
प्रेम की महिमा सब से भारी।
प्रेम बिना सब पच पच हारी।।७।।
प्रेम बिना सब थोथी कार।
प्रेम से उतरे भौजल पार।।८।।

१ - फ़रमाये हुए।

प्रेम की बख़्शिश दें राधास्वामी।
प्रेम की बख़्शिश दें राधास्वामी।।९।।

१०० - हर मज़हब की किताबों के देखने से मालूम होता है कि जब २ कोई संत व औतार या वली व महात्मा पैदा हुए, उनके वक़्त में बहुत कम लोगों ने उनकी महिमा जानी और उन पर यक़ीन लाकर फ़ैज़याब[1] हुए। बाद में अलबत्ता लाखों का शुमार उनके नाम पर भरोसा करनेवालों का हो गया, और ख़ासकर उस शहर व क़ौम व ख़ानदान के लोगों को तो यक़ीन ही नहीं आया। कहीं ख़ास तौर पर बाज़ लोग कुछ यक़ीन लाये और फ़ैज़याब हुए। बर-ख़िलाफ़ इसके हुज़ूर स्वामीजी महाराज व हुज़ूर महाराज साहब ने ख़ास दया फ़रमाकर बहुत जीवों को, दूर और क़रीब से, अपने ही वक़्त में चरनों में पूरा यक़ीन दिलाकर लगाया, और अपने ख़ानदान और रिश्तेदारों व क़ौम में से भी कई लोगों को पहिचान बख़्श कर परमार्थी दौलत अता[2] की और सरन में ले लिया। यह बड़ी भारी बल्कि ख़ास बख़्शिश हुज़ूर स्वामीजी महाराज व हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाई। सिर्फ़ इसी क़दर ही

१ - फ़ायदा उठाने वाले। २ - बख़्शी।

नहीं बल्कि हुज़ूर महाराज साहब ने हुज़ूर स्वामीजी महाराज साहब के ख़ानदान और रिश्तेदारों से भी अपनी भक्ति और सेवा प्रीति व प्रतीत सहित करा ली और उनकी नाज़ बरदारी[1] भी पूरे तौर से करते रहे।

१०१ - हुज़ूर महाराज साहब ने अपनी दया और मेहर से संस्कारी जीवों को अपने सूक्ष्म रूप से दर्शन देकर और बचन सुनाकर चरनों में लगाया। ग़रज़ कि अनेक रीति से जीवों को सरन में लिया और मिनजुमला[2] चंद वाक़यात[3] के कुछ वाक़ये बतौर नमूने के ज़ैल में दर्ज किये जाते हैं।

१०२ - गंगाराम सिंधी वेदान्ती था और अक्सर हैद्राबाद सिंध के सतसंगियों से, जो उससे मिलते थे और राधास्वामी मत का ज़िक्र करते थे, उनसे उसके खिलाफ बहस मुबाहिसा किया करता था। एक मर्तबा जब वह सिबी से अपने घर हैद्राबाद वापस जा रहा था, रास्ते में हुज़ूर महाराज साहब ने उसको सूक्ष्म रूप से दर्शन देकर राधास्वामी मत को ऐसी दलीलों से समझाया कि वह क़ायल

१-खातिरदारी, दिल रखना। २-सब में से। ३-हालात।

हो गया, और फिर हुज़ूर महाराज साहब उसकी नज़र से पोशिदा[1] हो गए। उसने फिर तमाम रेलगाड़ियों में तलाश किया मगर कहीं नज़र न आये। घर जाकर वह राधास्वामी सतसंग में गया और वहाँ हुज़ूर महाराज साहब की तस्वीर को देखकर पहचाना कि यह तस्वीर उन्हींकी है कि जिन्होंने रास्ते में मुझको दर्शन देकर राधास्वामी मत समझाया था। उसने मुफ़स्सिल हाल सतसंगियों को सुनाया और हुज़ूर महाराज साहब का पता उनसे दरियाफ़्त करके ब-ज़रिये तहरीर उपदेश लेकर प्रीत प्रतीत के साथ अभ्यास करने लगा।

१०३ - एक ज़ईफुल-उम्र[2] शख्स को, जो इटावा के सतसंग में जाया करता था, राधास्वामी मत की महिमा सुनकर शौक़ शामिल होने का पैदा हुआ, और हुज़ूर महाराज साहब के चरनों में उसने ब-ज़रिये अर्ज़ी प्रार्थना की कि मैं उपदेश लेना चाहता हूँ, मगर ब-वजह बीमारी दमा के हाज़िर नहीं हो सकता। हुज़ूर महाराज साहब ने हुक्म भेजा कि तुम लाला लक्ष्मीनारायण सतसंगी,

१ - गुप्त। २ - बूढ़ा।

सब-इंस्पेक्टर पुलिस के पास जाकर उपदेश ले लो। उसने दोबारा अर्ज़ी भेजी कि मैं आपसे ही उपदेश लेना चाहता हूँ। जब तबीयत किसी क़दर दुरुस्त होगी चरनों में हाज़िर हूँगा। चूँकि तबीयत उसकी इस क़ाबिल नहीं हुई कि वह चरनों में हाज़िर हो सके, शौक़ व तड़प दर्शन करने व उपदेश लेने की दिन-ब-दिन बढ़ती गई। एक शब को बहुत बेकली की हालत में रोते हुए आंख लग गई कि हुज़ूर महाराज साहब ने उसको ख़्वाब में दर्शन देकर युक्ति सुमिरन ध्यान व भजन की मय तफ़सील मुक़ामात के ब-ख़ूबी समझाकर उसकी ख़्वाहिश के मुवाफ़िक़ खुद उसी जगह उपदेश उसको दे दिया। वह इस दया से निहायत मगन व मसरूर हुआ और हाल ख़्वाब व मिलने उपदेश का और शुक्रिया दया और मेहर का ब-ज़रिये अर्ज़ी के हुज़ूर महाराज साहब के चरनों में तहरीर करके भेजा।

१०४ - अमेरिका में एक औरत योगाभ्यास करती थी। उसमें जब उसको कुछ विघ्न वाक़ै हुआ तो उसके अंतर में हिदायत हुई कि इस विघ्न

के दफ़ैये[1] का इलाज हिन्दुस्तान में मिलेगा, इसलिए उसने अपने लड़के को हिन्दुस्तान भेजा। वह हिन्दुस्तान में सब जगह फिरा मगर कहीं उसकी तशफ्फ़ी[2] न हुई। आख़िरकार घूमते फिरते हुज़ूर महाराज साहब का परमार्थी ज़िक्र सुनकर आगरा में आया और मिलकर अपनी माँ का हाल बयान किया। हुज़ूर महाराज साहब ने कुल हालात उसकी माँ के अभ्यास के और सबब विघ्न वाक़ै होने और फिर जतन उसके दूर करने का मुफ़स्सिल तौर से उसको समझा दिया। और फ़रमाया कि तुम अच्छी तरह से इसको अपनी माँ को न समझा सकोगे, इसलिये हम यह कुल हाल चिट्ठी में लिख देते हैं। तुम अपनी माँ को दे देना, वह ख़ुद पढ़कर समझ लेंगी। और ऐसा ही हुआ।

१०५ - एक जर्मनी का बाशिन्दा जो थियासोफ़िकल सोसाइटी का मेम्बर था, हुज़ूर महाराज साहब से मिलने के वास्ते आया और आपने क़रीब दो घंटे उसको राधास्वामी मत के हालात मुफ़स्सिल तौर से समझाये, जिसको सुनकर

१ - दूर करने। २ - तसल्ली।

वह बहुत ख़ुश हुआ। उसी रात को ख़्वाब में उसको दर्शन भी ऐसे स्वरूप के हुए कि जिसको उसने देखा न था। दूसरे रोज़ वह दोपहर को फिर मिलने आया और अपने ख़्वाब का हाल बयान किया। हुज़ूर महाराज साहब ने हुज़ूर स्वामीजी महाराज की तस्वीर दिखाई, जिसको देखकर उसने बयान किया कि मुझको इसी स्वरूप के दर्शन हुए थे। बाद इसके हुज़ूर महाराज साहब ने ऐसी चर्चा फ़रमाई कि जिससे उसके तमाम शकूक रफ़ा हो गये और ख़्वाहिश उपदेश लेने की ज़ाहिर की। उपदेश अभ्यास का लेकर वह हिन्दुस्तान की सैर को चला गया और अक्सर ब-ज़रिए चिट्ठियों के हाल अभ्यास और इज़हार शुक्रिया दया का करता रहा।

१०६ - राधास्वामी मत में एक कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का इष्ट बाँधने की और बाक़ी जिस क़दर ब्रह्म, पारब्रह्म, ईश्वर, परमेश्वर, देवी, देवता के इष्ट हैं उनके त्याग की हिदायत है, क्योंकि यह इष्ट जो रास्ते के हैं अपने भाववाले को आगे जाने से रोकते हैं। चुनांचे बाज़ लोगों को,

जब उन्होंने राधास्वामी मत में शामिल होकर अपना अभ्यास शुरू किया, साबिक़[1] इष्ट ने दर्शन देकर कहा कि राधास्वामी मत के अभ्यास को छोड़ दो वरना हम तुमको नुक़सान पहुँचावेंगे। उन्होंने जवाब दिया कि पहले इससे बावस्फ़ परहेज़गारी व इबादत व मेहनत के आपने कभी दर्शन नहीं दिये और अब जब कि राधास्वामी नाम का अभ्यास हमने शुरू किया तो आप हमारा रास्ता रोकने और विघ्न डालने को आये हैं! हम राधास्वामी नाम को नहीं छोड़ेंगे। और फ़ौरन राधास्वामी नाम का सुमिरन व सतगुरु स्वरूप का ध्यान उमंग व प्रेम के साथ शुरू किया कि उसके प्रताप से उस इष्ट का रूप ग़ायब हो गया और कोई नुकसान न पहुँचा सका।

१०७ - एक बंगाली साधू जिसको हुज़ूर महाराज ने बाद में दयालसरन का नाम बख़्शा था कलकत्ता से पच्चीस कोस के फ़ासले पर एक जंगल में कुछ अर्से से काली की साधना कर रहा था। एक रोज़ रात को जबकि वह अपनी कुटी में लेटा हुआ था

१ - पहले।

और नींद की सी हालत में था, एक निहायत ख़ूबसूरत औरत उसके पास आकर बैठी और इख़्तलात[१] की बातें करने लगी। क़रीब था कि वह अपनी साधना से डिगमिग हो जावे कि हुज़ूर महाराज साहब ने उसको हाथ पकड़कर उठा के बिठा दिया और दर्शन देकर फ़रमाया, ''होशियार हो, क्या करता है?'' और नज़र से पोशीदा[२] हो गये। वह औरत भी हुज़ूर महाराज साहब के प्रगट होते ही ग़ायब हो गई। साधू मज़कूर को यह माजरा[३] देखकर बहुत ही सोच हुआ कि यह बुज़ुर्ग कौन थे कि जिन्होंने मेरी ऐसे वक़्त में रक्षा करके साधना को भंग न होने दिया? और उनकी खोज में दूसरे रोज़ ही वहाँ से रवाना होकर कलकत्ता में आया।

इत्तफ़ाक़न[४] उसकी मुलाक़ात एक सतसंगी से हुई और वह उसको बाबू निर्मलचंद्र बनर्जी के मकान पर, जहाँ कि सतसंग रोज़ाना हुआ करता था, ले गया। वहाँ उसने तस्वीर हुज़ूर महाराज साहब की देखी और पहचान कर दरियाफ़्त किया

१ - प्रीति। २ - गुप्त। ३ - हाल। ४ - अचानक।

कि यह किस महात्मा की तस्वीर है? इन्होंने मेरी रक्षा की। और अपना कुल मुफ़स्सिल हाल उनको सुनाया। वह लोग हुज़ूर महाराज साहब की दयालुता और रक्षा का हाल जो कि ग़ैर-सतसंगी पर हुई, सुनकर बहुत मगन हुए और कहा कि यह तस्वीर हमारे परम संत सतगुरु हुज़ूर महाराज साहब की है और उनका दरबार आगरा में है। यह सुनकर उसने अपना इरादा, वास्ते हाज़िरी हुज़ूर महाराज साहब के चरनों के, ज़ाहिर किया और उनसे पता और निशान दरियाफ़्त करके और मदद लेकर आगरा आया। हुज़ूर महाराज साहब के दर्शन और सतसंग करके वह बहुत ही मगन व मसरूर हुआ और उपदेश लेकर सतसंग व अभ्यास प्रीत प्रतीत के साथ करने लगा।

चन्द रोज़ ही उसको अभ्यास करते गुज़रे थे कि काली ने उसको ख़्वाब में दर्शन दिये और बहुत नाराज़ होकर कहा कि तू हमसे क्यों बेमुख हुआ? और यह क्या करता है, इसको छोड़ दे। उसने जवाब दिया कि मैंने इस क़दर साधना तुम्हारी की मगर कभी दर्शन नहीं दिये, बल्कि मेरी

साधना भंग करनी चाही। अब तुम दर्शन देने आई हो? मैं तुमको नहीं मानता। और यह कहकर राधास्वामी नाम का सुमिरन करने लगा तो वह फ़ौरन घबराकर भाग गई। और वह गहिरा भाव और निश्चय लाकर ज़्यादा प्रीत और प्रतीत के साथ सेवा, सतसंग और अभ्यास में मसरूफ़ हुआ और हुज़ूर महाराज साहब की सेवा में बराबर हाज़िर रहा।

१०८ - एक साधू नरसिंहदास नामक श्रीकृष्ण का उपासक व बड़ा प्रेमी मथुरा का रहनेवाला राधास्वामी मत की महिमा सुनकर आगरा में आया, और हुज़ूर महाराज साहब से मत का हाल बख़ूबी समझकर उपदेश लिया, और अभ्यास करना शुरू किया। चन्द रोज़ के बाद उसने आठ बजे सुबह के आम सतसंग में बयान किया कि आज प्रेम निवास के बड़े कमरे में जहाँ मैं ठहरा हुआ हूँ, ध्यान की हालत में कृष्ण महाराज ने मुझको दर्शन दिये और धमकाकर कहा कि तू इस अभ्यास को छोड़ दे। ब-जवाब उसके मैंने कहा कि पेश्तर आपने मुझको कभी दर्शन नहीं दिये, अब दर्शन

देने आये हो? तुम काल हो, मैं हरगिज़ तुम्हारी बात को नहीं मानूंगा। इस पर कृष्णजी बहुत नाराज़ हुए और तलवार खींचकर तीन वार मुझ पर किये। वार के होते ही मैंने राधास्वामी नाम का सुमिरन शुरू किया कि उसी वक़्त हुज़ूर महाराज साहब प्रगट हुए और वह स्वरूप फ़ौरन ख़ौफ़ खाकर ग़ायब हो गया। और हुज़ूर महाराज साहब ने मेरे ज़ख्मों पर दया का हाथ फेरा कि तकलीफ़ दूर हो गई। तीनों ज़ख़्मों के निशान, जो रान में थे, सबको दिखलाये और हुज़ूर महाराज साहब की ऐसी दया और रक्षा देखकर प्रीत प्रतीत के साथ हुज़ूर महाराज साहब की भक्ति और अभ्यास में मसरूफ़[1] रहा।

१०९ - हुज़ूर महाराज साहब ने अनंत जीवों को चौरासी से निकालकर सच्ची भक्ति के रास्ते पर लगा दिया और हज़ारों भक्तों को दर्जा प्रेमी सतसंगी का बख़्श दिया और बहुत से प्रेमी सतसंगियों के लिये गुप्त व होनहार साध व संत और पंडित ब्रह्मशंकर मिश्र साहब एम.ए. उर्फ़ महाराज साहब

१ - लगा रहा।

को अपना जा-नशीन बना दिया, ताकि आइंदा को रास्ता सहज उद्धार का जारी रहे। किसकी ताक़त है कि एक शम्मा[1] भी हुज़ूर महाराज साहब की भारी गत और गहरी दया और मेहर का वर्णन कर सके? बड़े भाग उन जीवों के हैं कि जो हुज़ूर महाराज साहब की सरन में आये हैं और अंतर व बाहर उनकी दया के गहरे पर्चे पाकर मगन व मसरूर हैं।

।। कड़ी ।।

''बड़े भाग जिन सतगुरु पाये।चौरासी से तुर्त बचाये।।''

११० - बाबू अन्वदाप्रसाद गुप्त, एक बंगाली सतसंगी, हुज़ूर महाराज साहब के वास्ते बड़ा सिंहासन कलकत्ता में साल भर से तैयार करा रहा था। हुज़ूर महाराज साहब ने उसको ख़्वाब में दर्शन देकर फ़रमाया कि सिंहासन जल्दी तैयार कराके लाओ। ब-मूजिब उसके उसने जल्द बनवाकर आगरा को रवाना कर दिया और आप भी आगरा आने को था कि उसके घर से एक तार आया कि तुम्हारा लड़का बहुत सख़्त बीमार है, फ़ौरन चले

१ - ज़र्रा, किनका।

आओ। इस तार को पाकर इरादा आगरा आने का मुल्तवी किया और घर को रवाना हुआ । रास्ते में उसको हुज़ूर महाराज साहब ने ख़्वाब में दर्शन देकर फ़रमाया कि हम छः माह से तुम्हारे इंतज़ार में ठहरे हुए हैं और तुम अब घर को जाते हो? इस पर वह रास्ते से ही आगरा चला गया और घर को तार वास्ते दरियाफ़्त हाल और अपने आगरा जाने की इत्तिला को भेज दिया। आगरा पहुँचते ही उसको तार मिला कि तुम्हारे लड़के को अब बिल्कुल आराम है, तुम जब तक चाहो वहाँ ठहरो। इस ख़बर को पढ़कर उसने हुज़ूर महाराज साहब के चरनों में मत्था टेका और शुक्रिया दया का अदा किया, और सिंहासन को आरास्ता[1] करके हुज़ूर महाराज साहब की नज़र किया। और हुज़ूर महाराज साहब ने उसी सिंहासन पर बैठकर कई बार उससे आरती कराई, और दया और मेहर की बख़्शिश फ़रमाकर उसकी उमंग और चाह को क़ब्ल[2] अपने चोला छोड़ने के पूरा फ़रमा दिया।

१११ - हुज़ूर महाराज साहब ने ब-हालत

१ - सजाकर। २ - पहले।

बीमारी सन् १८९८ ई. में नये-नये करिश्मे[१] दिखलाये। कभी कभी नब्ज़[२] मुबारक डॉक्टरान हाज़िरीन[३] को दिखलाते तो वे लोग नब्ज़ की हालत अबतर[४] और रफ़्तार कमज़ोर बयान करते। हालांकि ब-कार्रवाई ज़ाहिरी उसका कुछ भी असर मालूम नहीं होता था। क्योंकि हुज़ूर महाराज साहब वैसी ही हालत में बचन भी फ़रमाते थे और बालाख़ाने[५] पर भी तशरीफ़ ले जाते, और चहल-क़दमी[६] भी फ़रमाते थे। और कभी २ चेहरा मुबारक भी पज़मुर्दा[७] हालत में दिखलाई देता था। ऐसी हालतों को देखकर सब लोग मुतफ़क्किर[८] और परेशान हो जाते थे और प्रार्थना करने लगते थे। उस प्रार्थना पर हुज़ूर महाराज साहब नब्ज़ जब फिर डाक्टरों को दिखलाते, तो वे लोग नब्ज़ को देखकर बयान करते थे कि अब नब्ज़ की हालत उम्दा मिस्ल तंदुरुस्ती के है। और चेहरे मुबारक पर हुज़ूर महाराज साहब हाथ फेरकर फ़रमाते थे

१ - अचरजी लीला। २ - नाड़ी। ३ - जो डाक्टर मौजूद थे। ४ - खराब चाल। ५ - ऊपर के कमरे। ६ - टहलना। ७ - मुरझाया हुआ, उदास। ८ - चिंतामग्न।

कि तुम लोग नाहक़ मुतफ़क्किर और परेशान होते हो, मेरी तबीयत बहुत अच्छी है। चुनांचे उसी वक़्त चेहरा मुबारक बश्शास[१] और मुनव्वर[२] मालूम होने लगता था। एक मर्तबा सिविल सर्जन साहब वास्ते देखने हालत बीमारी के बुलाये गये। उन्होंने आकर जो देखा तो कहा तबीयत अच्छी मालूम होती है। उस पर हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि चरनों को तो देखो! देखने से मालूम हुआ कि वरम[३] बहुत ज़्यादा है और फ़िलवाक़ा[४] उससे पेश्तर चरनों पर बिल्कुल वरम न था। बाद चले जाने साहब सिविल सर्जन के सबने मुतहैयर[५] व परेशान होकर अर्ज़ की कि महाराज यह वरम कैसे पैदा हो गया? हुज़ूर महाराज साहब ने चरनों को दिखाकर फ़रमाया कि कहां है? और सबने देखा कि वरम का वजूद[६] भी न था। इस अचरजी लीला को देखकर सब लोग मुताज्जिब[७] हुए। हुज़ूर महाराज साहब ने डाक्टरों के इसरार[८] से प्रेमपत्र में नोटिस दिलवा दिया था कि ब-वजह बीमारी के

१ - खुश। २ - प्रकाशमान, चमकीला। ३ - सूजन।
४ - असल में। ५ - ताज्जुब में। ६ - निशान पता।
७ - हैरान। ८ - हठ।

कोई सतसंगी बिना इजाज़त बाहर से न आवे। मगर जब भी कोई सतसंगी दरख़्वास्त हाज़िरी की करता तो फ़ौरन इजाज़त अता फ़रमा देते थे[१]। और इसी वजह से मजमा[२] सतसंगियों का इस क़दर ज़्यादा हो गया था कि उस कमरे अंदरून[३] मकान में, जहाँ हुज़ूर महाराज साहब क़याम पज़ीर[४] थे, सतसंगियों की गुँजाइश[५] नहीं होती थी और दर्शन और सतसंग करने में दिक़्क़त होती थी। इस दिक़्क़त के दूर करने के वास्ते हुज़ूर महाराज साहब ने प्रेम बिलास में क़याम फ़रमाया[६] और सतसंगियों को औक़ात मुअइयना[७] पर दर्शन ब-आसानी तमाम मिलने लगे व हस्ब[८] मामूल सतसंग व बचन भी होते रहे। मुस्तज़ाद[९] इसके यह हुआ कि दोनों वक़्त बाद भोग के, प्रेम बिलास के बड़े कमरे में हुज़ूर महाराज साहब चहल-क़दमी[१०] फ़रमाते हुए हरेक सतसंगी पर, जो दायें-बायें सफ़[११] बाँधकर दस्त-बस्ता खड़े हो जाते थे, दया

१ दे देते थे। २ - भीड़ भाड़। ३ - भीतर। ४ - रहते थे, आराम फरमाते थे। ५ - समाई। ६ - रहने लगे। ७ - वक्त वक्त पर, समय समय पर। ८ - बदस्तूर। ९ - इससे बढ़कर। १० - टहलना। ११ - पाँत।

और मेहर की दृष्टि डालते थे। और यह कुल कार्रवाइयाँ आख़िरी वक्त तक जारी रखीं।

तरीख़ ६ दिसंबर सन् १८९८ ई. को ब-वक़्त छः बजकर चालीस मिनट शाम के जबकि कुल सतसंगी व सतसंगिने व साधू हाज़िर ख़िदमत थे, हुज़ूर महाराज साहब ने वक़्त दरियाफ़्त फ़रमाकर लेटने के वास्ते तकिये लगवाये। और इस्तराहत[1] फ़रमाकर धीरज और शान्ति के साथ सुरत को चढ़ाकर छः बजकर पैंतालीस मिनट पर चोला त्याग फ़रमाया। उस वक़्त चेहरा मुबारक निहायत बश्शाश[2] व मुनव्वर[3] था और आँख की पुतली चमकती व जिस्म[4] नरम व मुलायम था। वह मकान मुतबर्रक[5] जिसमें यह मौज हुई कुल मुनव्वर व सुहावना मालूम होता था। और यह कैफ़ियत ८ दिसम्बर सन् १८९८ ई. रोज़ दाह तक, जो कि दूर दराज़ के सतसंगियों को दर्शन मिलने के वास्ते मुल्तवी रखा गया था, क़ायम रही।

११२ - शहर आगरा मुहल्ला पीपल मंडी में

१ - आराम। २ - मगन। ३ - चमकीला। ४ - देह। ५ - पवित्र।

मुत्तसिल[1] मकान आलीशान हुज़ूर महाराज साहब के एक मकान प्रेम बिलास के नाम से मशहूर है जिसमें आख़िरी ज़माने में हुज़ूर महाराज साहब ने क़याम फ़रमाया था, और जिस जगह पर चोला मुबारक का त्याग फ़रमाया, उसी जगह पर हुज़ूर महाराज साहब की समाध बनवाई गई और वहीं पर हर साल २७ दिसम्बर को भंडारा हुज़ूर महाराज साहब का होता है।

११३ - पहिले भंडारे हुज़ूर महाराज साहब पर जो २७ दिसम्बर सन् १८९८ ई. को हुआ था एक साहब देहरादून के रहनेवाले ने आगरा आकर बयान किया कि राधास्वामी मत को सच्चा सुनकर और उसूल[2] व शरायत[3] को मंज़ूर करके इरादा किया था कि आगरा पहुँचकर हुज़ूर महाराज साहब से उपदेश लूँ। उस इरादे के तीसरे रोज़ सुना कि हुज़ूर महाराज साहब चोला छोड़कर निज धाम को तशरीफ़ ले गये। इस ख़बर को सुनकर रंज व सदमे की बरदाश्त न करके बेख़ुद[4] व बदहवास होकर जंगल को चला गया। वहाँ पर

१-पास। २-क़ायदा। ३-शर्तों। ४-बावलों के मुवाफ़िक़।।

बहुत ज़ोर से चीख़ मारकर और चिल्लाकर रोना शुरू किया। उसी वक़्त एक सिंहासन ऊपर से उतरकर मेरे सामने आया और उसमें हुज़ूर महाराज साहब बिराजमान थे। मैं हुज़ूर महाराज साहब के चरनों पर गिर पड़ा। हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि क्यों इस क़दर घबराते हो? हम कहीं चले नहीं गये हैं। राधास्वामी सतसंग के बराबर निगरां[1] और रक्षक हैं। तुम आगरा जाओ। हमारे मकान पर सतसंग बराबर जारी है। वहाँ सतसंग करो और उपदेश लो। तुम्हारा सब मतलब पूरा होगा। चुनांचे मुझको शांति हुई और आपसे हस्बुल-हुक़्म[2] उपदेश लेने के वास्ते आया हूँ। पस उसने उपदेश लेकर और कुछ अर्से तक आगरा में ठहरकर सतसंग और अभ्यास किया।

११४ - लुधियाना में पण्डित तुलसीराम सतसंगी के मकान पर सतसंग हुआ करता था। उन्होंने हुज़ूर महाराज साहब के चोला छोड़ने के बाद रंज और निराशता की हालत में सतसंग करना बन्द कर दिया। तीन-चार रोज़ के बाद आठ बजे सुबह

१ - सम्हाल करनेवाले। २ - आज्ञानुसार।

जबकि वह अपने मकान के अन्दर था उसको मालूम हुआ कि एक गाड़ी उसके मकान के दरवाज़े पर आकर ठहरी और हुज़ूर महाराज साहब उतरकर उसके मकान में तशरीफ़ लाये, और उससे फ़रमाया कि तुमने सतसंग क्यों बंद कर दिया? हम कहीं गये नहीं हैं बराबर मौजूद और सतसंग के निगरां हैं। तुम इसी वक़्त से सतसंग ब-दस्तूर जारी कर दो। यह हुक्म पाकर वह फ़ौरन चरनों पर गिरा और मत्था टेका। और हुज़ूर महाराज साहब उसके मकान से बाहर तशरीफ़ ले जाकर गाड़ी में सवार हुए और गाड़ी उसके दरवाज़े से चंद क़दम चलकर नज़र से ग़ायब हो गई। उसने उसी वक़्त अपने क़रीब के सतसंगियों के मकान पर जाकर यह हाल बयान किया, और सबको बुलाकर सतसंग ब-दस्तूर जारी कर दिया।

११५ - एक सतसंगी मद्रास के रहनेवाले को जिसने बाद चोला छोड़ने हुज़ूर महाराज साहब के इस नियाज़मन्द[1] से उपदेश लिया था यह संशय पैदा हुआ कि हुज़ूर महाराज साहब और हैं, और

१ - मुझसे।

राधास्वामी दयाल और हैं। और इस संशय के दूर करने की ग़रज़ से वह एक चिट्ठी मुझको तहरीर[1] कर रहा था। लेकिन ख़त्म न होने की वज़ह से न भेज सका। उसी शब[2] को हुज़ूर महाराज साहब ने ख़्वाब में उसको दर्शन देकर फ़रमाया कि तुम हमारे साथ चलो, हम तुमको राधास्वामी दयाल के दर्शन करा दें। तमाम मुक़ामात के दर्जे-ब-दर्जे दर्शन कराते हुए राधास्वामी धाम में ले गये। वहाँ की तजल्ली[3] और प्रकाश और नूर को देखकर उसकी आँख झपक गई। उसके बाद आवाज़ सुनाई दी कि राधास्वामी दयाल के दर्शन करो। इस आवाज़ को सुनते ही जो आंख खोलकर देखा तो सिंहासन पर, जिसके नूर और प्रकाश का कुछ अन्दाज़ा नहीं हो सकता कि किस क़दर चांद और सूरज का प्रकाश उसके एक २ हिस्से में कहा जावे, हुज़ूर महाराज साहब ही बिराजमान थे। हुज़ूर महाराज साहब के नूर और तजल्ली और प्रकाश का तो बयान ही नहीं हो सकता कि अनगिनत सूरज और चांद का प्रकाश एक रोम के

१ - लिख रहा २ - रात। ३ - चमक, रोशनी।

प्रकाश के बराबर भी न था। दर्शन करते ही आँख झपक गई। मुकर्रर[1] हुज़ूर महाराज साहब ने आवाज़ देकर फ़रमाया कि तुमने राधास्वामी दयाल के दर्शन कर लिये? उसने अर्ज़ किया, दर्शन हो गये। वहाँ से फिर हुज़ूर महाराज साहब उसको दर्जे-ब-दर्जे स्थानों की सैर कराते हुए अपने साथ नीचे उतार लाये और उसका संशय ख़्वाब में दर्शन देकर दूर कर दिया। और उसको यह निश्चय हो गया कि हुज़ूर महाराज साहब राधास्वामी दयाल का ही औतार हैं। यह सब मुफ़स्सल हालात उस मद्रासी सतसंगी की चिट्ठी से मालूम हुए जो उसने वास्ते इत्तिला और इज़हार[2] उस दया के, जो कि हुज़ूर महाराज साहब ने उस पर फ़रमाई, भेजी।

११६ - हुज़ूर महाराज साहब की अवायल उमरी[3] के हालात से ज़ाहिर है कि हुज़ूर महाराज साहब ऊँचे दर्जे से तशरीफ़ लाये। और उन हालात से कि जो निसबत खोज व तलाश पूरे गुरु और सुरत शब्द मार्ग के थी, और जिस तरह से कि हुज़ूर महाराज साहब ने हुज़ूर स्वामीजी महाराज

१ - दुबारा। २ - जाहिर करने। ३ - लड़कपन।

की तलाश करके शिनासाई[१] एक ही मुलाक़ात में कर ली, और कैफ़ियत प्रगट होने राधास्वामी नाम से जिसका बयान ऊपर हो चुका है, और नीज़[२] इन कड़ियों से जो हुज़ूर स्वामीजी महाराज साहब ने फ़रमाई हैं, साबित होता है कि हुज़ूर स्वामीजी महाराज साहब और हुज़ूर महाराज साहब दोनों राधास्वामी धाम से तशरीफ़ लाये। और एक जान दो क़ालिब[३] में वास्ते उद्धार जीवों के ऐसे ज़माने नाज़ुक में जिस वक़्त जीवों की हालत निहायत कमज़ोरी और निर्बलता की थी और भेद मालिक से बिल्कुल बे-ख़बरी थी प्रगट होकर कार्रवाई जीवों के उद्धार की शुरू फ़रमाई-

''बैठक स्वामी अद्भुती, राधा निरख निहार।
और न कोई लख सके, शोभा अगम अपार।।''

''राधास्वामी दो कर जान।
होयँ एक सतलोक ठिकान।''

और हुज़ूर महाराज साहब ने ख़ुद पहिले सर्व अंग करके गुरुमुख भाव में बरतकर भक्ति का पूरा और लासानी[४] नमूना दिखलाया और फिर ख़ुद

१ - पहचान। २ - भी। ३ - देह। ४ - जिसके मुवाफ़िक़ दूसरा न हो।

आचार्य गति के गुरुमुख अंग को क़ायम रखे हुए बरताव करके हज़ारों को सरन में लेकर भक्ति और सेवा में लगा लिया। और बेशुमार जीवों पर बीजा डालकर उद्धार के सिलसिले का संस्कार बख़्श दिया।

११७ - हुज़ूर महाराज साहब ने जो बानी और बचन फ़रमाए हैं, उनकी तफ़सील ऊपर दफ़ा ९५ में दर्ज हो चुकी है, और जिनकी क़ैफियत व महिमा शायक़ीन[१] को उन बानी व बचनों के मुलाहिज़ा करने से ज़ाहिर और मालूम हो सकती है।

इस जगह पर सिर्फ़ दो शब्द प्रेमबानियों में से और एक बचन प्रेम पत्र में से मिनजुमला[२] ६५ प्रकार के जो चौथी जिल्द में नई २ जुक्ती और रीत से महिमा और बुज़ुर्गी राधास्वामी नाम और राधास्वामी मत की ब-निस्बत और मतों के, और सहज तरीक़ा जीव के उद्धार यानी कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में बासा पाने और अमर अजर हो जाने का सबूत आम फ़हम[३] दिया

१-अभिलाषियों। २-सब में से। ३-सब की समझ के लायक़।

है, दर्ज ज़ैल[1] है-

प्रेम बानी पहिली जिल्द बचन तीसरा

।। शब्द तीसरा ।।

सुरत सिरोमन हेला लाई।
सतगुरु पूरा खोजो भाई।।१।।
जोत निरंजन फाँसी डारा।
जीव बहे चौरासी धारा।।२।।
करम धरम में सब भरमाए।
निज घर का कोइ भेद न पाए।।३।।
मैं अब कहूँ पुकार पुकारा।
बिन गुरु सरन नहीं निरवारा।।४।।
पूरन धनी अपार अनामी।
परम पुरुष सतगुरु राधास्वामी।।५।।
जग में संत रूप धर आए।
काल जाल से जीव बचाए।।६।।
हुकम दिया जीवन को ऐसा।
शब्द पकड़ जाओ निज देसा।।७।।
प्रेम भक्ति हिरदे में धारो।
दया मेहर ले उतरो पारो।।८।।
सुरत शब्द बिन जो मत होई।
काल जाल जानो तुम सोई।।९।।
बाहरमुख जो पूजा लाते।
मन अंतर जो ध्यान लगाते।।१०।।

१-नीचे लिखे जाते हैं।

बाच लक्ष का निर्णय करते।
ब्यापक चेतन बिरती धरते।।११।।
कर बिचार जो मन को साधें।
प्राण साध जो धरें समाधें।।१२।।
जप तप संजम बहु बिधि धारें।
दृष्टि साध कर रूप निहारें।।१३।।
और अनेक प्रकाश दिखाई।
आतम दर्शन चित में लाई।।१४।।
ऐसा खेल लखें घट माहीं।
षट चक्कर अंतर भरमाई।।१५।।
यह सब मते काल के जानो।
अंतरगत माया के मानो।।१६।।
कोइ दिन सुख आनंद बिलासा।
फिर फिर पड़ें काल की फाँसा।।१७।।
कोई जीव बचे नहिं भाई।
काल हद्द से परे न जाई।।१८।।
तिरलोकी में काल पसारा।
पाँच तत्व तिरगुन बिस्तारा।।१९।।
दयाल देश तिरलोकी पारा।
काल कर्म का वहँ न गुज़ारा।।२०।।
जो कोइ संत बचन को माने।
दयाल देश की सो गति जाने।।२१।।
याते बार बार समझाऊँ।
संतन की गति अगम सुनाऊँ।।२२।।

सतगुरु चरन प्रीत करो गाढ़ी।
तन मन अरपो सूरत वारी।।२३।।
चरन सरन सतगुरु दृढ़ करना।
रूप अनूप हिये बिच धरना।।२४।।
तब कुछ भेद समझ में आवे।
सुरत शब्द का कुछ रस पावे।।२५।।
जीव काज अस होवे पूरा।
काल करम हट जावें दूरा।।२६।।
पंचम चक्र जीव का बासा।
छठवें में है सुरत निवासा।।२७।।
यहाँ से राह संत मत जारी।
नैन नगर बिच मारग धारी।।२८।।
सुरत दृष्टि कर झाँको द्वारा।
सहज चढ़ो षट चक्कर पारा।।२९।।
सप्तम कँवल सहसदल नामा।
जोत निरंजन का अस्थाना।।३०।।
घंटा शंख बजे तेहि द्वारे।
सूरज चाँद अनेक निहारे।।३१।।
ब्यापक चेतन इस का भासा।
तीन लोक और पिंड निवासा।।३२।।
ता का ज्ञान पाय यह ज्ञानी।
कर उनमान हुए अभिमानी।।३३।।
पोथी पढ़ बहु बात बनावें।
निज चेतन का भेद न पावें।।३४।।

निज चेतन है सिंध अपारा।
दयाल देस में तासु पसारा।।३५।।
बूँद एक वहँ से चल आई।
सोई निरगुन ब्रह्म कहाई।।३६।।
इस का भास पिंड में आया।
ताको ब्यापक चेतन गाया।।३७।।
जो कोई ब्यापक निश्चय धारे।
मुक्ति न पावे भरमे वारे।।३८।।
याते तजो निरंजन धामा।
सतगुरु देस करो बिसरामा।।३९।।
सतगुरु पद सतलोक कहावे।
जोत निरंजन जहाँ न जावे।।४०।।
सहस कँवल परे तीन अस्थाना।
त्रिकुटी सुन्न और गुफा बखाना।।४१।।
ता के परे धाम सतनामा।
सत्त लोक सतगुरु पद जाना।।४२।।
अलख लोक तिस ऊपर होई।
ताके परे अगम है सोई।।४३।।
तिस के आगे धुर पद जानो।
राधास्वामी धाम पहिचानो।।४४।।
राधास्वामी नाम हिये बिच धारो।
और नाम सब ही तज डारो।।४५।।
राधास्वामी चरन बाँध मन आसा।
तब पावे सतलोक निवासा।।४६।।

तन मन इन्द्री घट में घेरो।
सुरत चढ़ाय करो घर फेरो।।४७।।
हित चित से सतगुरु सँग कीजे।
राधास्वामी दया मेहर तब लीजे।।४८।।
या विधि जो कोई कार कमावे।
काल देश तज निज घर जावे।।४९।।
दयाल देश में बासा पावे।
राधास्वामी चरनन माहिं समावे।।५०।।
आरत हुई दास की पूरी।
रहूँ गुरु अँग सँग तज दूरी।।५१।।

प्रेमबानी चौथी जिल्द बचन उनचालीसवाँ
।।मसनवी ८।।

मैं सतगुरु पै डालूँगी तन मन को वार।
मैं चरनों में क़ुरबान हूँ बार बार।।१।।
करूँ कैसे उन की दया का बयान।
दिया मुझको प्रेम और परतीत दान।।२।।
खुली आँख जब मुझको आया नज़र।
कि दुनिया है धोखे की जा सर बसर।।३।।
ज़मीन और ज़न और ज़र की है चाह।
सभी जीव रहते हैं ख़्वार और तबाह।।४।।
हुए मुबतिला दामे हिरसो हवस।
न पावें कहीं चैन वह इक नफ़स।।५।।

न मालिक का ख़ौफ़ और न मरने का डर।
न खोजें कभी अपने घर की ख़बर।।६।।
करें फ़िक्र मेहनत से दुनिया के काम।
रहें इस्तरी और धन के ग़ुलाम।।७।।
जो दुनिया के नामावरी के हैं काम।
दिलो जाँ से उसमें पचे हैं मुदाम।।८।।
भरा हैगा भोगों की ख़्वाहिश से मन।
उसी में लगाते हैं धन और तन।।९।।
न शरमो हया उनको माँ बाप की।
न कुछ फ़िक्र है पुण्य और पाप की।।१०।।
जो मन इन्दरी पावें लज्ज़ात को।
ग़नीमत समझते हैं इस बात को।।११।।
जो दुनिया के सामाँ मुयस्सर हुए।
हुए ख़ुश दिल और मान में सब मुए।।१२।।
नहीं जीव का अपने उनको ख़याल।
कि मरने पै क्या होयगा उसका हाल।।१३।।
कहाँ से वह आता है और जाता कहाँ।
कहाँ कौन है मालिके जिस्मों जाँ।।१४।।
कोई जो कहाते हैं परमार्थी।
जो देखा तो वह हैं निपट स्वार्थी।।१५।।
करें ज़ाहिरी पाठ पूजा मुदाम।
सुनें भागवत और गीता तमाम।।१६।।
मगर दिल पै उनके न होवे असर।
न मरने का ख़ौफ़ और न नरकों का डर।।१७।।

करें तीरथ और यात्रा शौक़ से।
रखें बर्त और दान दें ज़ौक़ से।।१८।।
मगर होवे दुनिया का मतलब ज़रूर।
रहे है यही आस हिरदे में पूर।।१९।।
जो दुनिया की कुछ आस होवे नहीं।
तो इस काम में पैसा ख़रचें नहीं।।२०।।
जो मालिक का भेद इनसे कहवे कोई।
उड़ावें हँसी और न मानें कभी।।२१।।
भरा हैगा मन उनका शुबहात से।
न बाचें जहालत की आफ़ात से।।२२।।
वह सन्तों के कहने को मानें नहीं।
सफ़ा बुद्धि से बात तोलें नहीं।।२३।।
कहूँ क्या कि वह दिल में है वे नास्तिक।
मगर धन के लेने को हैं आस्तिक।।२४।।
होवे ऐसे जीवों का कैसे निबाह।
जहन्नुम की अग्नी में पावेंगे दाह।।२५।।
वहाँ हाथ मल मल के पछतायेंगे।
किये अपने कामों का फल पायेंगे।।२६।।
मदद कोई उनकी करेगा नहीं।
कोई इनका रोना सुनेगा नहीं।।२७।।
पकड़ इनको जमदूत देवेंगे मार।
सरप इनकी गर्दन में देवेंगे डार।।२८।।
अगिन खम्भ से बाँध देंगे इन्हें।
अगिन कुण्ड में गोता देंगे इन्हें।।२९।।

निहायत दुखी होके चिल्लायेंगे।
यह ग़फ़लत का फल अपना यों पायेंगे।।३०।।
निरख करके जीवों का अस हाल ज़ार।
संत आये दुनिया में औतार धार।।३१।।
दया कर सुनावें उन्हें घर का भेद।
मेहर से करें दूर करमों का खेद।।३२।।
राह घर के जाने की देवें लखा।
सुरत शब्द मारग का देवें पता।।३३।।
हर इक घट में आवाज़ होती मुदाम।
वही शब्द की धुन है और वोही नाम।।३४।।
सुने जो कोई धुन को चित धर के प्यार।
वही जीव घर जावे तिरलोकी पार।।३५।।
सुनो भेद मंज़िल का अब राह के।
वह है सात बालाये छः चक्र के।।३६।।
यह हैं नाम छः चक्करों के सुनो।
गुदा इंदरी और नाभी गिनो।।३७।।
चकर चौथा हिरदे गुलू पाँचवाँ।
छठा दोनों आंखों के है दरमियाँ।।३८।।
इसी जा पै है सुर्त रूह का क़याम।
परे इसके संतों के सातों मुक़ाम।।३९।।
सहसदल है पहिला गगन दूसरा।
सुन्न पर महासुन का मैदाँ बड़ा।।४०।।
गुफा लोक चौथा है सोहंग नाम ।
परे इसके सतलोक आली मुक़ाम।।४१।।

अलख लोक की क्या कहूँ दस्तगाह।
अगम लोक संतों का है तख़्तगाह।।४२।।
परे इसके है कुल्ल मालिक का धाम।
अपार और अनन्त राधास्वामी है नाम।।४३।।
अकह और अगाध और यही है अनाद।
वहीं से उठी मौज और आद नाद।।४४।।
नहीं कोई जाने है यह भेद सार।
रहे थक के सब कोइ गगना के वार।।४५।।
करम और धरम में रहे सब अटक।
नहीं जिव के कल्यान की कुछ खटक।।४६।।
रहे पूजते देवी देवा को झाड़।
न मालिक का खोज और न दिल में पियार।।४७।।
रहे पिछली टेकों में भूले मुदाम।
नहीं जानें महिमा गुरू और नाम।।४८।।
अगर चाहो तुम अपना सच्चा उद्धार।
तो सतगुरु को जल्दी से लो खोज यार।।४९।।
बचन संत सतगुरु के चित दे सुनो।
प्रीत और परतीत हिरदे धरो।।५०।।
पियो चरन अमृत को तुम प्रीत से।
भरम काटो परशादी के सीत से।।५१।।
करो उनका सतसंग तुम बार बार।
लेवो शब्द मारग मालिक का उपदेश सार।।५२।।
करो मन से मालिक का सुमिरन मुदाम।
परम पुर्ष राधास्वामी है उसका नाम।।५३।।

गुरु रूप का ध्यान हिरदे में लाय।
सुरत और मन शब्द धुन में लगाय।।५४।।
यह अभ्यास नित घट में करना सही।
कटें मन के औगुन इसी से सभी।।५५।।
कोई दिन में दर्शन गुरू के मिलें।
सुने शब्द की धुन सुरत मन खिलें।।५६।।
इसी तरह नित घट में आनंद पाय।
बढ़त जाय आनंद मन शान्ति लाय।।५७।।
कोई दिन में मुक्ती का पावे सरूर।
तू हो जाय तन मन से न्यारा ज़रूर।।५८।।
प्रीत और परतीत दिन दिन बढ़े।
तेरे मन में गुरु प्रेम का रँग चढ़े।।५९।।
उमँग कर तू सतगुरु की सेवा करे।
प्रेम अंग ले नित्त आरत करे।।६०।।
मिले प्रेम की तुझ को दौलत अपार।
सरावेगा भागों को तब अपने यार।।६१।।
किया अब यह उपदेश का ख़त्म राग।
जो माने उसी का जगे पूरा भाग।।६२।।
करोगे जो हित चित से नित तुम यह कार।
करें राधास्वामी तुम्हारा उधार।।६३।।
जपो प्रीत से नित्त राधास्वामी नाम।
पाओ मेहर से एक दिन आद धाम।।६४।।

प्रेम पत्र जिल्द चौथी - प्रकार ३७

जीव इस संसार में निहायत निबल और लाचार है अपने बल से पूरे उद्धार का जतन दुरुस्त नहीं कर सकता पर कुल मालिक राधास्वामी दयाल की दया अपार है। जो कोई उनका बचन माने उससे वे अपनी दया से ज़रूरी करनी कराके उसका कारज सहज में बनाते हैं। इस दया की महिमा नहीं की जा सकती है।।

(१) जीव जबसे कि संसार में पैदा हुआ, उसी वक़्त से उसको संसारियों का संग होता है और उसकी बोल चाल और समझ बूझ और शौक़ और चाह और रहनी उन्हीं के मुवाफ़िक़ होती है यानी धन स्त्री और पुत्र और जगत की मान बड़ाई और शोहरत और हुकूमत और मन और इन्द्रियों के भोग बिलास उसको प्यारे लगते हैं और उन्हीं के संग में रस आता है और सुख मिलता है और उन्हीं की चाह बारम्बार उठा कर जतन और मेहनत करता है और मन में भी उन्हीं की गुनावन

और ख़्याल उठाता रहता है और जब अपने कुटुम्बी और रिश्तेदार और दोस्त और आशनाओं से मिले, तब उनके साथ भी उन्हीं की बाबत बात चीत और ज़िक्र करता है।।

(२) यही कार्रवाई बराबर जारी रहती है और कुल जीव जिनसे इस शख़्स का मेला होता है ऐसी ही कार्रवाई करते नज़र आते हैं। इस सबब से यह हालत ख़ूब पक जाती है, बल्कि स्वभाव में दाख़िल हो जाती है और बग़ैर उस कार्रवाई के मन को चैन नहीं पड़ता है और जब कभी कोई तकलीफ़ या किसी काम में निरासता होती है, तब मन इसी क़िस्म के काम या पदार्थों के लिये नई आसा बाँध कर ताक़त हासिल करता है।।

(३) हरचंद किसी ने किसी को पकड़ा और बाँधा नहीं है, लेकिन मन की हालत बँधे हुओं से ज़्यादा हो जाती है यानी इस क़दर धन और माल और कुटुम्ब परिवार और भोगों में लिप्त हो जाता है कि छुटाये नहीं छूट सकता और जो थोड़ी ज़बरदस्ती की जावे या दबाव डाला जावे तो उसमें निहायत दुखी होता है और तकलीफ़ पाता

है।।

(४) असली परमार्थ यानी सच्चे मालिक का भेद और उसके मिलने की जुगत का तो कहीं ज़िक्र भी नहीं है क्योंकि यह बात बहुत कठिन बल्कि ना-मुमकिन समझी जाती है और इस वास्ते कोई इसकी तहक़ीक़ात भी नहीं करता और जो कि ऐसा ख़याल अर्से से लोगों के दिल में भेखों ने पैदा कर दिया है कि बग़ैर छोड़ने दुनिया और उसके भोगों के इस रास्ते में कोई क़दम नहीं रख सकता है और जो कि संसारी लोग दुनिया को छोड़ना नहीं चाहते, इस वास्ते असली परमार्थ की निस्बत तहक़ीक़ात भी मौक़ूफ़ करदी।।

(५) रस्मी यानी दुनियावी परमार्थ की कार्रवाई थोड़ी बहुत जारी मालूम होती है। इसमें बहुत करके इन्द्रियों से काम लिया जाता है और मन और बुद्धि के शामिल होने का ख़याल बहुत कम रहता है, जैसे पोथी का पाठ करना या नाम और मंत्र का माला के साथ जाप करना या ज़ाहिरी रसूम मिस्ल मूरत या किसी निशान या पाक मुक़ाम या दरिया की पूजा या ताज़ीम या ज़ियारत

या अश्नान या परिक्रमा वग़ैरा करना या शब्द और भजन गाना और नाचना या कथा और पोथी सुनना या दान पुन्य और ख़ैरात करना या जीवों के आराम के लिये कुवाँ बावड़ी बाग़ मकान और मदर्सा और ख़ैरातख़ाना और शफ़ाख़ाना और ग़रीबख़ाना बनवाना और सदाबर्त जारी करना या परमार्थी मेले और उत्सव में शामिल होना या आम तौर पर वाज़ और उपदेश और व्याख्यान करना या व्रत और रोज़ा रखना वग़ैरा वग़ैरा।।

(६) कुल मत जो दुनिया में बिलफ़ेल जारी हैं, उनमें अक्सर इसी क़िस्म की कार्रवाई को मुक्ति का साधन तजवीज़ किया है और कोई कोई तन मन को कुछ काष्टा भी देते है, जैसे पंच अगिन तपना और जल सैन करना, खड़े रहना, मौन साधना, दूध अहार करना या घर बार छोड़ कर जंगल या पहाड़ में अकेले रहना और स्वाँसा या मन से नाम का सुमिरन करना या नाभि या हिरदे में ध्यान लगाना वग़ैरा।।

(७) बाज़े विद्या और बुद्धिवान लोग वेद शास्त्र पुरान और क़ुरान और अंजील और दूसरी मज़हबी

किताबों की टेक बाँध कर और अपनी बुद्धि के मुवाफ़िक़ उनके अर्थ लगा कर या और किसी विद्यावान के समझाये हुए अर्थों की समझौती लेकर कार्रवाई कर रहे हैं और जो नेष्टावान यानी अभ्यासी लोग समझ देवें, उसको नहीं मानते। इस सबब से वे जो कुछ कि ज़ाहिरी करनी अपनी बुद्धि के मुवाफ़िक़ कर रहे हैं, उसमें असली फ़ायदा मालूम नहीं होता, लेकिन टेक और पक्ष धारन करके आपस में हुज्जत और तकरार करते हैं और एक दूसरे गिरोह को बुरा भला या ओछा या ग़लत कहते हैं।।

(८) कोई कोई सूफ़ी या वाचक ज्ञानी बन बैठे हैं और अपने को ख़ुदा या ब्रह्म मान कर या उसके साथ मन और बुद्धि की समझौती से इकताई करके निःचिन्त और निडर हो रहे हैं और जो अभ्यास कि सच्चे ज्ञानी और सूफ़ियों ने जारी किया, उससे ना-वाक़िफ़ हैं या उसको कठिन और ग़ैर-ज़रूरी समझ कर छोड़ दिया है और सिर्फ़ अक़्ली और इल्मी दलीलों से अपनी समझ बूझ दुरुस्त करके राज़ी और बे-परवाह हो गये हैं,

लेकिन इनमें से बाज़े दर्दी अंतःकरण की सफ़ाई और मन को निश्चल करने के वास्ते जो जतन मुक़र्रर हैं, उनको किसी क़दर शौक़ और मेहनत के साथ करते हैं और उसका फ़ायदा भी थोड़ा बहुत देखते हैं।।

(९) कोई कोई विद्या पढ़ कर मालिक की मौजूदगी में शक लाकर भक्ति भाव को छोड़ बैठते हैं और सिर्फ़ जीवों के साथ दया भाव से बर्तने और संसारी उपकार करने को मुनासिब और ज़रूरी कर्म समझते हैं और जीव के अमर होने के क़ायल नहीं हैं। यह लोग नास्तिक कहलाते हैं। वे सिर्फ़ एक क़िस्म की क़ुव्वत को (जिसको चाहे चैतन्य कहो) और माया और उसके मसाले को क़दीम[1] और सब जगह व्यापक मानते हैं।।

(१०) कसरत से नादान लोग छोटे छोटे देवताओं या क़बरों या मुर्दों या भूत पलीत मसान वग़ैरा को मानते और पूजते हैं । कोई उनको सच्ची बात बताने वाला या मालिक की ख़बर देने वाला नहीं मिलता और न वे अपनी टेक को

१ - प्राचीन

छोड़ना चाहते हैं।।

(११) जोगेश्वरों और औतारों और पैग़म्बरों ने परमेश्वर या ब्रह्म या ख़ुदा का भेद दिया और इशारे और मुअम्मे में और कहीं कहीं थोड़ा खोल कर उसके मिलने का रास्ता भी वर्णन किया, लेकिन जो कि उसमें दुनिया से बैराग करना ज़रूरी और लाज़मी था और कुछ अभ्यास भी कठिन और ख़तरनाक था, इस सबब से बहुत कम लोगों ने उसको अपने वक़्त में माना और बाद उनके सब के सब कर्मकाण्ड यानी ज़ाहिरी और बाहरी कार्रवाई में या विद्या बुद्धि के गढ़े हुए मत और समझौती और बिलास में अटक रहे।।

(१२) बाद जोगेश्वरों और औतारों और पैग़म्बरों वग़ैरा के संत सतगुरु इस संसार में प्रकट हुए और उन्होंने दया करके भेद सत्त लोक और सत्त पुरुष दयाल का और तरीक़ा पहुँचने उस धाम का जो कि आत्मा और परमात्मा और ख़ुदा और ब्रह्म और पारब्रह्म के परे है, सुरत शब्द योग के अभ्यास से बताया। लेकिन बहुत थोड़े जीवों ने उनके वक़्त में इस उपदेश को क़बूल किया और जो कि कसरत

से लोग अनेक मतों और पूजाओं और कर्मकाण्ड में भरम रहे थे, उन्होंने संतों के वचन को नहीं माना बल्कि उलटी निन्दा करने लगे और जीवों को उनके सन्मुख जाने से रोकते रहे। इस सबब से सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास आम तौर पर जारी नहीं हुआ और बाद गुप्त होने संतों के, उनके घराने में भी वही ज़ाहिरी रसूम और पूजा या वाचक ज्ञान जैसा कि और मतों में फैला हुआ है, जारी हो गया और शब्द मार्ग को विद्या और बुद्धिवानों ने उलटे सीधे अर्थ लगा कर बिल्कुल गुप्त कर दिया या उसको जोग अभ्यास जो कि हमेशा से कठिन और ना-मुमकिन मशहूर हो रहा है, क़रार देकर उसकी कार्रवाई बंद कर दी क्योंकि पिछले वक्तों में उसके साथ अक्सर पवन का रोकना भी शामिल किया गया था।।

(१३) ऐसी ख़राब हालत परमार्थ के मुआमले में जगत की देख कर कि कोई जीव भी सच्चे रास्ते पर नहीं चलता और न किसी ऊँचे मुक़ाम तक पहुँचता है और इधर जीवों को निहायत दुखी और बलहीन मुलाहिज़ा करके कि कसरत से रोग

और सोग और निरधनता और अनेक तरह के दुक्खों में गिरफ़्तार हो रहे हैं, कुल मालिक राधास्वामी दयाल अति दया करके आप संत सतगुरु रूप धारन करके जगत में प्रकट हुए और अपने निज नाम और निज धाम का भेद और रास्ते और मंज़िलों का हाल और आसान तरीक़ा चलने और चढ़ कर पहुँचने सुरत का निज धाम में, तफ़सील के साथ खोल कर वर्णन किया कि जिसको गृहस्थ और विरक्त और औरत और मर्द बग़ैर छोड़ने रोज़गार और घर बार के सहज में कर सक्ते हैं और थोड़े ही अर्से के अभ्यास से अपना सच्चा और पूरा उद्धार होता हुआ इसी ज़िंदगी में देख सकते हैं।।

(१४) पेश्तर के ज़माने में लोग सुरत और शब्द की धार से जो ऐन चैतन्य और जान की धार है, बे-ख़बर रहे और इस सबब से उन्होंने प्राण की धार को मुख्य समझ कर उसी धार की सवारी का अभ्यास यानी प्राणों को रोकना और चढ़ाना जारी किया, लेकिन जो कि उसके संजम बहुत कठिन हैं और ख़तरों का बहुत ख़ौफ़ है, इस वजह

से यह अभ्यास आम तौर से जारी नहीं हुआ यानी गृहस्थी तो उसको मुतलक़ नहीं कर सके और विरक्तों से भी कठिनता के सबब से नहीं बना।।

(१५) लेकिन अब कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने शब्द की महिमा और उसका भेद प्रकट करके फ़रमाया कि प्राण की धार भी शब्द यानी चैतन्य की धार के आधीन है क्योंकि जिस वक़्त आदमी सो जाता है, सुरत जो कि ऐन शब्द स्वरूप है और जाग्रत अवस्था में आँखों में जिसका बासा है, खिंच जाती है और हरचंद प्राण की धार उस वक़्त ब-दस्तूर जारी रहती है, लेकिन देह और इन्द्रियों की कार्रवाई बन्द हो जाती है और जब सुरत की धार का ज़्यादा खिंचाव होता है, तब प्राण की धार भी सिमट जाती है।।

(१६) और यह भी फ़रमाया कि जो सुरत यानी शब्द की धार पर सवार होकर ऊँचे देश यानी घर की तरफ़ चलना शुरू करेगा, वही माया के घेर के पार धुर धाम में जहाँ माया बिलकुल नहीं है, पहुँचेगा और उसका सच्चा और पूरा उद्धार होगा और जो कोई प्राण और रोशनी और

और किसी धार पर सवार होकर चलेगा, वह उस मुक़ाम तक जहाँ से कि वह धारें बरामद हुई हैं, पहुँच सकता है, लेकिन माया की हद्द में रहेगा और इस वास्ते उसका जनम मरन चाहे बहुत देर से होवे, छूट नहीं सकता।।

(१७) सिवाय प्रकट करने सुरत शब्द मार्ग के जिसको सहज योग कहते हैं, कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने अति दया करके प्रेम और भक्ति पर ज़्यादा ज़ोर दिया और फ़रमाया कि जो कि कुल मालिक प्रेम का भंडार है और शब्द की धार जो उससे निकसी, वही प्रेम की धार है और जहाँ वह धार पिंड में ठहर कर सुरत कहलाई, वह भी प्रेम स्वरूप है यानी कुल जीव प्रेम स्वरूप हैं, इस वास्ते जो कोई कुल मालिक और संत सतगुरु के चरनों में भक्ति और इश्क़ करेगा और प्रेम अंग लेकर अंतर में शब्द को सुनेगा, उसी का रास्ता आसानी से तै होगा और वही राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया से एक दिन धुर धाम में पहुँचेगा और बग़ैर प्रेम और दया के इस रास्ते का तै होना मुश्किल है।।

(१८) और फिर अति दया करके फ़रमाया कि जो मालिक के अरूप और शब्द स्वरूप में बग़ैर संसार और उसके भोगों से किसी क़दर बैराग धारन करने के प्रेम जल्दी नहीं आ सकता, इस वास्ते पहिले सतगुरु स्वरूप में प्रीत करनी चाहिये और जो कि यह स्वरूप उसी क़िस्म का है जैसा कि सेवक का यानी देह स्वरूप, इस सबब से इसमें प्रीत आसानी से लग सकती है क्योंकि सब जीव इसी क़िस्म के रूपों में जैसे स्त्री पुत्र माता पिता भाई बंद और रिश्तेदार और बिरादरी के लोगों से और भी उस्ताद और हाकिम व हकीम और राजा से और जिन २ से काम पड़ता है, दरजे ब-दरजे प्रीत कर रहे हैं, बल्कि जानवरों से भी जैसे तोता मैना कुत्ता बिल्ली घोड़ा हाथी वग़ैरा से भी प्यार करते हैं और वे भी उलट कर प्यार और दीनता करते हैं, फिर सतगुरु के स्वरूप में जो जीव का सच्चा उद्धार और कल्यान करता है, थोड़ी बहुत प्रीत लाना कुछ मुश्किल नहीं है।।

(१९) वास्ते बढ़ाने प्रीत के भक्ति में चार क़िस्म की सेवा मुक़र्रर की गई है। एक तन की,

दूसरी धन की, तीसरी मन की, और चौथी सुरत की। पहिली और दूसरी क़िस्म की सेवा से प्रीत जागती है और बढ़ती है और तीसरी और चौथी क़िस्म की सेवा से सुरत और मन अंतर में सिमट कर चलते हैं और चढ़ते हैं और कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में प्रीत और प्रतीत को बढ़ाते हैं और मज़बूत करते हैं और अभ्यास में तरक़्क़ी होती है।।

(२०) जब सतसंग और सेवा करके और बचन सुन कर और समझ कर जीव के दिल में थोड़ा बहुत भाव और प्यार कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में आ जावे और वह सतगुरु और उनके प्रेमी भक्तों से किसी क़दर नाता परमार्थी मुहब्बत का जोड़ लेवे तो फिर उसके उद्धार का सिलसिला सहज में जारी हो जावे और अंतर में भी अभ्यास के वक़्त थोड़ा बहुत रस मिलने लगे।।

(२१) कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने फ़रमाया है कि जो कोई उनके चरनों में गहिरी प्रीत यानी स्त्री पुत्र धन और अपनी देह और

जगत की मान बड़ाई से ज़्यादा लावे तो उसी का नाम गुरुमुख है और उसके लिये महल में जाने के वास्ते कोई रोक टोक और अटक नहीं रहती यानी इसी जनम में उसका उद्धार हो जाता है और वह इसी ज़िन्दगी में अपनी ऐसी हालत को परख सकता है और जो कोई इस दरजे से कम की प्रीत करे जैसे क़रीब या दूर के रिश्तेदारों से या बिरादरी के लोगों से या जिनसे अक्सर या कभी २ काम पड़ता है तो उसके उद्धार का भी सिलसिला जिस दरजे की प्रीत होगी, उसके मुवाफ़िक़ जारी हो जावेगा और एक दो या तीन हद्द चार जनम में, जैसा प्रेम बढ़ता जावेगा, काम पूरा बन जावेगा।।

(२२) यहाँ इस बात का बयान करना मुनासिब और ज़रूर मालूम होता है कि थोड़ी से थोड़ी प्रीत वाले का उद्धार संत सतगुरु किस तरह करते हैं यानी जिसके दिल में कि मुख्यता संसार और उसके पदार्थों और कुटुम्ब परिवार की रही और संत सतगुरु और उनके सतसंग से बहुत हल्का नाता जोड़ा तो उसको वक़्त मौत के दस्तूर के

मुवाफ़िक़ पहिले संसारी प्रीतों और कर्मों का चक्कर चला कर जब नम्बर संतों की प्रीत और सेवा का आवेगा, उसी वक़्त संत सतगुरु अपना दर्शन देकर और शब्द सुना कर मरने वाले की सुरत को अपने चरनों में लिपटा कर ऊँचे सुख स्थान में ले जाकर बासा देवेंगे और वहाँ कुछ अर्से तक रख कर और अपने दर्शन और बचनों से उसकी प्रीत और प्रतीत को बढ़ा कर फिर नर देह में जनम देंगे और सतसंग में मिला कर और भक्ति और अभ्यास करा कर ज़्यादा ऊँचा दरजा बख़्शेंगे, इसी तरह दो तीन या चार जनम में धुर धाम में पहुँचा कर बासा देवेंगे कि जहाँ किसी क़िस्म का कष्ट और क्लेश और जनम मरन का चक्कर नहीं है और सदा आनंद ही आनंद रहता है।।

(२३) मालूम होवे कि अंत समय पर सब जीव ब-सबब उनकी प्रीत और बंधन के संसार और कुटुम्ब परिवार और अपनी देह में, काल के हाथ से झटके सहते हैं और उनके कर्मों का चक्कर भी उस वक़्त बड़े ज़ोर से फिरता है और जैसे कर्म हैं, उसके मुवाफ़िक़ सुरत के खिंचाव के वक्त़ दुख

सुख का भोग देते हैं। जो उस जीव ने संतों के दर्शन किये हैं और कुछ सेवा और अभ्यास भी किया है तो इस कर्म के पेश होने के वक्त़ संत सतगुरु दर्शन देकर उस जीव को काल की खींचातानी से बचा कर सीतलता और आनन्द बख़्शते हैं और वह जीव ऐसी हालत में बहुत शौक़ और ज़ोर के साथ उनके चरनों में लिपटता है जैसे कि डूबता हुआ आदमी बचाने वाले से चिमटता है, उस वक्त़ संत उसकी सुरत को ऊँचे मुक़ाम में ले जाते हैं और नीचे की तरफ़ झोका खाने से बचा लेते हैं।।

(२४) अब ग़ौर करना चाहिये कि संत सतगुरु से जो समर्थ और दयाल हैं, जैसी तैसी प्रीत लगाने और नाता जोड़ने में किस क़दर भारी फ़ायदा है कि चौरासी का चक्कर बन्द होकर जीव के निज घर यानी कुल मालिक के धाम की तरफ़ चलने और चढ़ने का रास्ता जारी हो जाता है और आइंदा उनकी दया और मेहर से प्रीत और प्रतीत की दात पाकर दिन दिन प्रेम चरनों में बढ़ता और रास्ता आसानी से तै होता जाता है।।

(२५) कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने अति दया करके फ़रमाया है कि जो कोई उनके प्यारे प्रेमी भक्तों के साथ जैसी तैसी प्रीत करेगा और थोड़ा बहुत नाता जोड़ेगा तो उसको भी वही फ़ायदा हासिल होगा जैसा कि उनके या संत सतगुरु के चरनों में प्रीत करने से हासिल होता है। इस वास्ते कुल जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि जैसे वह संसार में जा-ब-जा और हर एक से अपने मतलब के वास्ते प्रीत लगाते हैं, ऐसे ही वास्ते अपने जीव के सच्चे उद्धार और कल्यान के कुल मालिक राधास्वामी दयाल या संत सतगुरु के चरनों में जो वे भाग से मिल जावें और नहीं तो उनके सच्चे प्रेमी भक्त से जो उनसे मिला हुआ है, जैसी तैसी प्रीत करें और नाता जोड़ें तो तकलीफ़ के वक़्तों में और ख़ास कर मौत के वक़्त, उनकी ज़रूर थोड़ी बहुत सहायता की जावेगी और चौरासी के चक्कर से बचा कर और भक्ति और अभ्यास करा कर एक दिन निज घर में जो परम आनंद का भंडार है, बासा दिया जावेगा।।

(२६) कुल मालिक राधास्वामी दयाल और

संत सतगुरु की महिमा कहाँ तक वर्णन की जावे कि उनके दर्शन और स्पर्श और चरनों के प्रताप से बे-शुमार जीवों का कारज बनता है यानी जिन जीवों ने उनका दर्शन किया और कुछ सेवा बन आई, चाहे वह मनुष्य होवें या जानवर, उनके उद्धार का भी सिलसिला जारी हो जाता है यानी पहिले जानवरों को नर देही मिलती है और फिर परमार्थ की करनी में शामिल होते हैं और मेहर और दया से रफ़्ते रफ़्ते एक दिन उनका काम भी पूरा बन जाता है।।

(२७) कुल मालिक राधास्वामी दयाल की दया का जब संत सतगुरु रूप धारन करके प्रकट होते हैं, विस्तार कहाँ तक कहा जावे कि जो कोई चीज़ खाने पीने और पहिनने ओढ़ने वग़ैरा की उनकी सेवा में आई तो उस चीज़ के लाने वाले से लेकर जितने आदमी और जानवरों का हाथ उसकी तैयारी में लगा है या जिस किसी ने जैसी तैसी उसमें मदद दी है, उन सब पर थोड़ी बहुत दया पहुँचा कर उसी जनम में, चाहे दूसरे जनम में, ज़रूर थोड़ी बहुत कार्रवाई परमार्थ की करा कर

उनको ऊँचे और सुख स्थान में बासा देगी, जैसे किसी ने कोई कपड़ा तैयार करके पहिनाया तो उस शख़्स से लगा कर ज़मींदार तक जिसकी ज़मीन में रुई बोई गई और जिस जिस ने उसके जोतने और बोने और बिनने और साफ़ करने और धुनने और कातने और बुनने और रंग करने और बेचने और सीने वग़ैरा में काम दिया है, वह सब कार्रवाई सतगुरु की सेवा में शुमार होकर उसके एवज़ में उनको थोड़ा बहुत भक्ति का दान मिलेगा और इस तरह सिलसिला उनके उद्धार का जारी हो जावेगा। अब ख़्याल करो कि इस दया और फ़ैज़ का कुछ शुमार नहीं हो सकता।।

* * * * * * *